वृषभान विनोद

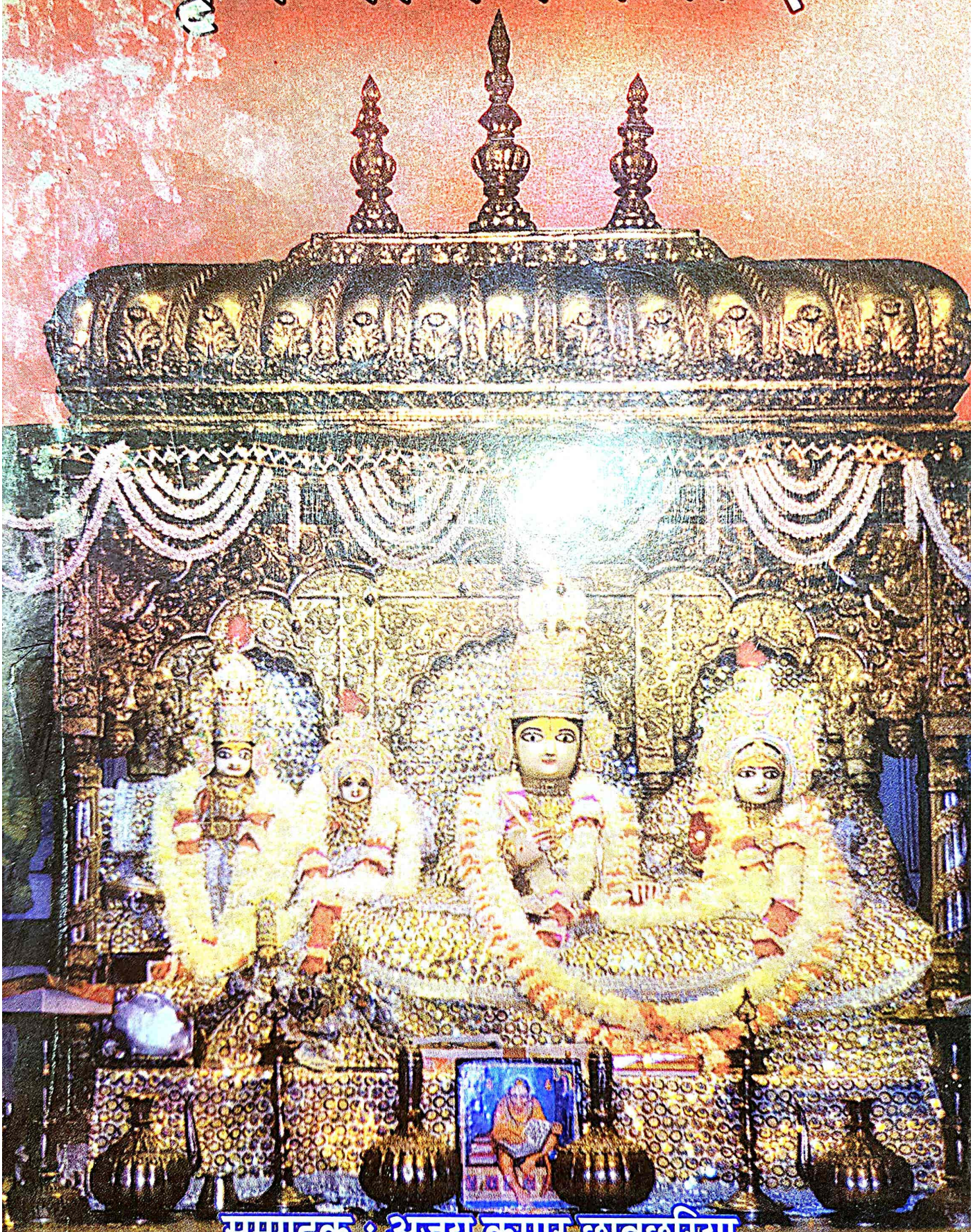

सम्पादक : अजय कुमार छावछरिया

वृषभान विनोद

सम्पादक

अजय कुमार छावछरिया

कोशल पब्लिशिंग हाउस
फ़ैज़ाबाद

इस पुस्तक का प्रकाशन अयोध्या शोध संस्थान के माध्यम से पूर्वांचल विकास निधि, अयोध्या-पैकेज के अन्तर्गत अयोध्या-महोत्सव से प्रदत्त वित्तीय सहायता से किया गया है। इसमें उल्लिखित तथ्यों तथा अभिव्यक्त विचारों की जिम्मेदारी लेखक की है, अयोध्या शोध संस्थान की नहीं।

प्रकाशक :
कोशल पब्लिशिंग हाउस
लेखेश्वर काम्प्लेक्स
नाका बाई-पास, विश्वविद्यालय मार्ग
फैजाबाद–224001 (उ.प्र.)
मो. 9415048021, 9838156834

© श्री वृषभान धर्मसेतु प्रा. ट्रस्ट,
कनक भवन, अयोध्या (उ.प्र.)

मूल्य : एक सौ पचास रुपये (Rs. 150.00)

ISBN : 978-93-81799-03-1

प्रथम संस्करण : 2012

मुद्रक : कम्पैक्ट प्रिंटर्स

भूमिका

मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि भक्ति भावना से ओत-प्रोत पदों के इस विशिष्ट ग्रंथ को प्रकाशित कराके भक्तों के सामने लाने में सफल हुआ हूँ। इस ग्रन्थ को महारानी साहिबा श्री वृषभान कुँवरि जी नें रचा था, जिन्होंने कनक भवन मन्दिर बनवाया था। यह ग्रन्थ प्रायः लुप्त हो चुका था। जब मैंने "कनक भवन महिमा" पुस्तक का संपादन किया उस समय मेरे मन में बड़ी उत्कंठा जागी कि जिस महान आत्मा ने इस विशाल एवं प्रसिद्ध कनक भवन मंदिर को बनवाया है उस के द्वारा रचित भावनात्मक पदों की एक रचना, जिसका नाम मैंने "वृषभान-विनोद" सुन रखा था, उसे कहीं से ढूंढकर पुनः प्रकाशित किया जाए। संयोग से आठ-दस वर्ष पूर्व मंदिर की पुताई के समय इस ग्रन्थ की कुछ जीर्ण-शीर्ण प्रतियां, जो लगभग पचास वर्ष पहले प्रकाशित हुई थी, हमें प्राप्त हुई। पुस्तक के पन्नों को एकत्र कर उसे व्यवस्थित रूप देकर मैंने स्वयं टाइप कराया एवं प्रूफ रीडिंग करी।

ईश्वर की कृपा से अगस्त 2011 में अयोध्या शोध संस्थान के प्रबन्धक श्री अविनाश कुमार जी से इस पुस्तक के बारे में चर्चा हुई तो उन्होंने इस ग्रन्थ को अयोध्या शोध संस्थान के माध्यम से प्रकाशित कराने की इच्छा जाहिर की। तदोपरान्त अयोध्या शोध संस्थान द्वारा प्रकाशन की सहमति मिली, अतः मैं अयोध्या शोध संस्थान के निदेशक डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह जी, रजिस्ट्रीकरण एवं विशेष कार्याधिकारी डॉ. आनन्द प्रकाश गौड़ जी एवं प्रबन्धक श्री अविनाश कुमार जी का हृदय से आभारी हूँ और इन सबको इस पुनीत कार्य के लिये धन्यवाद देता हूँ।

कनक भवन मन्दिर का संचालन "श्री वृषभान धर्मसेतु प्राइवेट ट्रस्ट" नामक संस्था कर रही है, इसका नामकरण भी महारानी साहिबा श्री वृषभान कुँवरि जी की याद को अमर रखने के लिए हुआ है। ट्रस्ट के वर्तमान अध्यक्ष महाराजा साहब श्री मधुकर साह जू देव जी ने हमेशा मुझे पुनीत कार्यों के लिए प्रोत्साहित किया है। वे सदैव कहते रहते हैं कि रानी साहिबा श्री वृषभान कुँवरि जी के द्वारा रसिक भावना से रचित

"वृषभान-विनोद" हमारी अमूल्य धरोहर एवं आत्मा का टुकड़ा है। अतः इस पुस्तक की उपलब्धता सदैव बनी रहे, ऐसा प्रयास होना चाहिए। मैं महाराजा साहब का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ कि उनकी कृपा से पुस्तक के प्रकाशन का कार्य संभव हुआ है।

इस ट्रस्ट के माननीय ट्रस्टी श्री विमलेन्द्र मोहन प्रताप मिश्र जी, राजा साहब अयोध्या, का मेरे ऊपर बड़ा स्नेह एवं कृपा रहती है। इस ग्रन्थ के प्रकाशन में उनका पूर्ण सहयोग मिला है। मैं उनको हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

कोशल पब्लिशिंग हाउस, फैजाबाद के श्री बी.पी. पाण्डेय जी ने इस पुस्तक में विशेष रुचि दिखलाकर प्रकाशन कार्य को अविलम्ब सम्पन्न कराया जिसके लिए मैं उनको हृदय से धन्यवाद दे रहा हूँ एवं ईश्वर से सदा उनकी उन्नति की कामना करता हूँ।

जो दुर्लभ प्रति मुझे प्राप्त हुई, उस बहुमूल्य, सरस, भावपूर्ण, एवं परम मनोहर ललित छंद प्रबंध पदों का प्रकाशन "वृषभान विनोद" नामक शीर्षक से सर्वप्रथम महारानी साहिबा श्री वृषभान कुँवरि जी की पुत्रवधू एवं सवाई महाराजा सर "सावंत सिंह" जू देव वीजावर नरेश की धर्मपत्नी श्रीमती देवी सवाई महारानी रत्न कुँवरि जू के आदेश पर प्रकाशित किया गया था। इसका दूसरा संस्करण हिज हाइनेस श्री सवाई महाराजा साहब श्री देवेन्द्र सिंह जू देव, सभापति, श्री वृषभान धर्मसेतु प्राइवेट ट्रस्ट, श्री कनक भवन-अयोध्या की स्वीकृति से ऋषि पंचमी भाद्र शुक्ल 2017 (ई. सन् 1960) में प्रकाशित हुआ था। अब यह तीसरा संस्करण बावन वर्षों के पश्चात पुनः प्रकाशित हो रहा है।

इस पुस्तक को श्री कनक भवन बिहारी बिहारिणी जू की सेवा में सादर समर्पित करते हुए मुझे हार्दिक संतुष्टि मिल रही है।

दिनाँक 29 नवम्बर, 2011
(राम-विवाह उत्सव)

—अजय कुमार छावछरिया
कनक भवन मंदिर
अयोध्या

महारानी साहिबा श्री वृषभान कुँवरि जी का जीवन परिचय-

महारानी साहिबा श्री वृषभान कुँवरि जी का जन्म बुंदेलखंड के विदारी ग्राम में ज्येष्ठ शुक्ल 2, संवत् 1912 (ई. सन् 1855) में हुआ था। इनके पिता जी का नाम कुँवर विजय सिंह परमाल था, जो क्षत्रिय वंश के थे। जब वे कुछ बड़ी हुईं तब इनको उनकी बुआ महारानी साहिबा गरयी ने अपने पास बुला लिया। उस काल में पर्दे में रहने का कठोर नियम था। अतः श्री वृषभान कुँवरि जी को अपने महल में ही धार्मिक ग्रंथों की शिक्षा दिलायी गयी। वे एक साधारण कन्या न होकर एक दिव्य आत्मा थीं। अतः बचपन से ही इनमें ईश्वर के प्रति समर्पण का भाव था। ये अपने आराध्य देव रामलला के प्रति माधुर्य भाव से सेवा करती थीं और यही भाव आगे चलकर प्रखरित होकर 'वृषभान-विनोद' के मनमोहक पदों के रूप में उभरा। ये रामचरित मानस का नित्य पाठ करती थीं।

चौदह वर्ष की आयु में संवत् 1926 में इनका विवाह ओड़छा नरेश सवाईश्री मन्महाराजाधिराज सर्वगुण सम्पन्न कुलभूषण बुंदेलवंशोद्भव श्री कृष्ण चंद्र कृपापात्राधिकारी श्री मद्सवाई महाराज सर प्रताप सिंह बहादुर जू देव बुंदेलखंड जी.सी.एस.आई.जी.सी.आई. ई. से हुआ। महाराजा साहब श्रीमहेन्द्र प्रताप सिंह जी भी एक अत्यन्त धर्मपरायण व्यक्ति थे, अतः श्री वृषभान कुँवरि जी के आध्यात्मिक जीवन में पति की तरफ से सदैव सहायता एवं प्रोत्साहन मिलता रहा।

महारानी साहिबा श्री वृषभान कुँवरि जी के दो पुत्र एवं तीन पुत्रियां हुईं। बड़े पुत्र श्री भगवंत सिंह जी एवं छोटे पुत्र श्री सावंत सिंह जी थे। श्री भगवन्त सिंह जी टीकमगढ़ रहे एवं श्री सावंत सिंह जी को वीजावर स्टेट की गद्दी पर बैठाया गया। महारानी साहिबा ने चित्रकूट, प्रयाग, काशी, वृंदावन, श्री रंग जी और द्वारिका पुरी आदि प्रधान तीर्थों की यात्राएं कीं।

महाराजा साहब की प्रेरणा से वे योगाभ्यास भी करती थीं और महीनों केवल स्वल्प फलाहार करके साधनारत रहती थीं।

एक बार वे जतारा में नदी स्नान कर रहीं थीं कि आँख बंद कर अपने प्रभु का ध्यान करते समय एक दिव्य राजमहल के दर्शन हुए और ईश्वर की यह प्रेरणा हुई कि अयोध्या में एक ऐसा ही भव्य महल अपने आराध्य देव श्री राम एवं भगवती सीता के लिए बनवाया जाए। अतः महारानी साहिबा कुछ सेवकों को साथ लेकर अयोध्या आ गयीं एवं जो उस समय कनक भवन का छोटा सा मंदिर था उसके दर्शन कर निहाल हो गयी। वे एकदम साधारण यात्री की तरह आयीं थीं। अतः उन्हें कोई पहचान न सका। उन्होंने अपने सेवकों से कनक भवन के उस समय के वर्तमान महंत जी से यह इच्छा प्रकट की कि मैं कनक भवन का जीर्णोद्धार कराना चाहती हूँ। महंतजी ने तुरन्त स्वीकृति दे दी। इसके बाद कुछ दिन वहां रहकर वे अपने राज्य टीकमगढ़ चलीं आयीं। कुछ समय बाद महंत जी उनसे मिलने के लिए टीकमगढ़ पहुंचे। रानी साहिबा को सूचना मिलने पर उन्होंने हर्ष से भरकर महंतजी का आदर सत्कार किया। उन्हें धन, वस्त्र आदि से सम्मानित कर यह वचन दिया कि मैं अयोध्या आ रही हूँ, और महंत जी को सम्मान के साथ अयोध्या विदा किया।

तदोपरान्त वे महाराजा साहब के साथ राज्य के कारीगरों एवं कर्मचारियों को साथ लेकर दल-बल सहित अयोध्या आयीं एवं कनक भवन के विशाल मंदिर के नवनिर्माण का सुसंकल्प किया। मंदिर के निर्माण की नींव विक्रम संवत् 1944 वैशाख-शुक्ल 10 (ई. सन् 1887) बुधवार को रखी गयी। काम जोर-शोर से चला। कहते हैं कि कारीगरों के हाथों में छोटी घंटियां लगें कंगन एवं पैरों में घुँघरू बांधे जाते थे। जिसके कारण फैजाबाद तक उनमें लगी घंटियों की मधुर ध्वनि सुनाई देती थी। कनक भवन का भव्य एवं विशाल मंदिर चार वर्षों में बनकर तैयार हो गया। युगल विग्रह श्री कनक भवन बिहारिणी एवं बिहारी जू की प्राण प्रतिष्ठा विक्रम संवत् 1948, वैशाख शुक्ल 6, गुरूवार (ई. सन् 1891) में

हुई। भगवान के राजभोग एवं मन्दिर के अन्य खर्चों के लिए टीकमगढ़ राज्य की तरफ से समुचित व्यवस्था करी गयी। इस मन्दिर का निर्माण एक राज प्रसाद (राजमहल) के रूप में हुआ। यहां भगवान के अष्टांग सेवा की पद्धति है।

महारानी साहिबा श्री वृषभान कुँवरि ने टीकमगढ़ में भी प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार करवाया। उन्होंने जनकपुर में भी कनक भवन के समतुल्य श्री जानकी जी का एक मंदिर निर्माण करवाया है। वे अपने आराध्य देव भगवान श्री राम एवं भगवती सीता जी (किशोरीजी) की भावना में दिन-रात डूबी रहती थीं। उनकी स्थिति एक उस योगी के समान हो गयी थी जो सदा समाधि की अवस्था में रहता है। ठीक उसी प्रकार महारानी साहिबा अपने प्रियतम प्रभुश्री राम एवं भगवती सीता के भाव रूपी समुद्र में डूबती-उतराती रहती थीं। वे नित्य नए-नए भजन बनातीं और प्रभु के सामने खड़े होकर कीर्तन करतीं। कभी-कभी महारानी साहिबा की ऐसी दशा हो जाती थी कि प्रेम-रंग में रंगने के कारण देशकाल का कुछ भी ज्ञान नहीं रहता था। कभी विरह में व्याकुल होकर रातभर महल की छत पर बैठ आकाश की ओर देखकर प्रभु का आवाहन करतीं।

ईश्वर जब कुछ करना चाहता है तब वह किसी दिव्य आत्मा को अपनी कार्य सिद्धि के लिए पृथ्वी पर भेजता है। अनेक बाधाओं के बावजूद वह आत्मा कुछ ऐसा कार्य कर जाती है जो साधारण मनुष्य के वश का नहीं होता। महारानी साहिबा वृषभान कुँवरि जी भी एक ऐसी ही आत्मा थीं। प्रभु के प्रति समर्पण का प्रमाण कनक भवन का निर्माण जितना है उतना ही उनके द्वारा रचित 'वृषभान-विनोद' का भी है। आश्चर्य की बात यह है कि जिस व्यक्ति को आधुनिक उच्च शिक्षा का लाभ न मिला हो, वह भी ऐसे रस से भरे मन-मोहक पदों की रचना कर सकता है। भावात्मक पदों को लिखने के लिए मस्तिष्क एवं हृदय का संगम चाहिए। योग का भी यही लक्ष्य है कि वह प्राणी के मन, बुद्धि एवं हृदय को एकत्रित एवं एकनिष्ठ करके परमात्मा में लगा दे।

अपना लक्ष्य पूरा कर अपने आराध्य देव की भावना में ओत-प्रोत उनके प्रेम रूपी समुद्र में डूबी हुई महारानी साहिबा अपना भौतिक शरीर विक्रम संवत् 1963 (ई. सन् 1906) कार्तिक शुक्ल एकादशी के दिन त्यागकर अपने ईष्ट प्रभु श्रीराम में विलीन हो गयीं, परन्तु उनकी स्मृति चिर स्थाई है।

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पद	पृष्ठ संख्या
•	*भूमिका*	*v*
•	*महारानी साहिबा श्री वृषभान कुँवरि जी का जीवन-परिचय*	*vii*
1.	वधैयां वाजै अनुपम छाजैं	25
2.	जगत सुख सोहना फरजंद हुआ	25
3.	श्रवन सुनआई लेन वधाई	25
4.	वाजें वाजें गहरीअवाज सखीरी आज वधाई सोहनी	25
5.	ढादिन मचली भूप भवनमें लेतवधाई ना गुमान भरी हैं	26
6.	वाजें नगारे घन मदहुलजावें	26
7.	सुनआई भूपगृह आज महोत्सवशादिया	26
8.	अली निमराज के वधांई हैं	27
9.	वाजें वाजें घुमड़ घनशादिया	27
10.	नृपत गृहरी आली वजत वधायौ	27
11.	नृपत घरवाजे विमलवधाई	28
12.	जनकपुर घरघर अनदवधैयों	28
13.	सुदिनसुमनीको आजकोरी	28
14.	मचलरहि ढाड़िन लेहों बधाई	28
15.	नृपत ग्रह मंगल अनद बधाई	29
16.	नृपतिनिमराय कें वाजें बधाये	29
17.	नृपग्रह सिया अवतारारी सबजग उजयारा	29
18.	श्रीनिमराज दुलारी जीवें जुग मैयाकी लेंव बलाय	29
19.	मनहरन वधाई वाजें	29
20.	लखोरी आली मैंने रामसलोना	30
21.	सियापिया देखे लखन फुलवगिया	30

22. येसी छविमाधुरी देखी कभींना 30
23. गाधिसुवनसँग आयेजेदोउ राम लखन मन 31
24. जे दोउ मुनमखके रखवारे 31
25. जे दोउ नगर विलोकन आयेरी 31
26. ये सुन्दरवर सुमुख सुनोरी 31
27. जनकपुर आये श्रीरघुराई 32
28. कर कमलन प्रभु धनुश उठायो 32
29. देखो माई जनक सुतापति नागर 32
30. वाँकी चलन हँसन वनरेकी 32
31. क्यावनरा मजेदार सलोना 32
32. मेरे मनभाये दोउ राजकुँवर पाउने 33
33. रघुराज वन वनआवेरी नवल किशोर 33
लालदसरथको सबहीके मनभावेरी
34. वनाजी तेरी अँखिया लागनी हो 33
35. वनामेरा अजब सलोना राजकुँवर चितचोर 33
36. हो राजवनरे गजब तेरा सेहरा 33
37. सियावर बनरा आली सलोना 34
38. हो राजवनरे लगा तुमसे नेहरा 34
39. रघुवंश राजवनरा गजपर सवार आता 34
40. चलो सखी देखिये बनरा छबीला 34
41. कुल दीपक राजकिशोर सदन सरहजके गये 35
42. नित दुलहा रूप अनूप व्याह उतसाह रसे 37
43. श्री वृशभानकुँवर क्रत वंदन पोंचै बाबूजी 38
44. सांता विहिन तुमारी लालजी रघुनंदन की नारी जू 39
45. एक गारी सुनो महाराज तो रसिभरी गावत हैं 39
हम सुनी महामहिपाल सो ऋषि बुलवावत हैं
46. तुमसे पूंछत एकवात लाल सकुचावत हैं 40
47. वनाजी कैसे नगर जनकपुर आये 41

48. रघुवंशी राज कुंमार हमारी इक गारी सुनो 41
49. छुयो न मोरी वैयाहो प्रीतमप्यारे थोरे दिननकी वाल 42
50. वांकी छेल खड़ो मग संग अनुज 42
51. देखो मोरीरोकत है पनघटकी गैल रघुराज लाल मतवारो छैल 42
52. छैल द्रग मूठ गुलाल न डारो 43
53. रसिया अवधविहारी हमारी चूनर रँगडारी 43
54. मुहसे करत वरजोरी छैल नवनागररे 43
55. भयौ अनौखौ छैल खिलारी हमारी लाल चूनर रंगडारी 43
56. येसी होरी कोउ खेलतखेल खिलारीरे 44
57. आली सनमुख पिचक चलावे अवध पिया दरशन को तरसावे 44
58. पिया खेलों मैं तेरे संग होरी 44
59. रघुवंशन में वीरआज तुमें होरी खिलाउरे 44
60. तुम को आज होरी खिलाऊं 45
61. नहिं खेलिये राजकुमार अनोखी होरी लला 45
62. सजौ किन नवनव भूषन अंग 45
63. चुवन लागौ चोलिन चुनरी रंग 46
64. होरी खेलत प्यारी रसरंग भरी 46
65. आज तुमें होरी खिलाउंरे जाविक नेमरे 46
66. सखी देखोरी मतवारो छैल यह नृपतकिशोर मोसे करत फैल 46
67. आली एसौ ढीठ यह नृपत किशोर मोसे खेलत वरजोरी होरी 47
68. अब खेलों न रघुराज लाल संग होरी 47
69. एसी होरीमें करे वरजोरी पकर रँग वोरी लाल 47
70. देखौ मेरी रोकत है पनघट की गैल 47
71. रघुवर अवधविहारी हमारी चुनरी रंग डारी 48
72. होरी के मदमाते आये कोटन देखत कामलजाये 48
73. अति लंगर खिल वार अवध पिया 48
74. अनोखो खिलवार डारे अबीर मेरी आँखन में 48
75. होरी में वरजोरी करै एसी नवलानार 49

76. ऐसी रँगीली नार परस्पर खेलत होरी 49
77. होरी में वरजोरी चलाई 49
78. अब काकी चलै वरज़ोरी पिया कहौ खेलनमें 49
79. आवो छेल तुमें होरी खिलावें मनभावैं सोई लाल करावें 50
80. मगरोकत नित आयरी भयो अनोखो खिलारी 50
81. लाल नई नौखी होरी खिलाई 50
82. आज अवधपुर होरी मची है 51
83. होरी या रंग धूम मचाऊँ 51
84. रसमाते लालन होरी के अनुराग भरे नवगोरीके 51
85. भयो छैल खिलारी होरीकौ येहो नवनागर रस चोरीको 51
86. मग रोकत वाल खड़ो आली संग सखन वांधेपाली 52
87. होरी खेलत आज नष्पत प्यारो सुघर खिलारी मतवारौ 52
88. देखो छैल छवीलो चलो आवै बड़ी बड़ी अखियां भटकावें 52
89. जोमें अवध छैल कहुँ पाऊं मनके नाच नचाऊं 52
90. पिचकारन रंगझर लावै जो मनआवै सोई गावै 52
91. देखो नवल खिलारी होरी कौ प्रीतम राजकिशोरी कौ 53
92. जिन चालो मूठ गुलाल अवध पिय नैननमें भरजाइगी 53
93. तुम कैसी करत अनरीत रसीले मगरोकरत झझकोरके 53
94. तुम स्याम सलौने छैल हमारी लाल चूनर मतिवोरियौ 53
95. मनभावन राजकिशोर सखीरी यार हमारें श्यामरौ 53
96. छलिया नष्प राजकिशोर सखीरी आय अचानक रोक लियौ 54
97. तुम सियावर राजकिशोर हमारी छैल गैल मति रोकियौ 54
98. अरी हाँरी सखीरी चितवन में मन मोलिय रघुराज हमारौ यार 54
99. जिन जइयौ भरन कोउ नीर कुँवर दोउ ठाड़े सरजूतीरपै 54
100. डगर में छेडै अकेली जानके रसमातौ नृपतकिशोर 54
101. पनघट कौ रोकै घाट भरन को हम न जैबूरे 54
102. तुम कैसी करौ वरजोरी झपट मोरी चोली गही नागर 55
नवललाल मतवारौ रस सागर चितचोर गही वरजोरी लला

103. तुम साची कहौ नृपलाल अवधपिया फेर दरस कब दीजियौ 55
104. भयौ छैल खिलारी होरी कौ येहौ नवनागर रस चौरीकौ 55
105. श्यामलिया छैल छबीली कौ 55
106. मग रोकै हमारौ भोरईते आवै 56
107. राजकुँवर गरवीलो मोसे खेले अनोखी होरी लाल 56
108. नागर नवल खिलारी मोईकौ भर पिचकारी मारी लाल एसी घाली कुचन विच लागी भीजगई चोली सारी 56
109. सुनके अवध लालकी होरी जुरआई सवगोरी 56
110. अवध छैल मतवारौ देखौ नयौ भयौ हुरयारौ 57
111. जाहोरी खेले सहित अली रघुनंदन और जनक लली 57
112. छवि विसरत नाहिं विसारौरी 57
113. श्यामलिया छैल सलोनारी 57
114. तेरे लगन लगीनौं नैंना 58
115. प्रीति करीती हमनें तुमनें कैसी भूलन ठानी लाल 58
116. मनमोहन राजकुँवर के देखो नैन विदेह सुताके लाल 58
117. इनसे प्रीति करी पछितानी लालन पीर न जानी 58
118. श्यामलिया नैंनन लागौरी 58
119. खेले कामिन अनुराग भरी करकमलन लिये फूल छरी 59
120. नहिं तो नेह नदी बह जाना 59
121. पिया मन वसरये नेना प्यारी के रसि मतवार सिया गोरीके 59
122. रसिक सवादी नेना तेरे घूँमत रसमतवारे लाल 59
123. जोमन भजन करत अलिस्यावै भ्रग ज्यों जल को धावै 60
124. रसमाते नयन विहारी के 60
125. देखौ मनकी अजब कहानी मतसर रहत दिमानी 60
126. रतनारे नैंना बड़ेजाली राजकुमार चतुर आली 60
127. देखो राजकुँवर रोकै गलियाँ जिन जइयौ नारि भरन पनियाँ 60
128. रसिया मेरौ छैल अवधवासी 61
129. रसिया विन देखैं मुह कल न परै 61

130. चिरजीवै होरी को रसिया 61
131. छाकी छाकीरे छैल मतावारेसें 61
132. होरी खेलत आज नवल रसिया 62
133. होरी खेलन आज रसिया महल पधारौ 62
134. आली होरही चोव नगारनकी देखो राजकुँवर के आवनकी 62
135. देखौ रसिया छैला होरी कौ रसिक सवादी गोरी कौ 62
136. रघुनंदन रसिया आयौरी 62
137. प्यारे तुम नाहक रार करौ नृपत लाल मेरे पैंडैं न परौं 63
138. यह औसर अनुराग भाग कौ फाग विलास नवीन 63
139. मिलौ इतै श्रीरघुराज किशोर 63
140. दोहा–सुर पालक सुत वांमकी सोपत्री अभिराम 63
141. इक दिन रास विलास में सिया कृपा कछुकीन 64
142. उक्ति लिखित वांची सवै सांची प्रीति निहार 64
143. मान गत सीय गही रमनीय 64
144. दोहा–सियमति में गति मान गुन प्रीतम परमसुजान 64
145. तेरेही शरनरहौं मृगनैंनी मानतजो हँस बोल री मानिनी 64
146. दोहा–सुनत प्रान प्रीतम वचन साँचे सरल सुभाय 64
147. जाऔ प्रीतम मोय छल न सुहावै 65
148. दोहा–कपट चतुरता रावरी जान परी भरपूर 65
149. दोहा–मान प्रियाके वैन पर सुनि सानद रघुनंद 65
150. तन मन हाथ विकौ तुमरे प्यारी जाउं कहां को पीर निवारै 65
151. दोहा–सुख सागर विश्राम तुम, श्रीनिमराजकिशोरि 65
152. दोहा–सुन मिथला पतिनंदनी, श्रीरघुनंदन वैन 66
153. जिहिं वाम लिखी हित की पतिया तिहि को मिल जाय करौ वतियां 66
154. जावौ जुजावौ वनै उनही सौं वातन रार वडावत हौ अब 66
155. दोहा–प्रान प्रिया के वैनवर, सुनि प्रीतमसुखदैन 66
156. हे प्रान प्रिया कीजे मरजी अपराध नहीं मानौं अरजी 66

157. दोहा–प्रानप्रिया मेरी तुही, जीवन प्रान अधार 67
158. मृगनेंनी श्रीजनकजा, जीकी जीवन जोर 67
159. दोहा–प्रीतम परमप्रवीन प्रभु, वचन सुनौ सिया वांम 67
160. तुम प्रीतम प्रभु स्यामरे 67
161. करप्रनाम सिया पदकमल, दूती अमल अमंद 67
162. जाऔ जाऔ रे पिया रहौ दूर दूर 67
163. माननि मोरी अरजी मानमान 67
164. एकसखी प्रिय दूती बनाकर भेज दई सियके ढिग आई 68
165. स्वामिनी अर्ज मेरी मान लीजे 68
166. मान माननी मान न कीजे 68
167. वचन सुन सखी मन चाहकरी 68
168. मनकी मुख से बात कहौरी 69
169. नवनागर अवध विहारी सिया सुख भारी हैं 69
170. झूलैं दोऊ झूलना झुकन झुक झांकी 69
171. लखौ यह पावस अधकाई 69
172. सावनवा आये आये 70
173. सावन मन भाये भाये आली हरष देखिये नवल लता द्रुभ झूम झूम 70
174. झूलौ पिया प्यारे झूलन मनभाई 70
175. रसिक दोऊ झलना झूलैं हो 70
176. आयौ सखीरी सावन प्यारौ 71
177. नवलघन नवलबन नवलझूला बनौ 71
178. पधारौ सखी झूलन सरस निकुंज 71
179. चलौ चल देखिये झूलन रंग 71
180. सरजूपुलिन में झूलती मजेदार यारसंग 72
181. किशोरीजी राख सरन मोह लीजे 72
182. करूणाकर अवधछैल मोपे मिहिर कीजे 72
183. अव कृपादृष्ट कीजे निमराज की दुलारी 73

184. प्रीतम विन रतियां कैसे कटैं 73
185. नहिं मानै अवधपिया मेंरी वरजी 73
186. सिया प्यारे की छवि मोहिय अटकी 73
187. आज रंगीले वनी छवि वांकी 74
188. हमारीतेरीयारी नहिं अवछूटै 74
189. देखौदेखौरी अवधपिया रोकत घाट 74
190. अवरोको न डगर मेरी मानौ हटकी वात वनावत छलबलकी 74
191. कहँ नृपलाल हरनमन वारौ 74
192. नृपलाल मोर मन चोरौरी 75
193. छैल चितचोर द्रगन वसौ प्यारौरी 75
194. महल में कवगई ती मेरौनाहक करौ वदनाम 75
195. मेरे प्यारे गरेसे लगजारे सुख सागर नृपलाल विनदेखैं मोइ कल न परतहै अधर सुधारस प्याजारे 75
196. विन दरशन तरसानी सखीरी मेरे प्यारे पीर नजानी 75
197. राघव मोसे नेहा लगा कितगयौरी 76
198. निस वासर न सुहात अनौखी जा गाड़ी लगनियां 76
199. पिया हमसे नजरिया लगाइ जिन फेरौ 76
200. द्रगन सर सैयां मारे गुइयां 76
201. कहां डार आये ललन तुम मौती 76
202. प्यारे तेरी छवि पर फिरत दिवानी 77
203. लालन के नेंनविकट कजरारे 77
204. वाछैल पर आषिक भई न परै चैनरी 77
205. पाईये आली सजन सुख कैसैं 78
206. यह दोऊ चंद्रवसैं उरमैंरें 78
207. हो सियाप्यारे वांह मेरी पकरी 78
208. भजौ मन रघुवंशी रघुलाल 78
209. द्रगन वसे कौशिल राजकिशोर 78
210. ललन विन देखैं परत परत नहिं चैंन 79

211. सुन मन रामचरन रतिमनिये 79
212. किशोरी जू केसै यांके नैना रसीले 79
213. जपि है न रामनाम जो ना सुख पाइहैं 79
214. निरख जुगल छविकी वलिजइयै 80
215. सुनौरी सखी कछु जतन करौरी 80
216. रसिया छैल विना मोई सव जग लागत सूना 80
217. जुलफ जाल के फंदै परौना 80
218. हां प्यारे तेरे नैन रतनारे सुनिये नृपत किशोर सियावर प्रतिमप्रान हमारे 81
219. कौसिलराज किशोर तुमै हम जान नहिं दैवू 81
220. लगन तो राम निवाहै वनहै 81
221. मद भरीरे गजव तेरी अंखियां 81
222. स्वामिनी अब जिन मोह विसारौ 81
223. सरन मैंने लियौ प्रभु चरनन केरौ 82
224. स्यामलियायार प्यारा है हमारे नयनौं का ताराहै 82
225. सव तज रैहौं सिया पद लागी 82
226. द्रगन सर कोन सहै अनयारे मनमथवान सर से सालत आसिक हिय हन मारे 82
227. कौसिल राजकिशोर नजरिया कैसी है महाराज 82
228. नृपलाल हमारी गली आजारे 83
229. अवतौ कृपा करौ राम सरन आयी तेरे 83
230. विन दैखैं जियरा न मानै सखीरी 83
231. जिय धरत न धीर प्यारे सूरत न लीन्ही 83
232. ललन विन देखें रहौ न जाइ 84
233. हौंतौ शरन सियानाथके आई मिहिर कर राखना 84
234. प्यारे सकल उर वासी बुध कहत प्रवीन 84
235. राघौजी के चरनकमल सुखदैन 84
236. प्यारीलागैं अवधकी गलियां 84

237. काकहौं सजनी प्रीतम रसवतियां 85
238. तुमारीपियागजब गरवीली चाल 85
239. चंचल नैना रतनारे हो 85
240. कहियौ हो प्यारे सैयांसें हमरौ सदेसौ कहियौ जाय 85
241. मधुरछवि नैननसें न टरैरी 85
242. प्रीतम छवि प्यासे नैनारे 86
243. आली मन मोह लियौ चितचोर 86
244. क्यौंतरसावत छैल चिकनियां अजब अदा दरसाइ लुभाई 86
245. छलन छली सजनी छलिया छैल 86
246. अजव गत तेरी प्रान प्यारे 86
247. नवनागर वड़भाव विलोकौं सिय गुनरूपनिधान 87
248. मनलैगयौ हमारौ पिया स्यामरौ 88
249. नहिंहैं तुमरीप्रथम कैसी वतियां 88
250. पिया तेरी जुलफिया नें जादूकिया 89
251. सखीरी मोय वैरिन नींद भई 89
252. ठग लैहै नृपतसुत मानकही 89
253. पिया प्यारे हँसन लख पागीरे 89
254. बहुत दिननकी यारी हमारी तेरी 89
255. अजब खूब सूरतीवारा 90
256. कारन कबन मान तुम कीनौं 90
257. सियाबरप्यारे अवधपतिवारे दरस टुकमोह को दिखाजारे 90
258. करत अब काहेकौ निठुराई 90
259. जनलखरूप लुभानीरे 91
260. मैं खड़ी महल अपनेंरी 91
261. नागरनवल नयनविच अटके 91
262. पिया प्यारी कौ मन सो मयूर पिया घनस्याम सघन 91
263. जहां देखौ तहां राम मईहै 92
264. सुनौ प्रभुछाड़ै नाहि वनैं शरनागत पालैं वनैं 92

265. काकरौं सजनी द्रगन छवि अटकी 92
266. लला तन मन जिया तुम पैं दैऊं वार 92
267. मिथिला निजधाम सिय प्यारी कौ सुखदाई 93
268. रैन श्रमथाकैरी लली ललना 93
269. अखियाँ जुगलरूप छविछांकी 93
270. देखके छवि माधुरी नवनागरमें द्रगलगे 94
271. नरदेह कौ तन पायकै भजनाम को हरदं 94
272. सिया स्वामनी कृपाल राख लीनी हमकौं 94
273. वन वीथन राम चलेआवैं 95
274. चित्रकूट अति विचित्र देखौ द्रगसजनी 95
275. चितचेत चतुर चित्रकूटचलौ 95
276. चितचोर लीन चित्रकूट रहसभूम जानी 95
277. प्रीतम चलौ सिजिरियां रैंन रथ थोरी 96
278. उमंगआई निदिया चलौ सिजियापै 96
279. विरचो रहस कुंज सरजू तट 96
280. जुगलकिशोर ये शुभ सरदआई रहसरचिये 96
281. पियामुख देखत सरद शशि लाजै 97
282. रसरास रचौ प्यारे उपवन में आयकैं 98
283. देखो सुधर श्याम रसिक वंसी मुख साजैंरी 98
284. बीन कहूँ बाजी रघुबरलालकी 98
285. चलौपिया कनक कुंजकी ओर 98
286. बजावै बीना नागरीहो 98
287. ताकौ प्यारी सरदरित चांदनी 99
288. देखौ प्यारी सरद शशि नीकौ 99
289. सजन मोसै वरजोरी कीनीरै 99
290. मेरी रोकौ न डगर अवधेशललन 99
291. चलत डगर मत छेड़ी छैल 100
292. भोरई रारमचावैरी 100

293. रघुनंदन छैल हमारारे 100
294. महबूब भूप प्यारा मनमें समारहाहै 100
295. मासूक रूप प्याला चशमौं से पान कराहै 100
296. सखी रघुराज मेरे दिलका प्यारा है 101
297. रघुराजसें कर दोस्ती सब सुख कौ सार है 101
298. सियावर सलौंनें बने कैसे कैसे 101
299. दिलौ मनजान से पाया सजन कुरवान भई 101
300. मिलादे सही श्रीअवधेयश का प्यारा लला मिलादे सही बहुत मानौगी तेरा भला 102
301. आली दिलदार की सुकुमारता दिल छारई है 102
302. रघुराज सै कर दोस्ती दिल लाग है कै न लाग है 102
303. जिन राम यश गाया नहीं कोविद भया तौ क्या हुवा 103
304. रघुराज प्रानप्यारा सजनीमुझे मिलादे 103
305. अरे दिलदार दिल हरकै भला तरसाव मत हमको 103
306. अरी नृपलाल वेदरदी मुझे द्रगवान से वेदी 104
307. प्रात जगे लली लाल नयना अनुराग लाल देखत नभ लाल प्रेम जागे मतवारे 104
308. दियैं गलबैंया दौनौं जनैं रैंन रहसरस रंगसनैं 104
309. अवध पिया काय तरसावै जियारे 104
310. वाछवि पै कहौ को न लुभानौं सवतज भयौ मन वावरौ 105
311. बिन देखैं स्यामलिया रहौ न जाय 105
312. रसीले नैंना राघौजी के 105
313. रंगीले नैंना तोरे सलौंनैं 105
314. भोरी नवलकिशोरी प्यारी लागैं रँगीली तेरी अखियाँ 105
315. सुरत नहिं बिसरै तोरी पिया रे 106
316. श्यामलियारे तोबिन रहौ न जाय 106
317. जल भरनैं मई पिया मगरोकी गुरजन लाज सखी लोपी 106
318. सुआनद मंगल गाइयेरी 106

319. श्रवनसुयशसुन आइ द्वार 106
320. नित धाम हमारो नित लाल ललौ 106
321. अपनै प्रीतम कौ रिझाउँरी मैं तौं मधुरी तान सुनाउँरी 107
322. खेलतफाग उमंगभरे नवनेह छके रस चोलन में 107
323. छैलारे अटक रही तुमसैं उरझ रही छविसैं 107
324. कब हम लैहैं द्रगन के लाभरी 107
325. लालमिलन को सदा द्रग ललकैं 108
326. मतबारीनजरिया कौन सहै 108
327. मन मोहनी सुरतिया मन अटकी 108
328. रसिया होरी में मोसौ खेलौ न छल को खेल 108
329. रस चाखौरेछैल रँग होरी कौ 108
330. वनी छवि बाँकी आज रगीले 109
331. अक्षयवट पूजन काज चलौरी 109
332. फूलन की चंदनी फूलन ताटक पैरे फूलन के पात 109
333. लगनमतवारी काहू न डरावैं 109
334. मेरी आली पिया विन नींद न आवत तलफतलफ जिय जावत 110
335. कुसमानी चुनरिया प्यारी जुलमकरैं 110
336. अधिक नहीं चहियतुनिठुराई देखौ प्रियामिथलेश सुताकौ 110
337. गुईयां मोह पकर लाल रंग वोरी 110
338. होसियाप्यारे लगन न छूटै 111
339. नवनागर चितचोररी तेरे रूप लुभानें 111
340. पिया बांगिलिया में करत विहार 111
341. मेरौ विन दरशन जिय तरसै कब छवि मिलै नजरसैं 111
342. रँगबरसै रंगीले झूलन में 111
343. झुमझुम आई निदिया नैनन में रस वैननमें 112
344. तेरे मिलने को छैल बहुत भटकी 112
345. तुमै प्रभु बाँह गहेकी लाज 112
346. सखीमें आज लखे सीतारमन 112

347. कैसे जाउं जाउं जल सरजू का 112
348. लागी लागीरे लगन मतटोरौ 112
349. देखौरी दोउ प्रानप्यारे कौसिलपत के राजदुलारे 113
350. मनमोहनीसूरत स्यामरी को नहोय लखबाबरी 113
351. वनै शिवलोचन तीरथराज 113
352. देखौरी छवि राजकुँवर की 113
353. होसियावर की लगन हिया खटकी 113
354. दोहा–जुगल माधुरी लखतनित, धन सखि तुमरौ भाग 114
355. केसर रंग चुनरी बोरी सैंयां 114
356. पिय प्यारे बिन मोरे जिय कल न परै 114
357. तुम कहुरे भवरा पियासों जाय 114
358. सिया राम हृदय मन भजलैरे 115
359. प्यारी तेरे नैनन में रस बरसै 115
360. दरस विन अखियां तरसहीरे 115
361. विहरत फुलवारी पिया मेरे मनभाए 115
362. रंगमहल द्वार सखी आरती समारैं 116
363. आरती करैं अली सियावल्लभक 116
364. आरती कीजे सिया रघुवरकी 116
365. आरत करहैं सखि आनदमन करभोजनबैठे परपंकपर शोभा लखत लाजत दामिनि घन 117

।। श्रीगणेशाय नमः।।

वृषभान विनोद

बधाई

वधैयां वाजै अनुपम छाजैं।।
दसरथ भवन भयो सुखभारी मिल चलिये ताकाजैं।।
विभव समाज अवधको देखत लोकपाल सवलाजैं।।
श्रीवृषभांनकुंवर वरवनता अंगन रचना साजैं ।।1।।

जगत सुख सोहना फरजंद हुआ।।
नृप अवधेशके सुत चार जन्में वजें सुर दुंदुभी
आनंद हुआ।।
सवें पुरनागरी जुरराजमंदिर लखो दिलवर
नयनमोदिलिया।।
असीसहँ भाँमनी महारानी जू को जियो तव लाल
जोरी संग सिया।।
वरस उत्साह प्यारे ध्यान प्रिया को अलिनजुत
गावती श्री रामप्रिया।।2।।

श्रवन सुनआई लेन वधाई।।
जग जाहिर नृप दान देत हैं जो जाके मनभाई।।
जांचक भये अजांच भूप जिमि रविकुल करत बढ़ाई।।
वरसगांठ मनहरन लालकी त्रिभुवन को सुखदाई ।।
रामप्रिया येही वरमांगत चरण कमल सिबकाई।।3।।

वाजें वाजें गहरीअवाज सखीरी आज वधाई सोहनी।।
अरी हारी सखीरी नृपरानी सुत जनमियों भये चार

जगत सिरताज वधाई मनमोहनी ।।
अरी हारी सखीरी अरथ भँडार लुटाइयो भूषन पट
नानाभाँत अमित गोदोहनी।।
अरी हारी सखीरी वरसगांठ सुख मोदले श्रीरामप्रिया
वलजाइ वसो द्रग कोहनी।।4।।

ढादिन मचली भूप भवनमें लेतवधाई ना गुमान भरी हैं।।
बहुत दिनन से रघुकुल जाचत लेहौं मनभाय भरी हैं।।
नखसिख भूखन मोइ नचईये हीरा रतन भंडार भरी है।।
तवसुत वदन विलोक चंदसम आय इहां अवलाष करीहैं।।
दीजे दरश असीस लीजिये रामप्रिया
सुखसुजश फरी हैं।।5।।

वाजें नगारे घन मदहुलजावें।।
चल सखिदेखिये भूपभवन में देव वधूटी मंगल गावें ।।
दामिनसी दमकत चहुदिसतें गांधर्वादि मधुरध्वनि छावैं रामप्रिया
आंनदजल वरसत दोष दाग हिरदेके जावें।।6।।

सुनआई भूपगृह आज महोत्सवशादिया।।
अरी हारी सखीरी।।
वरसगांठ नृपलालकी सुर नर मुनि आनंद काज
महोत्सव शादिया।।
अरी हारी सखीरी देव सुमन झर वरसिया कह सुख
उमगो दुख भाज महोत्सव शादिया।।
अरी हारी सखीरी देव वधूकरें आरती वलिजाई नचें
तज लाज महोत्सव शादिया।।
अरी हारी सखीरी रामप्रिया अभिलाष भर सो वहुविधि
मंगल साज महोत्सव शादिया।।7।।

बधाई श्रीकिशोरीजीकी

अली निमराज के वधांई हैं।।
वाजें सुर दुंदभी सुहाई हैं।।
चली गजगामिनी पुर भामिनी सज उमंग
जनु सिंधुको नदी घांई हैं।।
महलके विच सोहले वहुभांति सोहें नृपतमन
जानकी प्रगटाइहैं।।
सिरानी कूख श्रीमहारानी जूकीअली वृषभान की
सुखदाइ हैं।।8।।

वाजें वाजें घुमड़ घनशादिया।।
श्रीमिथलाधिप दरवार।।
रानीसुनेनाकी कूख सिरानी जनकलली जूकीजादिया।।
राजदुलारी सव सुखकारी अवधनगर पावैगादिया ।।
श्रीवृषभानुकुंवर संग खेलहिं चरणकमल अनुरागिया।।9।।

नृपत गृहरी आली वजत वधायौ।।
वजल वधायौ लगत सुहायौ उमद हियरी
आली मंगलगायौ।।
जो जैसे तैसे उठधाई हरषवाडौ
आली हिये नसमायौ।।
पोहिची जाइ राजमंदिरमें मगन मनरी
आली आदरपायौ गावहिं नाचहिं भाव दिखावहिं
मधुर सुररि आली रस वरसायौ।।
जयजयधुन जुवतीगन वोले लली मुखरि
आली लख सुखपायौ।।
रामप्रिया प्रिया मातगोददरसलेरी आली भागसरायौ।।10।।

नृपत घरवाजे विमलवधाई।।
पुरभामिन जुरचली महलको मंगलथार सजाई ।।
मधुर मधुर सुरगावै सहेली नाचै भावदिखाई ।।
करहिं आरती देहि निछावर आनद उर नसमाई।।
महारानी सनमान सवनको करकर मानवडाई ।।
रामप्रिया लख मोदभवनको कमला देख सिहाई।।11।।

जनकपुर घरघर अनदवधैयों।।
चलि गजगामनी जुरपुरभामनी थार सजमंगल दुवघरैयो ।।
सकल सनमानी सुनेनारानीदियो मन भावती जोजिहिं चहियो।।
गावैं सखी सोहिले मृदुबानी सुनत मुनगनके ध्यान छुटैयो।।
जांचकगुणी भूपग्रह आयेजांचक भये अजांचकजन्मभरैयो ।।
वृषभांकुवर येही वर मागें जुगल चरणनमें चित्तलगैयो।।12।।

सुदिनसुमनीको आजकोरी।।
मधुऋतु शुक्ल नौमि तिथि जनमी उदयपुण्य निमिराजकोरी।।
रानीसुनेनाजू वेटीजाई अचल सुख्यसौभाग्यकोरी।।
रामप्रिया चाहत निसवासर जुगल कंजपद टहलकोरी।।13।।

मचलरहि ढाड़िन लेहों बधाई।।
पट भूषन मोहे नहि चहिये नाही रतन वहुमाई।।
हाथी घोड़ा कछु नलेहों रथ नाहीं सुखदाई ।।
नगर ग्राम चाहों नहिंतुमसो न चहुंराज वडाई।।
बहुत दिननते जोमन चाहत सोविध आज दिखाई।।
देत निछावर लेत न ढाड़िन वहुविधि कर बड़ाई।।
निमकुलके पुस्तन को जाचत मनभायो
घनपाई।।
तव तनुजाको बदनचन्द्रसम दीजे वेगदिखाई ।।
रामप्रिया लखसुख महलनिके सारद कह सकुचाई।।14।।

नृपत ग्रह मंगल अनद बधाई।।
निमरानी की कूखसिरानी सुखनिध कन्याजाई।।
पुण्य पयोध उमग भूपतिको शंकर गौर सहाई।।
नारिनदी बाडी चहुदिसतें सुख्य समुद्र समाई ।।
रामप्रिया सुर नार लहर जिमि नाचहिं
भावदिखाई।।15।।

गजल

नृपतिनिमराय कें वाजें बधाये।।
समय सुभजानके लागे सुहाये।।
गुनीजनमागनें चहुं दिसतेआये।।
भूप अहिलादसे भूषन लुटाये।।
विप्र सनमानसे बहुदान पाये ।।
कहैं जयजीव यश त्रैलोक छाये।।
सीय शशिवदन लख मनसा पुजाये।।
रामप्रिया सहचरी नैंना जुड़ाये।।16।।

नृपग्रह सिया अवतारारी सबजग उजयारा।।
श्रीनिमराज मोद मनहरसत बगसत रतन भँडारा।।
अति आनंन्द जनकपुर वासिन घरघर मंगलचारा।।
रामप्रिया सिया जन्म लियौ है सजनी भागहमारा।।17।।

वधाई

श्रीनिमराज दुलारी जीवें जुग मैयाकी लेंव बलाय।।
होंढाठी आयो जांचनको नाचन अन्त न जाय।।
दीजे दान अशीसलीलिये कीजे मोमनभाय।।
रामप्रिया नितदरस ललीके नैंनन तरस बुझाय।।18।।

मनहरन वधाई वाजें।। भूपभवन सुख साजें।।

सरस राग वाजे सुहनाई नौवद घनमदलाजे।।
सुवरन सींक समार सातिया नृप दरवाजे भ्राजे।।
तोरन धुजाबँधे चहुँओरन रतन लुटत जनु लाजें।।
मांगधबंदीजन बहुनिधिलैमनभावत छबिछाजै।।
बरसगांठ मनहरन लालकी भक्तिजनन सुखकाजे।।19।।

।। नगर अवलोकनके पद।।

लखोरी आली मैंने रामसलोना।।
आये सुमनलेंन फुलवारी नृप दसरथजू के छोना।।
सुन्दर बदन मदनतन वारत कोउ ना सखी जगहोना।।
अतिकोमल सुकुमार अलीरी लिए सुमन कर दोना।।
सिरन चौतनी सुभग सुहाई जुलफनविच उरझौना।।
लतन ओटतै सखिन लखायो मानो विधिजुगयोना।।
येही धनुषटोर हैं आली येही सिया पिया होना ।।
वृषभानकुँवरि मन येही लालसा करहैं सियसँगगोना।।20।।

सियापिया देखे लखन फुलवगिया।।
सिरन चौतनी सुभग सुहाई सुन्दर स्याम राम घनघरिया।।
नखसिख सुभग मनोहर जोरी कोटन मदनमान मदमथिया।।
दुरजोगऐ जब दृष्टि न आए सिया मनविकल भई सबसखियाँ।।
गौर निकेत विनयकर माँगत वरस्यामल सुन्दर मनबसिया।।
वृषभानकुँवर गिरजा प्रसादले आनन्द उमग उमग उरभरिया।।21।।

येसी छविमाधुरी देखी कभींना।।
किसी महाराजके नकशे नगीना।।
लखेथे चिमनमें झाडों के नीचे लिए सुभदल जुत सुमनों के दोंना।।
सुनत सब सखी उत्कंठा हुई है चलो चल देखिये दिलके ठगौना।।
पिया मुखचन्द रस पीनेकी आसा अलीवृषभानके
चकवई हैं नेंना।।22।।

गाधिसुवनसँग आयेजेदोउ राम लखन मन।।
समाचार मिथिलापति पाये लिये साथ सब विप्र सचिवगन।।
कर प्रनाम भूपति हिये लाये देख राम भये भूप सिथलतन।।
कहुमुन कैजे भव भयटारन है सुईवसेसदां जेशिवमन।।
नृपकुलतिलकके मुननकुलपालक देखमोहमन भयो स्यामधन।।
जे नृप दसरथके दोउ टोटा श्रीवृषभानकुंवर जीवन धन।।23।।

जे दोउ मुनमखके रखवारे।।
नगर विलोकन आये सजनी श्यामचरन कोसिल्याजू के वारे।।
गोर किशोर सुमित्राकेसुत ललित रुप लोचन रतनारे।।
सखी इन समकोउ वीर न सुनियत हनीताडका असुर इनमारे।।
सखी जे नृप पूरनकरहै तोर धनुष सिया व्याह सिधारे।।
वडप्रभाव लघु गनिअत नाहीं गौतम त्रिया तार पगधारे।।
जो विधवस संयोग समारौ हमनीके निज नयन निहारे।।
अली वृषभानु झरोखन लागी नाडीठ तोर तृन डारे।।24।।

जे दोउ नगर विलोकन आयेरी।।
विश्वामित्र संग नृप ढोटा शोभा निरख मनोज लजायेरी।।
सिरन चोतनी सुभग सुहाये श्यामल गौर किशोर सहायेरी।।
कोशिल्या सुत राम कहावत लखन सुमित्राके मनभायोरी।।
अली वृषभान धनुष जे तोरें ले जयमाल सिया पहरायेरी।।25।।

ये सुन्दरवर सुमुख सुनोरी।।
शिवको धनुष कठिन सुन आली जैसो कठिन मनभपठयोरी।।
जो नृप जात पिनाक न दी सत वीर पराक्रम हार दयोरी।।
इनहिं छाँड कोउ धनुष न तोरे येही ब्रह्मावर जोग रचोरी।।
श्रीवृषभानुकुँवर मनभावन मोह सगुन सखी नीक भयोरी।।26।।

जनकपुर आये श्रीरघुराई।।
लेउ नयन को लाभ सखीरी अस कह सब उठाधाई।।
अर्घ पावडे करत सुनेना आनद उरन समाई।।
श्यामलगात सरसीरुह लोचन कोट अनंग लजाई।।
गई लिवाइ जनक मन्दिरमें लखन भरत रघुराई।।
मेवा भोग लगाइ विविधि विधि सीतल जल भरलाई।।
वृषभान अली अदभुत छविको कवि निरख निरख वलजाई।।27।।

कर कमलन प्रभु धनुष उठायो।।
छूतन नभमंडल समभयेउ पुनदामिन दुतछायो ।।
जय जय गान भई मंगल घन देव सुमन बरसायो।।
गुरु सिरनाथ बैठ निज आसन विजय निसान वजायो।।
सिय जयमाल राम पहराई जुवतिन मंगल गायो।।
वृषभानकुँवर लखजुगल माधुरी।। अवध छेल चित चायो।।28।।

देखो माई जनक सुतापति नागर।।
प्रभु मनसा लवलीन वाजि छविकोट कला गुन आगर।।
सारे लक्ष्मीनिधिसंग सोहत अनुज सखा गुनआगर ।।
राजत राम जनक दरवाजें सुन्दररूप उजागर ।।
वृषभानकुँवर सियके संग जेहैं मिथला नगर तज वा घर।।29।।

।। वना।।

वाँकी चलन हँसन वनरेकी।।
माथै मौर खौर चन्दनकी फुँदरी हलन लटक जुलफन की।।
व्याह विभूषन सोहत सुन्दर राजकुँवर छविदलन मदन की।।
अली वृषभानकुँवर मनभावन जुगजीवे जोरी सियावरकी।।30।।

क्यावनरा मजेदार सलोना।।
तुरंग नचावत वदनदिखावत चितवनमें पड़डारत टोना।।

लाजह कोट काम इन ऊपर वार दीजिये तनमन सोना।।
अली वृषभानकुँवर मनभावन रघुवंशी मेरो यार सलोना।।31।।

मेरे मनभाये दोउ राजकुँवर पाउने।।
श्यामल गोर किशोर मनोहर कोटन काम लाजउने।।
मिथलापुर नर नार सवनके वरबस चित चराउने।।
कोट रवीसम तेज प्रकाशत सबके भाग जगाउने।।
नृपप्रण पूरन कर सबही विधि भूपन गर्भ घटाउने।।
वृषभान अली सियके वनरे को ममहिय माँझ बसावने।।32।।

रघुराज वन वनआवेरी नवल किशोर लालदसरथको
सबहीके मनभावेरी।।
अनव्याही सब व्याही व्याही सबको चित चुरावेरी।।
वृषभानकुँवर ऐसो सुन्दर वर सो हियमांझ वसावेरी।।33।।

वनाजी तेरी अँखिया लागनी हो।।
अरुन कंजकारे रतिनारे मदन वानके घालनीहो।।
सुनियौ नृपत किशोर सियावर रूप पयूष पिआवनी हो।।
अली वृषभानकुँवर मोहा मन नेक न पल विसरावनी हो।।34।।

वनामेरा अजब सलोना राजकुँवर चितचोर।।
रतनारी अँखियनेमें कजरा हँसहेरे मेरी ओर।।
सिरपर मौर जुलफ घुघँरारी है चन्दनकी खौर।।
व्याह विभूषन सोहत अंग अंग नृप सुतराज किशोर।।
वृषभानकुँवर लख माधुरी मूरत अवजिय लगत न मोर।।35।।

हो राजवनरे गजब तेरा सेहरा।।
जबसे लखोवना नेंक नजर भर तबसे लगा मेरा नेहरा ।।

ठगीसी रही कछू कह न सकत हों विसरगई सुध गेहरा।।
वृषभानकुँवर छविदेख मगनभई वारो तन मन देहरा।।36।।

सियावर बनरा आली सलोना।।
माथे मौर खौर चन्दनकी टिवकी लाल ललिक मनलोना।।
कजरारे रतनारे लोचन तिर्छी नजरलगें मानो टोना ।।
स्वामिनि जनकनंदनी के संग अली वृषभानकुँवर को गोना।।37।।

हो राजवनरे लगा तुमसे नेहरा।।
जबसे लखी माधुरीमूरत नहिं सुहात पितु गेहरा ।।
होन न देउंगी ओट पलक छिन करों गरे को गजरा।।
लोक लाज कुलकान विहाई चलहीं तुमारे सातरा।।
वृषभानकुँवर की येही बिनती बरसावहु रस मेहरा।।38।।

।। गजल।।

रघुवंश राजवनरा गजपर सवार आता।।
जनु नीलवर सुमेर सिखिर भानु उआआता।।
मिथलेश नगर नारी नर मोदको बडाता।।
रनिवास सिंधु अलियन द्रग कंजको फुलाता।।
रतनोंके बंगलेमें रसमाधुरी दिखाता।।
झुकते जुहार लेते छवि अमीको पिलाता।।
हँस अनुजतन विलोके सखी वचन को सुनाता।।
त्रैलोक बसीकरन मोर चित्तको चुराता।।
अब तो हृदय विचारी करहों इन्हींसों यारी।।
वृषभानकुँवर स्वामिनी सिया नेहको निवाता।।39।।

।। बना।।

चलो सखी देखिये बनरा छबीला।।

हँसहेरके चित्त चोरत ऐसा ठगीला।।
सुरँग मंडील सिरबाँधे अजवका, लसें सिरपेंचपे कलगी झुकीला।।
कंजद्रग नयनखंजनको लजाता।।
विलोकन नागरी दिलको फंसीला।
दसन दुत चन्द्र किरनोंकी प्रभासा, मंद मुसक्यान वारों लख सवीला।।
अली वृषभान कहें दिलवर के ऊपर।।
भई कुरवान लख प्यारी नवीला।।40।।

।। गारी।।

कुल दीपक राजकिशोर सदन सरहजके गये।।
रस मंगल मोद अपार सगुन शुभहोत नये।।
नव कंचन कलस समार पांवडे अरघदये।।
रघुवरके चरण पखार सिद्ध करजोर कये।।
सिंहासन चारु मगाय सुभग आसन सुदये।।
नवछावर भूषन बसन तिलक केशरके भये।।
पुन चरणकमल धरसीस विनय बहुभाँति करी।।
ननदेऊ रूप निहार सिद्ध आनंद भरी।।
सिर मंजु मनोहर मौर कोट रवितेज लजे।।
फुंदरी है रतन जराव अधिक शोभा जो सजे।।
मकराक्रत कुंडल कान लरें मुक्ताझलकें।।
झुकनासा हलन बुलाक चितें सव मनललकें।।
भुजवाजू जोसन बीच सुभग सेला जुलसें।।
कर कंचन पोंची रतन जटित चूरा जुकसे।।
गलगोप पदिक मनझाल हार मोतिनके सजें।।
कटकिंकिनी परम सुदेस मधुर सुर अधिक बजे।।
पग नूपुर सुखमासीम चरण जाबकसे भरे।।
लख मोजा अधिक अनूप लाल कोरन में जरे।।
अँग जामा लाल सुरंग कमर पटका जुकसे।।
बँधी दोउ कूल बिसाल बीच पनरथ सिरजे।।

जाकी जगमग जोति निहार कोट दामिन लरजें।।
सब वैस किशोर सुदेस देख कामिन ललकें।।
रंगभीनें रसिक चित चोर निरख थाकी पलकें।।
हस हेर ठगी नृपनार मंत्र जादू सो कियें।।
इन लोचन बीच बसाव रूप रस सिंधु पियें।।
पकवान अनेक प्रकार थार सोनेके भरे।।
कर कमल लिये वरनार ललकि प्रभु आगे धरे।।
कमला जल अधिक पुनीत सुभग झारी सुभरी।।
भोजन करिये महाराज सिद्ध करबीजन धरी।।
जेवन लागे नृपलाल मधुर रसि बात कही।।
तुम बाप सुनत बहुजात बात मिथ्याके सही।।
पितु बहुत बखानत जगत अग्नि नृप शृंग मुनी।।
जननी हैं तुमरी तीन दया निधि अधिक सुनी।।
बड़ी जननी दान क्रत शू देहतन अधिक धनी।।
मजली जननीकी बात लाल वहुभांति भनी।।
जिन मधुरे वचन वखान ठगे तपराज मुनी।।
लघुमात सकल गुन खान रूप बहुवेसवनी।।
सब मात मदनकी पीर विकल बहुभांति घनी।।
तिन को इहि देश पठाय रमें मिथलेशधनी।।
सांता बहिनी नव वैंसदेख ऋष शृंगभगे।।
निमराज कुंवरकौ देव सुजस भुय माहजगे।।
रघुनंदन आनद कंद चंद मुखदेख लजे।।
सब अवधपुरी की लली गलिन पति भाव भजे।।
भुय भूषन भरत रसाल लाल कुल सुजस सनी।।
संतान करन दमवंत रमी संग वसिंष्ठ मुनी।।
तुमें साद बखानत जगत भक्तरेखा पूरी।।
मुख मोर हँसत चित चोर पडे जादू मूरी।।
तुम लाख गुनन के भरे लखन नृपलाल सुनो।।
जब लाखन पितुको अंस लखन तुम नाम गुनो।।

तुय एक पिताके लाल दुरँग रँग कैसे भये।।
नृप चतुर चोथपन जान मुननसे मांगलये।।
रिपुसूदन भूषन जगत सूर गिनतीमें बहनेउकरे
दुजसिंह सीस
तिन सींग गडे रघुवंशिनको यश अमित नमित हम कहावरनें।।
मुख छोट बात बहु मोट शरम जगकी भरने।।
रघुवंशीकुँवर अनेक बात रघुकुल को सची।।
नव नागर भेषवनाय जाय भृगुपतिसे बची।।
तुम पुज्य हमारे बड़े खोज अवका करने।।
सनवंध बड़ो बलवान सदा तुमसे नवने।।
रूखजान आन जल कलश मुदित अचवन कीनें।।
रूमाल करन मुखपोंछ हसत रसरँग भीनें।।
रुचि बीरा अतर मंगाय विहस सरहजनेंदये।।
अति मुदित भयो रनवास हांस आनद लये।।
हँसि सिद्ध कुँवर मुखमोर लालकर कंज गये।।
नृपनंदन प्राण अधार जगत सुखदेन भये।।
बिन दरशन कल जियनाह कहो हम केसे रहैं।।
दिन दूनी विरह की पीर लाल हम केसे सहैं।।
प्यारे नेह विसरि जिनजाउ मात गृह जाओ भले।।
ननदेउ जीवन प्राण प्रीतकर आप चले।।
वरदीजे लाल सुजान चरण हिय माह बसें।।41।।

नित दुलहा रूप अनूप व्याह उतसाह रसे।।
कहि चरण गहे अकुलाइ गिरापद कमल भरी।।
यह नातो नेह निवाह बहुर कब दरश करो।।
सुन सरहज विरहके वेंन लाल अंग शिथिल भय।।
नहि व्याकुल होवो सुजान सदां तुम पास रहें।।
अस सुन रघुवरके वैंन चेंन मन अधिक भये।।
बहु मिलन दरश की आश प्रगट भये नेह नये।।

पुनः भरत चरण धरशीस विनय बहुभांति करी।।
कब मिल हैं राजकिशोर अधिक रसनेह भरी।।
तव लखनलालके चरण धरन गह शीस रई।।
भई विरह विथा भरपूर शिथल सव अंग भई।।
रस खान सत्रुहन जान कमल पदगह सुकही।।
सब भ्राता नेह निबायो बहुरपुर आयो सही।।
बहुबार धरन धरशीस कमलकर जोर खडी।।
रघुनंदन दीनदयाल कृपा अति कीन बडी।।
रससिंधु राम सुख कंद पान सरहजके गहो।।
समझाई राजकुमार प्रेमजल नेन रहो।।
विनदेखे भामिन तुमहि कठिन निसिदिन बीते।।
मिल बिछुरनकी बहुपीन मीत अपने जीते।।
वरमागौ आज सुदेउं विकल जिन होउ धनी।।
तुम सदन अमृत सुख लये प्राण से अधिक मनी।।
रघुवीर सबनकर बोध सदन सासोके गये।।
लख सास चन्द्र मुख हरष बडे आनंद लये।।
अव विदा होने के काज भूप पठये हमको।।
जो दीजे आयुश मात तो जाउं अवधपुरको।।
अस सुन महारानी वेंन सियाजू वोललई।।
वृषभानअली दई संग सिया मन मुदित भई।।42।।

श्री वृषभानकुँवर क्रत वंदन पोंचै बाबूजी।।
हमरे पद सब वनये लालजी अपनी बहिन सिखावो जी।।
वेनाचें तुम तान समारौ तुमरे दाउ ताल बजावेंजी।।
जब सांता ताथेई थेई कह नाचें तव तुम लेहु बलाई जी।।
अपने कुलकी रीति न छाडो निजकरनाम चलाये जी।।
ऋषि संग हूहैं तपसी कहाहैं कुछ शोभा नहि पाओ जी।।
जो अपनों यशसुनों लाल जी मनमानों सुख पाओ जी।।
कृपाकरो बाबूजी हमपर सांता लक्ष्मीनिधि दीजे जी ।।

जो कछू चूक परी होय हमसे सोसुधार तुम लीजे जी।।
अब कछू सोचकरौ जिन लालन एकवन दो जीजाजी।।
तुम जो कहत भोजन नहि भावत गारी विलख न कीजेजी।।
प्रभू प्रीतिकी रीति छवीली राखो हियमें गोईजी ।।
सिय सहचरि की अर्ज मानिये प्रिये रहै बड़ाई जी।।43।।

सांता विहिन तुमारी लालजी रघुनंदन की नारी जू।।
तुमसे बची ऋषिनने पाई ऋषि नारी वे कहांईजू।।
तुमरी बहनी सौत हमारी एक बड़ी यह हांसी जू ।।
हम मांगीतो अपने विरनको तुम अपने ग्रह राखी जू।।
हम जानतते बातें झूंठी अब हम सांची पाई जू ।।
जो जैसी होय सुनहु लालजी सो तैसी सव माने जू।।
तुमरे कुल विवहार अनोखी राजन ऋषिन विहाईजू।।
हमरे कुल असरीत लालजी राजन राज सगाईजू ।।
अलीवृषभानकुँवर क्रत वंदन सदा चरण सिवकाई जू।।44।।

एक गारी सुनो महाराज तो रसिभरी गावत हैं हम
सुनी महामहिपाल सो ऋषि बुलवावत हैं।।
महलनमें देत निवास सुसुत उपजावत हैं।।
महारानी बड़ी रसिखान सो अधिक रमावत हैं।।
जो जांचत हैं मुनराज सुमनसा पुजावत हैं।।
वहिनी हैं गुनआगार सो सब बोरावत हैं।।
तुम चारों राजकुमार ललक गर लावत हैं।।
नवजोवन रूप सुवैस अदा दिखलावत हैं।।
जाको नववैस निहार सो कोक पढावत हैं।।
यह जान सकल भोपाल न कोउ अपनावति हैं
जब जानी अवधनरेश सो कुलहिं लजावति हैं।।
भोरे ऋष लये बुलाय सो व्याहु करावतिहैं।।
नहिं नार पुरुषको ज्ञान सो रसिक कहावति हैं।।

तासें मन रहत उदास न कोउ लखपावति हैं।।
दुख हरन सकल सुख दैन सु तुमें जनावति हैं।।
उन के हिय मदनकी परि सो कैसे बुझावति हैं।।
हमरे निमराज कुमारही मनमें चाहत हैं।।
महारानि सिद्धकुमारी सुमृदु मुसक्यावति हैं।।
सुनिये नृप राजकोमार हमें मन भावत है।।
एवज हमरेके काज सु तुमसे चाहत हैं यह रहसहांस
अति गुप्त न कोविद जानत हैं।।
वृषभान अली श्री कृपा नकोउ जन जानत हैं।।45।।

तुमसे पूंछत एकवात लाल सकुचावत हैं।।
प्यारे पितु करतूत की साख सो सब जग जानत है।।
हम कहत बड़नकी बात अधिक शरमावत हैं।।
मइया तुमारी रसिखान सो कोविद गावत हैं।।
अति कामकला में प्रवीण केल मनभावत हैं ।।
पितु निवल जान मनमाहि बहुत दुख पावत हैं।।
बलवान पुरुष को खोज बहुत करवावत हैं।।
ऋषराज बड़े तपसाल बहुत मन भावत हैं।।
मुन साधिके आशिरवाद से सुत उपजावत हैं।।
अबसांचकहो नृपलाल कवनपितु मानत हैं।।
इक भारी अचंभेकी बात सुनो समुझावत हैं।।
पितु तीन सुनें सुत चार सो कीके कहावत हैं।।
महाराजही के गुणरूप आपमें आवत हैं ।।
ऋषधर्म ज्ञानगुण शील भरत अनुमानत हैं।।
बहुतेज अग्नि से प्रगट लषन अनुमानत हैं।।
रिपुसूदनलाल के तात सो कांके वषानतहैं।।
निमराज शील गुणवांन इन्हें पितु भावत हैं।।
इनके पितु हैं मिथलेश सो सब सुखपावत हैं।।
नृपलाल आप रसराज बडे हमजानत हैं ।।

नवकोकसार की कला भली विधिजानत हैं।।
आसन चौसटकीगुरू नारि ऋषि जानति हैं।।
वेकामकला में प्रवीण श्रीसांता कहावति हैं।।
तुमरी वहिनी की चाह नृपतिसत राखत है।।
अवदीजे लाल पठाय सो बड़ अवलाषतहैं।।
इम सुन सिद्धीजू के वैन कुँवर मन मुदित भये।।
प्यारी हम तुमरेग्रह आय सोरसिसुख अमित लये।।
यह हांसविलासहि सदा जासु मन चाहत हैं।।
सो जानी हो सिया जू की कृपा महल सुखपावत हैं।।
भनत अली वृषभांन जुगल यश गावति हैं ।।
निज खास महलकी टहल चरण गह मागतहैं।।46।।

वनाजी कैसे नगर जनकपुर आये।।
कौसिल्याजी मातुन ल्याये वनाजो।।
पितु करतूत की साख लालजी खीर खाय सुत जाये।।
निज भगनी तपसन को दीनी सुयश तिहूँपुर छाये।।
लक्ष्मीनिधको बहिन दीजिये सुखपावहु मनभाये ।।
कुलके जोग काज नहिं कीनो नाहक दोष लगाये।।
नागर अली अवध की सवरी निजपति नहिं मनभाये।।
देउ पठाय जनक जू की नगरी पूरन काम सुहाये।।
विंग वचन सुन राजकुँवर सव ताकत मृदु मुसक्याये।।
हासविलास महल में माचौ कहत कौन परगाये।।
देखत वनत कहो किम सजनी अद्भुतसख सरगाये।।
श्रीवृषभान कुँवर परपूरण नितनव होत वधाये।।47।।

रघुवंशी राज कुंमार हमारी इक गारी सुनो।।
तुमरी वहनी के गुण अमित कहत हम हृदय गुनो।।
वाके नैना आम कैसी फांक विकट कजरारे हैं।।
हँस हेरन चितकेचोर मदन मतवारे हैं।।

वांके नव जोवन अनुरूप विल्व फल भारे हैं ।।
जरकस कंचुकी के वीचगैद जुग धारे हैं।।
वांकी त्रिवली रेखा उदर नाभ मनहारी है।।
जुग जंघा कदलि समान चालगज न्यारी हैं।।
सज विश्वा कैसो सा पुरष मगजोय रही ।।
नहिं पायो कोउ वलवान समझ चित सोच रही।।
नवजोवन लषन लाल देखि पंलग पर आय गई।।
जियजानी कुलटानार गरेसे लाइ लई।।48।।

अध फुटकर पदं

छुयो न मोरी वैयाहो प्रीतमप्यारे थोरे दिननकी वाल।।
जोतुम लाल करो वरजोरी सैयापरो तोरी पैया।।
हेरन में मेरो जिय डरपे केसे आऊँ सिजरिया।।
हावभाव नहिं मोह सुहावत धरकत मेरी छतियां।।
अलीवृषभानकुँवर लख भोरी नहिं जानी छल घतिया।।49।।

।। होरी।।

वांकी छेल खड़ो मग संग अनुज।।
मिल सखन गवावति गारी वक वक।।
जिहि डरसे निकसी नहिं धरसे मेरी गई ये लाज गुरजन
की सक सक।।
अति जिय भोरी नवल किशोरी होन लगी छतियाँ धक धक।।
नागर निकट आय कर पकरत घूंघट खोलत हैं झुक झुक ।।
वडखिलवार लाल होरीको मैं जो रहत जीमें जक जक ।।
करहो उपाय चलो न सिमिट अव जाऊ चतुरईसे इक इक।।
श्रीवृषभानकुँवर पिया पकरे देखत सव रहिगई जक जक।।50।।

देखो मोरीरोकत है पनघटकी गैल रघुराज लाल मतवारो छैल।।

होंसरजू जल भरन जातती अनुज सखा लिये करत फैल।।
तनक न कान करत गुरजन की अंक भरत भुज कंठ मेल ।।
लाज भरी कछू कहनसकत हों हाहा करत पिया भयोहै झेल।।
वृषभानकुँवर की स्वामिन सियाजू इन वातन पिय दईहै मेल।।51।।

छैल द्रग मूठ गुलाल न डारो।।
तेरी वारवार वलिहारों।।
कसकत हैं लो इन कोइन में नेक तो कसक विचारौ खिलारी।।
मानो विनय जरा राखो मिहिर।।
रामप्रिया पिया होरी खेलन में अनरस करौ ना अवधविहारी आज
समारौ रस की लहर।।52।।

रसिया अवधविहारी हमारी चूनर रँगडारी।।
बहुतक करी विनय हम तुमसों हाहा कर पचहारी।।
हटकत मोरी वैंया मरोरी सिर गगरी फोडारी।।
हसत कर देदेतारी।।
दरक गई मुकताघलि सिगरी लाल भई जरतारी।।
वैसई लोग चवाव करतहैं देखत देहैं गारी।।
करी नाहक तुमख्वारी।।
मग रोकत नित करत ढिटोली कीनी कौन गुनारी।।
वृषभानकुँवर के आवधश्यामरे टोरत लाज हमारी।।
प्रीतिकी रीति न्यारी।।53।।

मुहसे करत वरजोरी छैल नवनागररे।।
झपट आय घूँघट पट खोलत आन मलत मुखरोरीरे।।
हो हो कह होरी मुख गावत पकर नचावत गोरीरे।।
रामप्रिया लख जुगल माधुरी या होरी पर वारीरे।।54।।

भयौ अनौखौ छैल खिलारी हमारी लाल चूनर रंगडारी।।
विनय न मानत रँगमें भिजोवत येसौ निपट अनारी।।

मलत गुलाल कपोलन सजनी याहोरीतै हारी ।।
घूंघट खोल करत रसघतिया पुन वोलत मुख गारी।।
रामप्रिया लालन मदमाती नितहि मचावत रारी।।55।।

येसी होरी कोउ खेलतखेल खिलारीरे।।
तुम तो राजकुँवर गरभीले है तुमारी गति न्यारीरे।।
सहज हमें तुम कपटचतुर गति रोकत वाट हमारीरे।।
करपायो होरी को अवर वची न एकहि नारीरे ।।
कौशलेश अवधेश पिया वृषभांनकुँवर हितकारीरे।।56।।

आली सनमुख पिचक चलावे अवध पिया दरशन को तरसावे।।
जुलफ अतर अनुराग चुवत जनु सीस ताज मनभावे।।
ललित कपोल गुलाल छीटपट केशर कुसुम सुहावे।।
रंग आकर उर माझ घालि तकि करकटाक्ष मुसक्यावे।।
चोली रंग भिजादेताली वहुर गुलाल उडावे ।।
वृषभानकुँवर फगुआ की अवसर न सुख कछू कहआवे।।57।।

पिया खेलों मैं तेरे संग होरी।।
अहो होरी होरी वरजोरी।।
होरी को दिन भागते पायौ खेलकरों भर पूरी।।
सखन सहित केसर में वोरों धूम मचाउं करजोरी।।
अलीवृषभानकुँवर पिया रसिक सिरोमनि आज बनाउं तुमें गोरी।।58।।

रघुवंशन में वीरआज तुमें होरी खिलाउरे।।
सिर चुनरी चोली देवेंदी कट लँहगा पहराउरे।।
भुजवाजू चूरी कर पोंची जुवतिन भाव सिखाउंरे।।
पग पाइल विछिया देजावक छम छम नाच नचाउरे।।
नारि सिंगार बहुत अद्भुत कर अनुजन मन ललकाऊंरे।।
इतनों जोनकरों मन भावन सिया सहचरी न कहाउंरे।।

अलीवृषभानकुँवर कहि पियसो विजेकोपत्र लिखाऊंरे।।59।।

तुम को आज होरी खिलाऊं।।
आज तुमे घरके रघुनंदन मुखभर रंग लगाऊं।।
छीनलेहुँ करते पिचकारी तव सिय सखी कहाऊं।।
लैजै हों मिथलेश लली ढिग सखी कर पाय पराऊं
चूक सव माफ कराऊं।।
वृषभानकुँवर हम लखन कहत है सव सखि यन
धरलाऊं भली विधि नाच नचाऊं।।
छीनलेहु सवके पट भूषन रंगनमें अनुवाऊं आज सियवर
सिखपाऊं।।60।।

नहिं खेलिये राजकुमार अनोखी होरी लला।।
छलवलकर जुवतिन ढिग आवत मेरेमुखसे मलत गुलाल
करीमनभाई लला।।
झगर झगरके पिचक चलावत गलटूटी मोतिनकीमाल अनोखी
होरी लला।।
आपनखेलत अनुजस सिरझावत अजव मचावत ख्याल नहि
खेलिये राजकुमार अनोखी होरी लला।।
अलीवृषभानकुँवर रसनागर चितवन करत निहाल अनोखी
होरी लला।।61।।

सजौ किन नवनव भूषन अंग।
रघुवंशीसुकुमार छवीले प्रान प्रियाके संग।
आये सुन खेलन होरी ढप वजत वीन मुहचंग हँस कहि प्रान
वल्लभा सजनी लियो साज सजिरंग।
चली तडित दुत मथन कलेवर वोरी मनहु अनंग।
केल कंज आगे वितान तर मिल ललना इकसंग।
घालत उते नवल छेलनपर मूठ गुलाल उमंग।

वृषभान कुँवरनें झपट पकर लियो सानी पियानिजरंग।।62।।

चुवन लागौ चोलिन चुनरी रंग।
छाई कुमकुम कलित कपोल लटवेसर इकसंग।
परसन भाल चंद्रकन कवरी लपटानी नवअंग।
अवलोकत मुसक्यात प्रानपति घालत मूठ दुचंग।
अनयारे द्रग तीर लाडले घूंघट खोल निखंग।
मोहौं पिये विहवल रसबस कर पिचकारी गति भंग।
होहो कह मिलगह युवतिनमुख द्रग अंजन दियो उमंग।
वृषभानकुँवर केसहि के हारे तुम स्वामिनि सँगअंग।।63।।

होरी खेलत प्यारी रसरंग भरी।
उते पिया संग सखा नवनागर इते सिया संग नवगोरी।
सनमुख पिचक चलावत नागर अलि समाज सव लाल करी।
केशर रंग वरसत चहुँदिशतें लखि नहिं परत कौन गोरी।
वृषभानकुँवर कह चतुर नवल दोउ देखत ही मत भई भोरी।।64।।

आज तुमें होरी खिलाउंरे जाविक नेमरे।
नागर नवल किशोर ख्याल तुम कोने सिखायौरे।
झटकन में चौली कस टूटे पकर केसररँग वोरीरे।
कर मसकत कसकत नहिं प्यारी नृपत कुँवर चिर चोंरीरे।
एसी अनोखी होरी मचावत कसी परी यह वानरे।
लालन विहँस कहत प्यारी से होरी में क्या कानरे।
अलीवृषभानकुँवर याछविपर बारबार वलिहारिरे है।।65।।

सखी देखोरी मतवारो छैल यह नृपतकिशोर मोसे करत फैल।
येसो ढीठ लाल दसरथ को रोकत है पनघट की गैल।
सुनियत हते देखे नहिं आली रूप सहज तुमरो उरझैल।
वृषभानकुँवर येही वर मागत जुगल चंद्र लख रहहिं महैल।।66।।

आली एसौ ढीठ यह नृपत किशोर मोसे खेलत वरजोरी होरी।
एसौ री लंगर नहिं मानेकही मोही आनगही वहियां पकरी मोरी
देखतही मति भई भोरी।
अवीर गुलाल की मूठ चलावत घालत पिचक तक तकि री मोसे
वोलत कह कह गोरी।
अलीवृषभानकुँवर को फगुआ दीजेरसिक भक्त जोरी रहे अटल
सदा यह जोरी।।67।।

अब खेलों न रघुराज लाल संग होरी।
अपनी ओर को दुर दुर भागत पकर लेत वहियां मोरी।।
जे नये खेल सीखे कहँ लालन छल कर रँग चूनर वोरी।
केसर कुमकुम रँग पिचकन भर अवीर गुलालन भर झोरी।
वृषभानकुँवर मन भावन फगुआ निसदिन छवि निरखहु जोरी।।68।।

एसी होरीमें करे वरजोरी पकर रँग वोरी लाल।
मुख मल रोरी वइयांमरोरी चोलीके वँद छोरी लाज दई टोरी भला।
मिथिला गोरी राज किशोरी होरी खेले कोरी करें झक झोरी लला।
ओचक आवें पकर नचावें हँस अँखिया मटकावें कर चितचोरी लला।
रसनिधि प्यारो राजदुलारो वृषभानकुँवर वलिहारो सिया सँग
कीनी सला।।69।।

देखौ मेरी रोकत है पनघट की गैल।
रघुराजलाल मतवारो छैल।
हो सरजू जल भरन जातती अनुज सखा लिये करत फैल।
तनक न कान करत गुरजनकी अंक भरत भुज कंठ मेल ।
लाज भरी कुछ कह न सकत हों हाहा कर पिया भयो हैं झेल।
वृषभानकुँवर की स्वामिन सियाजू इन वातन पिया दई है मेल।।70।।

रघुवर अवधविहारी हमारी चुनरी रंग डारी।
भर पिचकारी मोरे सनमुख मारी भीजगई चोली सारी।
हाहा खाय पाय पर लालन बहुत विनय कर हारी।
अब मिस कौन लेहुँ गुरजन से देखत देहैं गारी ।
जब देखौ तव वन प्रमोद मे आन मचावत रारी ।
वृषभानकुँवर से अवध श्यामरे नाचल हैं ऐसी यारी।।71।।

होरी के मदमाते आये कोटन देखत कामलजाये।
अनुज सखा बहु संग लिये हैं गावत गारी लगत सुहाये।
घूँघट खोलत मृदु सुक्यावत गोल कपोल गुलाल लगाये।
धूम मचावत रार बड़ावत अजब रँगीले ख्याल दिखाये ।
रामप्रिया लख जुगल माधुरी वारवार हिय नयन सिराये।।72।।

अति लंगर खिल वार अवध पिया।
मोसे डगर चलत करे रार अवध प्रिया।
सास सुनेगी रार करेंगी ननद देय नित गार।
पुरजन लखलख घैर करत हैं रसनिधि कोनी ख्वार।।73।।

अनोखो खिलवार डारे अबीर मेरी आँखन में।
रँग केसर ऊपरतै वोले आम अचानक घूँघट खोले करमीजत चोली दई फार।
हो हो करत आज होरी है पकरत हँसत नवलगोरी है नृतसुत भयों वडो रिझवार।
गावत गारी रार मचावे चलत चाल वह ख्याल वतावे लूटत मन धन है वट वार।
ख्वारी करतकहों नहिं मानत जाको मिथलापुरको जानत रामप्रिया रघुनंदन यार।।74।।

होरी में वरजोरी करै एसी नवलानार।
धीरे आवै नजर बचावै है असंग नहिं नेक डरावै मुखसोंगावै
मधुरी गार।
कुमकुम कीच कपोल लगावै कोउ नहिं वहियाँ गहिपावै है लंगर
वाकी खिलवार।
सब सखिअनते आगे आवैं सैन चलाइ मधुर मुसक्यावै खेलन
वाल वडी होसयार।
छलवल कर प्रीतम ढिग आवै रामप्रियादै सेंनबुलावै पकर लखे
नुपसुत रिझवार।।75।।

ऐसी रँगीली नार परस्पर खेलत होरी।
राजिवनैंन विसाल चलन गजिगत गरवीली छलबल कर वरजोर
लला मुख मलदई रोरी।
प्रिया पीतांवर छोर गहौ तब नवलकिशोरी जायो लला कहाँ भाग
वनावहुँ तुमको गोरी।
प्रीतम परम सुजान सेंनमें कहैं कर जोरी।
जो मागौ सो लेहु उहाँ न करौ वरजोरी।
रामप्रिया वल जाय सदा यह जोवै जोरी।।76।।

होरी में वरजोरी चलाई।
मेरे नैनन गुलाल रमाई रावरे खेलन की यह रीति न प्यारे रसमें
अनरस अनख बडाई।
कबहुँ दावपरेगौ हमरो अनुज सहित पिया लेहों नचाई ।
रामप्रिया पिया तिया वनाहों सिया ढिग फगुआ लेहों मगाई।।77।।

अब काकी चलै वरजोरी पिया कहौ खेलनमें।
बहुत दिनन रसमाते डोले वोले अटपटे वैन परे आज केलनमें।
लेहों छीन करते पिचकारी सारी घूँघट काढ़ चलौ त्रिय गोलन में।
विनय पत्र लिखवाय प्रिया से रामप्रिया वल जाय ललाजू के वोलन में।।78।।

आवो छेल तुमें होरी खिलावें मनभावैं सोई लाल करावें।
सखी सिरमौर गहे मनभावन केशर रंग वरसावें।
अबीर गुलाल कपोलन मीजों नार सिंगार बनावें काम कलकेल सिखावें।
कंज नैन अंजन से आंजो वेंदी भाल लगावें।
कस कंचुकी चूनर सिर घूँघट जावक पगन रमावें ललीजू के पाय परावें।
कुसुम माल सो बाँध रसिकनिध सियाजू से हाथ जुरावें।
रामप्रिया जब छोरें छवीले तव प्यारी फुरमावें तुमें द्रग कैदकरावें।।79।।

मगरोकत नित आयरी भयो अनोखो खिलारी।
अनुज सखा लिये धूममचावत चूनर पकरत धायरी।
बरवस गहत कहत होरी है मुख सों गावत गाररी।
झकझोरत वोरत रंगकेशर चीनत मिथला नाररी।
अबीर गुलाल कपोलन मीजत किहि विधि होय निवायरी।
गुरजन लाज छैल अरवीलौ कासों कहिये जायरी।
मानत नहिं विनय काहूविधि करत आय मन मायरी।
फागुन लगत करत नित ऊधम वनतन को रिझवाररी।
रामप्रिया श्रीजानकीजीवन मोहीतें बडा वतरारररी।।80।।

लाल नई नौखी होरी खिलाई।
मोह पकर करत वरजोरी नये खिलवार अनोखौ नृपसुत अवनकरौ लगुराई।
जान देउ बडरार न कीजे अनरस में रसजाई।
कर पकरत झकझोरत मग में मानों मोल विसाई।
जाऔ चलो नहिं फैल दिखाऔ इहाँ न चले ठकुराई।
सुन रसवचन गूढव नतनके जानी प्रीति सवाई ।
रामप्रिया श्रीजानकी जीवन लीनी कंठ लगाई।।81।।

आज अवधपुर होरी मची है।
जनकसुता अवधेश छेलवर अलिंन बृंद नवरंग जची है।
अबीर गुलाल धुंध अति वाड़ी ढोल मृदंग अवाज खची है।
कोई सखी पकर कपोलन मीजत कुंमकुंम केशर धूर रची है।
अलीवृषभानकुँवर छवि निरखत प्रियप्रियतम के प्रेमनची है।।82।।

होरी या रंग धूम मचाऊँ।
जोपै रघुनंदन पाऊँ ।
आवत ही कसके भृकुटी सर केवल ताह हसाऊँ।
फेर उमंग सुरंग भरी वहुअंग अनंग लजाऊँ निहार के नैन सिराऊँ।
छीन सवै ढप चंग मृदंग सुसंग सखान बनाऊँ।
छैकी भली विधि सो जुअली करनाच नचाऊँ।
लैवरवंदन चंदन चूर कपूर कीधूर उड़ाऊँ।
धूधरमें घसलाल गुलाल के धाय धमार मचाऊँ तहाँ तव तैसऊ गाऊँ।
खंजन से द्रग अंजन आज निरंजन ज़ाम बहाऊँ।
लेकर मंजु सुरंग गुलालन लाल कपोल लगाऊँ दुहु करताल बजाऊँ।
हो इतसो अलबेली बनी खिलवार न खेल खिलाऊँ।
मेरी रीझो रिझवारन जो खिलवार कहाऊँ नातो फिर खेलन आऊँ।
अली वृषभान विलासन सो हियहाँस हुलास सजाऊँ।
निरहु निसंक निसंकन पाई मयंक मुखी वरपाऊँ सदावलहारिहु जाऊँ।।83।।

रसमाते लालन होरी के अनुराग भरे नवगोरीके।
अंजन नेन गुलाल रमाये बाँके लगे वान द्रग गोरी के।
झूलत चलत नेह मद छाके आवत महल किशोरीके।
रामप्रिया विचित्र छवि देखत नागर खेल खिलारीके।।84।।

भयो छैल खिलारी होरीकौ येहो नवनागर रस चोरीको।
विपन प्रिमोद सखन संग विहरत मातग रोकत गौरीको।

हो हो कर धावत भुज पकरत वंदतरकावत चोलीकौ ।
रामप्रिया अन रीति चलावत खेल करत वरजोरीकौ।।85।।

मग रोकत वाल खड़ो आली संग सखन वांधेपाली।
लागत फाग करत नित ऊधम गावत गारी देतारी।
विनय करत येको नहिं मानत मूठ गुलाल नेनन घाली।
रामप्रिया किहि भांत निवहिये राजकुमार वडो जाली।।86।।

होरी खेलत आज नृपत प्यारो सुघर खिलारी मतवारौ।
झूमत झुकत चलत मग सजनी ओड़े पीतवसन कारौ।
अवीर गुलाल उड़ावत आवत रंग भर पिचक कुचन मारौ।
रामप्रिया प्रियाभुज गह लीनो सखन संग से कर न्यारौ।।87।

देखो छैल छवीलो चलो आवै बड़ी बड़ी अखियां भटकावें।
दूसर गैल चलौ अव सजनी राजकुंवर नहिं लखपावें।
नहिं तो छेड लेह आगे से रस वतियां कह अटकावें।
रामप्रिया होरी अवसर मानत नहिं रंग लेधावें।।88।।

जोमें अवध छैल कहुँ पाऊं मनके नाच नचाऊं।
सीसफल वेंदी सिर देहों अंजन नेन लगाऊं।
अवीर गुलाल लगे हों मुखसों गुलचा गालन लाऊं।
कंचक लहगा सुरंग चूनरी अपनें कर पहराऊं।
ऐसी नार बनाऊं लाल को रती सची निदराऊं।
रामप्रिया श्रीजू स्वामिनि के विजलनिसान बजाऊं।।89।।

पिचकारन रंगझर लावै जो मनआवै सोई गावै।
उड़त गुलाल अवीर अरगजा ढप मोचंग वजावै।
बड़े भाग होरी दिन आये लेले हृदय लगावै।
रामप्रिया सहचरी प्रमुदित मन चरन कमल चितलावै।।90।।

देखो नवल खिलारी होरी कौ प्रीतम राजकिशोरी कौ।
वलहारी यह रूप माधुरी अलगन चंद्र चकोरीकौ।
हाथ गुलाल कनक पिचकारी हँस चित चोरत गोरीकौ।
कामकरोर कोट लख वारों किहिं पट तरये जोरी को।
रामप्रिया ऐसो रसनागर खेल करै वरजोरी कौ।।91।।

।। लेद।।

जिन चालो मूठ गुलाल अवध पिय नैननमें भरजाइगी।
अरे हांहो अवध पिया देखने दो मुख चंद्र कोजासों तन की तपन बुझायगी।
अरे हांहो अवध पिया अधरसुधा रस दीजिये सब कहहों मो मन भायगी।
अरे हां हो विनय सुनो रामप्रिया फगुआ चहत निज महल टहल को पाऊंगी।।92।।

तुम कैसी करत अनरीत रसीले मगरोकरत झझकोरके।
मोरे प्यारे अवध पिया झझकोरी वरजोरी हैं।
जामें केसैं रहे रस रीत।
बलहारी छैल पर नीत प्रीति जानत सदा श्रीरामप्रिया के मीत।।93।।

तुम स्याम सलौने छैल हमारी लाल चूनर मतिवोरियौ।
अरे हां हो स्यामलिया जो चूनर रंगडारिहौ तेरीपगिया करौं सरवोर।
अरे हांहो पियरवा रामप्रिया साची कहों मैं देहों रगीली गार।।94।।

मनभावन राजकिशोर सखीरी यार हमारें श्यामरौ।
अरी हाँरी सखीरी सुखसागर जबसें लखौ मोह छिन पल परत न चैन।
अरी हारी सखीरी विरह पीर दिल में उठी कोउ नैनन देउ दिखाय।
अरी हारी सखीरी तो यश मानो बहुत के पिया रामपियहिं मिलजाय सखीरी यार हमारौ।।95।।

छलिया नृप.राजकिशोर सखीरी आय अचानक रोक लियौ।
अरी हारी सखीरी हों सरजू जल जातती अरु संग सोह पनहार।
अरी हारी सखीरी सारी सरस भिजाईयौ अरु मुखसे मलत गुलाल।
अरी हारी सखीरी रामप्रिया कर पकर के हँसि नैंनन सेंन चलाय।।96।।

तुम सियावर राजकिशोर हमारी छैल गैल मति रोकियौ।
अरे हारे अवधपिया झकझोरत दुलरी गिरी मोरी नाजुक वैया।
मरोरौ ना लगरवा।
अरे हाहो अवधपिया रामप्रिया घर जानदे तेरी वारवार वलजाऊँ।।97।।

अरी हाँरी सखीरी चितवन में मन मोलिय रघुराज हमारौ यार।
हों सरजू जल भरन जातती सब संग सोहैं पनहार।
अरी हारी सखीरी धूधर अबीर गुलाल की जहँ तन मन रही
न समार।
केशर रंग पिचकारियाँ कुमकुम खौर लिलार।
वृषभानकुँवर को दीजिये हियरेकौ नेह निहार।।98।।

जिन जइयौ भरन कोउ नीर कुँवर दोउ ठाड़े सरजूतीरपै।
अरी हाँरी सखीरी हाथलिये पिचकारी अरु ओलन भरैं हैं अबीर।
अरी हाँरी ढप मृदंग की घोर सुन बहुवाजत मधुर मजीर ।
वृषभानकुँवर कौ दीजिये श्रीमहारानी जू कौ चीर ।।99।।

डगर में छेडै अकेली जानके रसमातौ नृपतकिशोर।
मैं दधि वेंचन जातती सखी वनप्रमोद की ओर।
अनुज सखा संग में लिये फिर हेरत हमरी ओर।
वृषभानकुँवर कौ हँस मिले पिया मो चितके चितचोर।।100।।

पनघट कौ रोकै घाट भरन को हम न जैबूरे।
अनुज सहित मेरो मारग रोकै हँस हेरै मेरी ओर।

हों वरजो वरजी नहिं मानत राजकुँवर चितचोर।
चुवत रंग चोली चुनरी कौ बाजत ढप घनघोर।
फगुआ लैहों जान न दैहों पीतांवर लेऊँ छोर वृषभानकुँवर रंगभर
पिचकारी पुन पुन करत निहोर।।101।।

तुम कैसी करौ वरजोरी झपट मोरी चोली गही नागर नवललाल
मतवारौ रस सागर चितचोर गही वरजोरी लला।
ऐसीवान कहापरी प्यारे छैकौं अकेली जान करौ मन भावै लला।
,निपट असंक कहौ नहिं मानत भये अनौखो खिलवार देखी
मैंने तेरी कला।
वृषभानकुँवर कुमकुम रंग घोरें अनुज सखा लिये साथ करत हो
भारी हला।।102।।

तुम साची कहौ नृपलाल अवधपिया फेर दरस कब दीजियौ।
अरे हाँ हों रसीले तुम विन पल जुग जायँगे अति विरहा जोर जनाप।
अरेहाँ हो सजनवा वेग संदेशे भेजिये मेरौ जी तुमरे आधीन
रसिक वर वेग दरस मोह दीजिये।
अरेहाँ हो अवधपिया रामप्रिया छविलख छकी मोह घर अँगना
न सुहाय।।103।।

।। फागें।।

भयौ छैल खिलारी होरी कौ येहौ नवनागर रस चौरीकौ।
विपन प्रमोद सखन संग विहरत मग रोकत नव गोरी कौ।
रामप्रिया अनरीति चलावत खेल करत वरजोरी कौ।।104।।

श्यामलिया छैल छबीली कौ।
प्रीतम राजकिशौरी कौ।
सिर पर ताज जुलफ घुँघरारी भालतिलक दियेरोरीकौ।
सखन सहित मग ढाडौ आली करत खेल जोरा जोरीकौ।

रामप्रिया रस रास मचावत भाव करै चितचोरीकौ।।105।।

मग रोकै हमारौ भोरईते आवै।
विपिन प्रमोद कलित कुंजन में रस बरसावत आवै ।
निकसत नहिं निवहत रमनी मग हठि बरबस धरिलावै।
डारत शीस रंग केशर कौ वदन अबीर लगावै ।
घर बहुस्वांग नचत नानाविधि वाज बजावत गावै।
लहि चरु भाग प्रगट जननीकौ यशकुल शील किम पावै।
अलिंगन मद्ध सख बंधुरजुत अति अद्भुत छवि छावैं।
अलीवृषभानकुँवर मेरो मन हरि निज संग रमावै।।106।।

राजकुँवर गरवीलो मोसे खेले अनोखी होरी लाल।
तनक न लाज करत गुरजन की रोके वाट रसीलौ क्रीट मुकुट
मकराक्रत कुण्डल पीतवसन चटकीलौ।
पनघट रोकत रार मचावत पेंड़ेंपरो है नवीलौ।
रामप्रिया हँस–हँस वतरावत मानत नाहिं ठगीलौ ।।107।।

नागर नवल खिलारी मोईकौ भर पिचकारी मारी लाल एसी घाली
कुचन विच लागी भीजगई चोली सारी।
छैकौरी अब जांन न पावें झटकौ पीत पिछौरी लाल।
रामप्रिया एसो रसनागर नृपसुत ढीठ वडौरी।।108।।

।। फाग।।

सुनके अवध लालकी होरी जुरआई सवगोरी।
अवीर गुलाल उडावत गावत केशर रंगमें वोरी।
कंचनकी पिचकारन भरभर मारत जनक किशोरी।
रामप्रिया सहचरी वर मागत चिरजीवैं यह जोरी।।109।।

।। फाग।।

अवध छैल मतवारौ देखौ नयौ भयौ हुरयारौ।
अब इतते कहुँ जान न पावै हूहै नैनन को तारौ।।
गलिन गलिन वहु गारी गावै लैलै नाम हमारौ।
काजर आंज नयन मुख भीड़ौं गालन गुलचा मारों।
इतते पकर सखी उत प्यारी पोखत वैस हमारौ।
रामप्रिया यह नारि भेष लख रमा रती मद वारौं।।110।।

।। फाग।।

जाहोरी खेले सहित अली रघुनंदन और जनक लली।।
इततै केशर रंग वरस रहो उतते मूँठ गुलाल चली।
चोवा चंदन अतर अरगजा दुहूँ ओरते घलाघली।
लपटझपट झटकत तन चूनर करक गई है चंपकली।
रामप्रिया सहचरीकी स्वामिनी कहत दई तुम धूरभली।।111।।

।। फाग।।

छवि विसरत नाहिं विसारौरी।
जबसे पिया रूप निहारौरी सिरपर ताज जुलफ घुँघरारी बड़े बड़े नैंनन वारौरी।
मृदु मुसक्यान लखी सखी जबसे मोचित भयौ मत वारोरी ।
कब देखौं महबूब द्रगनभर अब कछु जतन विचारौरी।
रामप्रिया वलहारी छेलपर तन मन धन सब वारौंरी।।112।।

।। फाग।।

श्यामलिया छैल सलोनारी।
बांकी रस चितवन में टौनारी।
वन प्रमोद में छैकलई मोइ गुरजन की वाको भै नारी।
हौं छल नहिं जानत वयथोरी अबहिं आई गौनारी।
रामप्रिया कंपत जिय भयवस मुखते कड़त न वैनारी।।113।।

।। फाग ।।

तेरे लगन लगीनौं नैंना।
प्यारी सुंदर श्याम सलौनें लाल।
चंचल चपल मीन खंजन से रूप जाल अरूझौंने।
समर शूर संग्राम करन को कामवान से पेंने।
रामप्रिया वलहारी प्रीतम मोजियप्रेम ठनौंनें।।114।।

।। फाग ।।

प्रीति करीती हमनें तुमनें कैसी भूलन ठानी लाल।
वदन और ती कहन और भई रैगई एक कहानी लाल।
प्रेमवंज हम तुमसंग कौनौ नफानेह जियजानी लाल।
कहाँ गई रीति प्रीति पाछेकी अबतो नीत पछानी लाल।
रामप्रिया प्रीतम अपने हो येही भलाई मानी लाल।।115।।

।। फाग ।।

मनमोहन राजकुँवर के देखो नैन विदेह सुताके लाल।
वरनौं जन मन आनंद घरके सीलसिंधु समताके।
नील कंज कजरारे प्यारे प्रीतम प्रेम सुधाके।
रामप्रिया वारी छवि ऊपर लखे भाग वड़ताके।।116।।

।। फाग ।।

इनसे प्रीति करी पछितानी लालन पीर न जानी।
हम जानी ती और निवाहैं कठिन निठुरता ठानी।
जल बिन मीन दीन तलफत है एसी विपत कहानी।
रामप्रिया कँह लगन कूटनी कौन जाल अरूझानी।।117।।

।। फाग ।।

श्यामलिया नैंनन लागौरी।
रतिपति तन मन जागौरी।

जबसें लखी सामरी मूरत विरह ताप दिल दागौरी।
किहिं विधि मिलन होय आलीरी जतन करौ दुख त्यागौंरी।
रामप्रिया को वेग मिलावहु भुजभरं प्रिय अनरागौरी।।118।।

।। फाग।।

खेले कामिन अनुराग भरी करकमलन लिये फूल छरी।
देखौ खेल खिलारिन के ढिंग गावत गारी प्रेम झरी।
नख सिख सुभग सिंगार किये सब देखत रतिमद मान हरौ।
भीजे वसन लगे अंग लिपटन कवरी पीठ भुजंग परी।
रामप्रिया अभ्द्रुत रसि देखत विहँस कही मरजाद टरी।।119।।

।। फाग।।

नहिं तो नेह नदी बह जाना।
माया मोह कूल दोऊ तट विषय जलाशय माना।
दुख सुख कमल प्रफुल्लित जामें मोमन भ्रमर भुलाना।
नौकानाम कृपाकेवट है करिया श्रीगुर ज्ञाना।
रामप्रिया मोह पारलगै हैं महलटहल असथाना।।120।।

।। फाग।।

पिया मन वसरये नेना प्यारी के रसि मतवार सिया गोरीके।
निरखत रहत चेननहिं आवत परे पेंच रस भोरी के।
अंग अनंग भरे दोउ दाव लगे नव जोरी के ।
रामप्रिया लख जुगल माधुरी श्रम जल बुंद कलोलीके।।121।।

।। फाग।।

रसिक सवादी नेना तेरे घूँमत रसमतवारे लाल।
चपल चाल खंजन से सुन्दर भवँर भौंर कजरारे ।
अटके मोद्रग वसकर राखत मदनवान अनयारे।
रामप्रिया नागर प्यारी को राजकुँवर चितचोरै।।122।।

।। फाग ।।

जोमन भजन करत अलिस्यावै भ्रग ज्यों जल को धावै।
परदारा परघनके कारन नाहक रार बड़ावै।
सीता पति जशगान करत नहिं माया मोह फसावैं।
रामप्रिया कह अवसर चूके फिर पाछे पछतावै।।123।।

।। फाग ।।

रसमाते नयन विहारी के।
चंचल चपल खिलारी के।
खंजन मीन कंज छवि लाजत अंजन जुत मतवारेके।
तिरछी तकन भरै रस सागर मती गोता दैन हमारीके।
रामप्रिया वारी छवि ऊपर प्रीतम राजदुलारी के।।124।।

।। फाग ।।

देखौ मनकी अजब कहानी मतसर रहत दिमानी।
सीतापति सनमुख नहिं आवत जहाँ प्रेम रसखानी।
वहुत भाँति धिक्कार देत चित आव नहिं गिलानी।
रामप्रिया करमन वस भूलत सार वस्तु नहिं जानी।।125।।

।। फाग ।।

रतनारे नैंना बड़ेजाली राजकुमार चतुर आली।
चंचल मीन खंज कजरारे मनमथ वान सरस चाली।
झूमन झुकत बड़े मतवारे लख अवलन तिरछी घाली।
रामप्रिया छवि रूप लुभानी नहीं प्रेम हितके पाली।।126।।

।। भैरवी ।।

देखो राजकुँवर रोकै गलियाँ जिन जइयौ नारि भरन पनियाँ।
पनघट रोकत गगर सिर फोरत मृदु मुसक्याय गहत वैयां लगर
ढीठ करै वरजोरी छांड़त नांह करै ररियां।

रामप्रिया एसौ रस नागर औचक आय लगै छतियां।।127।।

।। रसिया।।

रसिया मेरौ छैल अवधवासी।
मृदु मुसक्याय दिखाय वदन छवि चितवन में डारै फाँसी।
खेलत रंग भरें सिय स्वामिन पिचकन झरकर मघरासी।
वृषभानकुँवर कौ फगुआ दीजै महल टहल खिदमत खासी।।128।।

।। रसिया।।

रसिया बिन देखैं मुह कल न परै।
हों सरजू जल भरन जातती मदु मुसक्यायकैं अंक भरै।
राजकुमार लाल दसरथ को हँसहँसिकै रसि वतियाँ करै।।
वृषभानकुँवर मन येही लालसा पदसरोजसैं चित न टरै।।129।।

।। रसिया।।

चिरजीवै होरी को रसिया।
सानदार सह जोर सजीलौ मदन लजीलौ मन वसिया।
अजब नुकीलौ रँग निचुरीलौ पैंचखसन माथेलसिया ।
मुकुर कपोलनपर अलकन छवि छलकन पलकन गति नसिया।
रुचिर रसीले नैंन अनीले अंजन सान मनौ गसिया ।
मंद हँसन दुति चारु चमंकत दामिन जनु मनोज असिया।
झपट लपट झटकन रँग छिरकन अवलन मसलन मुख वसिया।
सिया सुकुमार निहार खेलु मिल वृषभानकुँवर कौ दिल फसिया।।130।।

।। रसिया।।

छाकी छाकीरे छैल मतावारेसें।
कौसिलराज किशोर शामरो नव जोवन पिय प्यारेसें।
कुंडल लोल कपोल अलक छवि हँसिहेरन मतवारेसें।
अलीवृषभानकुँवर मन भावन अवध छैल मौतीवारेसें।।131।।

।। रसिया ।।

होरी खेलत आज नवल रसिया।
पकर मिजावत रंग में गोरी वरबस झपट लगत छतियाँ।
मुख मल रोरी करै झकझोरी ठोड़ी पकर कहै रस वतियां।
वृषभानकुँवर अलि रसिक शिरोमन मानत नाह अजब गतियां।।132।।

।। रसिया ।।

होरी खेलन आज रसिया महल पधारौ।
अबीर गुलाल कनक पिचकारी मृगमद केसर साज।
अनुज सखा एसेकै छैकौं जान न पावैं भाज।
नार सिंगार भाल वैंदीदै द्रग काजरसै माँज।
चूकक्षमा करिये मन भावन तुम मेरे सिरताज।
रामप्रिया सिया स्वामिनजीतें हारें श्रीमहराज।।133।।

।। फाग ।।

आली होरही चोव नगारनकी देखो राजकुँवर के आवनकी।
ओड़ छौड़ कतहूँ नहिं दीसत उड़त धुजा पियरे पटकी।
जो प्यारी आयुस हम पावै भीर भजावैं छैलन की।
रामप्रिया प्रीतम गहल्याउँ राखों शान किशोरी की।।134।।

।। फाग ।।

देखौ रसिया छैला होरी कौ रसिक सवादी गोरी कौ।
केसर नीर सीसतै डारत खेल करत वरजोरी कौ।
रामप्रिया जान न पावैं पकरौं प्रीति पिछौरी कौ।।135।।

।। रसिया ।।

रघुनंदन रसिया आयौरी।
अनुज सखा सब संग लियै हैं सिय महलन धूम मचायौरी ।
उततै पिचक चलावत नागर गजब खेल दिखलायौरी।

सिय अनुसासन पाइ अलीगन मूँठ गुलाल चलायौरी ।
वृषभानकुँवर लखि जुगल माधुरी उर आनंद न समायौरी।।136।।

।। रसिया।।

प्यारे तुम नाहक रार करौ नृपत लाल मेरे पैंडैं न परौं।
खेलत में अति अनख वड़ावत अवध छैल छल बहुत करौ ।
भरि भरि मूँठ गुलाल चलावत नागर नयनन माँझ भरौ छलवत
कर रोकत जुवतिन कौ समुझ नेह जिय माँझ डरौ हार जीत सब
होत परस्पर वृषभानकुँवर कहँ धीर धरौ।।137।।

।। पद।।

यह औसर अनुराग भाग कौ फाग विलास नवीन।
करन जोग हटि नैक हटीली उचित तुमहि दरसीय।
तव मुख शशि मम नैन चकोरन किरन मुदित मलीन।
जहँ तव अंश भाव किंचित तहँ होत मोर चित लीन।
यह मंडल सब रूप रावरौ झुमका को हिय कौन।
हिय हुलास भरि गमन प्रमुदवन करु मोहि प्रमुद अधीन।
अलीवृषभानकुँवर मन वच जुग पदपंकज रस भीन।।138।।

मिलौ इतै श्रीरघुराज किशोर।
करुना करन हरन दुख दूखन विश्वविलोचन चोर।
श्याम तामरस दाम रुचिरि छाव वारौं काम करोर।
सजल जलद अभिराम रुचिर तनु कवहेरौ मेरी ओर।
रामप्रिया मुखचंद्र दरशबिन तरसत नयन चकोर।।139।।

।।अथ संभ्रम मानलीला।।

दोहा–सुर पालक सुत वांमकी सोपत्री अभिराम ।।
करषि चंग प्रभु वांचकैं राखी पास ललाम।।140।।

इक दिन रास विलास में सिया कृपा कछुकीन।।
पाती प्रीतम पासतैं अकसमात गहलीन।।141।।

उक्ति लिखित वांची सवै सांची प्रीति निहार।।
मान करन राची सुमति नाची रस गतिधार ।।142।।

।। पद।।

मान गत सीय गही रमनीय।
सुरनायक सुत वाम पत्रिका वांचि लिखि सुच हीय।
तामधि भ्रमित भावभूषित गुन दूषित विध पुनकीय।
मौन भई जनुरही रोसरति हित मित चिंतति हीय।
रामप्रिया जब देख रुचिर अति विसमित मानस पीय।।143।।

दोहा–सियमति में गति मान गुन प्रीतम परमसुजान ।।
वचन सुधारस तैं सरस वोले प्रेम प्रमान ।।144।।

।। श्रीमान प्रीतम राजकिशोर जू के वचन।।

तेरेही शरनरहौं मृगनैंनी मानतजो हँस बोल री मानिनी।
आगै खड़ौ करजोर दयानिधि अबकी चूक क्षिमाकर कामिनी ।
तृषित जान अधरामृतदीजे हैमेरी तुहीधन भामिनी।
करुणाकर मिथलेशनंदिनी तेरी गति मोहि अंत न ठामिनी।
सुखनिदास कस रूस रही अब तुम बिन अंत कहाँ थल पायनी।
प्यारी सत्य कहौ सुनलीजे अनत न जाउं कहूं इक जाभनी ।
सदा मिहिर राखौ मोऊपर रामप्रिया सहचरी की स्वामिनी।।145।।

।।समाजी वचन।।

दोहा–सुनत प्रान प्रीतम वचन साँचे सरल सुभाय ।।
भूरे भावन भूल सिय बोलीं कछू अनखाय ।।146।।

।। श्रीमती मिथलेशकिशोरीजी के वचन पद।।

जाऔ प्रीतम मोय छल न सुहावै।
बात बनावत लाज न आवै बहुत कहौ मुह रोस वडावत बार बार
अब नाह खिजावैं।
जोचित चड़ी भरी दिल अंदर जाऔ भलै वेही सुखपावैं ।
प्रीति की रीति कठिन मनभावन गाँढ गहैं रस ऊख न आवै ।
पड़े कपट चटसार रसीले कहौ तुमै कैसै पतयावैं।
विनय करत द्रग ओट रहौ अब जेही वात हिय से भल पावैं ।
सनमुख खड़े कछू कह आवै अनरस में रस नाहक जावैं ।
जिय कछू और कहन तब मीठी बात तुमै कोटन कहआवैं।
रामप्रिया के रसिक शिरो मनि दिलकी लगी कौन लखपावैं।।147।।

दोहा–कपट चतुरता रावरी जान परी भरपूर।।
जाउवहीं जहँ भावती जियकी जीवन मूर ।।148।।

।। समाजी वचन।।

दोहा–मान प्रियाके वैन पर सुनि सानद रघुनंद।।
वचन मृदुल मंजुल मधुर बोले आनदकंद।।149।।

।। श्रीमान कोमार के वचन पद।।

तन मन हाथ विकौ तुमरे प्यारी जाउं कहां को पीर निवारै।
जीवन धनधरम निरंतर तोविन को सुख सार समारै।
यह जियजान द्रवौ करुणाकर तुम विन अनत कहां थिति पावै।
मदन नृपति अब जोरजनावत प्रिय सौ विमुख जान चड़धावै ।
सुख्य समुद्रतैं दूर परोअव सोचत ही निशनींद न आवै।
रामप्रिया हित हेर हर्ष हिय क्यौंना सुहृद मौकौ पतआवैं।।150।।

दोहा–सुख सागर विश्राम तुम, श्रीनिमराजकिशोरि ।।
मन भोरी गौरी सुनौं, मोहिय गति चितचोरी ।।151।।

।। समाजी वचन।।

दोहा–सुन मिथला पतिनंदनी, श्रीरघुनंदन वैन ।।
बोली वचन विचित्र अति, चित सूचक सुभ चैन ।।152।।

।। श्री मिथलेशकिशोरी वचन पद।।

जिहिं वाम लिखी हित की पतिया तिहि को मिल जाय करौ वतियां।
परनार रसीलीवसी मनही नहिंनीद परै घरकी सिजियां ।
अव चनकरौ रस जायभरौ जिहिं चिंततजात सवै रतियां ।
सुरनाइकनंदन वांम वहें तिहिहौं तुमसों रसकी घतियों ।
इत काम नहीं चलिजावौ वहीं चितचैंन करौ लागी छतियों।
कहँ रामप्रिया वलजाऊँ लला जिनके अनुराग पगी अँखियां।।153।।

जावौ जुजावौ वनै उनही सौं वातन रार वडावत हौ अब।
जावकभाल लगौ वा पगको अंजन अधर कपोल पीक फव।
विन गुन माल पीक करकंकन बलिहारी जिन साज सजौ सब।
सारी ओड़ दिखावतहौहिय पीतांवर रसमें वगसो जव। रामप्रिया
कह धन्य यह छविकौ कहौ कैरे वरनै कोई कव।।154।।

।। समाजी वचन।।

दोहा–प्रान प्रिया के वैनवर, सुनि प्रीतमसुखदैन ।।
विनय वचन बोले मृदुल, सूचित कर हित ऐन ।।155।।

।। श्रीमानप्रीतम राजकिशोर के वचन।।

।। पद।।

हे प्रान प्रिया कीजे मरंजी अपराध नहीं मानौं अरजी।
अति दीन भयौ तुम मानठयौ करुनाकर कैसी गही फरजी ।
अव मिहिर करौ चहु रोस धरौ सुखसिंधु सदा तेरौ करजी।
कहँ रामप्रिया सुनिये अरजी विधि आनंद मूर तुही सिरजी।।156।।

दोहा–प्रानप्रिया मेरी तुही, जीवन प्रान अधार ।।
विनय करत कव कौ खड़ौ, क्यौं न लखत रिझावर।।157।।

मृगनेंनी श्रीजनकजा, जीकी जीवन जोर।।
को चुगली तुमसौं करत, वैठतहौ मुखमोर ।।158।।

।। समाजी वचन।।

दोहा–प्रीतम परमप्रवीन प्रभु, वचन सुनौ सिया वांम।।
सापराध मनमानिके, नहिं बोली तिहि जाम ।। 159 ।।

तुम प्रीतम प्रभु स्यामरे, सहिचरी एक अनूप।।
तिहि प्रवोध दूती करी, सो आई हित नूप ।।160।।

करप्रनाम सिया पदकमल, दूती अमल अमंद।।
मधुरवचन मनहारकर, बोली सुचि सुखकंद ।।161।।

।। मिथलेश किशोरी जी वचन।।

।। पद।।

जाऔ जाऔ रे पिया रहौ दूर दूर।
अवध छैल दिलदार यार तुम अपनी गरजके पूर पूर।
जी कछू और कहन कछू औरहिं बातैं वनावत भूर भूर।
जो मनवसी रसी अपनैं दिलताके रही हजूर जूर ।
रामप्रिया पिया पैयां परत हौं जियन जरावहू तूर तूर।।162।।

।। राजकोमार वचन।।

माननि मोरी अरजी मानमान।
जो कछू चूक परी है हमसौं सो कामिन दियौ जान जान।
शीलसिंधु गुण खानि रूपनिध विनवत जोरत पांन पांन।
चन्द्रवदनि हँसि हेर खोलद्रग अधर सुधारस सान सान।
अलीवृषभानकुँवर स्वामिन अव अब न करौ रिस ठांन ठांन।।163।।

एकसखी प्रिय दूती बनाकर भेज दई सियके ढिग आई।
नाय कमलपद सीस कहौ प्यारी कहिये आज गही निठुराई।
अतिहट नीकी नहीं जिय जानौ मानौ सवकी बात भलाई ।
दीन भये जिमिमीन विनाजल रामप्रिया मिलिये सुखदाई।।164।।

।। दूती वचन।।

स्वामिनी अर्ज मेंरी मान लीजे।
ना जिय येती धरौ निठुराई अति हठि नीकी नहिं जिय जानौं।
मानौ सबकी बात भलाई जीवन मूर सदा पिय कौं तुम सत्य कहौं
नहिं वात बनाई।

खेलत चंग गई सुरपति पुर तौ प्रिय जयंत तिय पाई।
सुनप्रभु नाम भई मोहित मन पाती लिख तिहिं पास पठाई।
सो पियापास रही देखी तुम तातै भृमित भई मति भाई ।
निर अपराध तव नाथ निरंतर अंतर कछू ना प्रीति सरसाई।
दीन भयौ जिमिमीन विनाजल रामप्रिया मिलिये सुखदाई।।165।।

मान माननी मान न कीजे।
रिसमें रसरंग जात रसीली रसियाकी वतियान पतीजे।
जान सुजान जान दीजे अव गये ग्रामकौ नाम न लीजे।
समुझ सुघर गरलाग प्रीति सों रामप्रिया तेरे मुख लीजे।।166।।

।। समाजी वचन।।

।। पद।।

वचन सुन सखी मन चाहकरी।
मान गई गति जतन हेत कछू ही तल सुमत धरी।
सांच जान व्याकुल मनभावन हिय सुचि रीति अरी।
रामप्रिया प्रीतम दुर देखत उर अभि लाख झरी ।। 167 ।।

मनकी मुख से बात कहौरी।
नागर नवल प्रवीन् सुहा गिल।
तेरेही रूप रसिक रसमातौ ममजीवन तुम प्रान किशोरी।
तुय मुखचंद्र चकोर मोरद्रग हँस हेरन मन चार लियौरी।
रामप्रिया तेरे सुख सागर से नाम विहारी मोर भयौरी।।168।।

।। हिडोरा सावन।।

नवनागर अवध विहारी सिया सुख भारी हैं।
सरजू सरस सुहाई पवन पुरवाई है।
जहाँ सकल नार जुरआई पावस गुन गाई है।
वन प्रमोद द्रुम फूलै रसिक दोऊ झूलैं वांकी चितवन लागै सूलैं
मदन रस हूलैं।
अलीवृषभानकुँवर वलहारी जुगल छवि प्यारी जुगजीवैं श्रीजनक
दुलारी जन सुखकारी हैं।।169।।

।। दादरा।।

झूलैं दोऊ झूलना झुकन झुक झांकी।
झांका देत उमग आनदसौं चितवन मदन कलाकी।
अरस परस प्यारी भुजदीनै सिया भुज कंठ पियाकी।
वृषभानकुँवर यह रूपमाधुरी निसदिन हिय विच छाकी।।170।।

लखौ यह पावस अधकाई।
पिया विन लागत दुखदाई घुमड़ घन चहुँओर गरजै नहीं
मानत मेरे वरजै।
चमकवीजुली की जियतरजौ दिवसनिस तलफतलफ जाई ।
हरितवल्ली द्रुमलपटावैं। व्रथा दिलभर दिल तरसावैं।
रामप्रिया मिलौ गलै लावैं।। 171 ।।

सावनवा आये आये।
प्यारी स्याम न आये।
मदन पीर दिल चूर चूर।
देख देख नभघटा सुहाई लखलख मुरवा जिया हरषाई।
आमकीडार कोहिलिआ बोलै श्रवन सुनत लगै कूर कूर।
जाऔ जाऔ कोइ कोई पियाकौ मनावौ वार वार ।
विनय सुनावौ हम निस आसुनसै तन धोकै कहियौ हाल मेरौ पूर पूर।
हाय हाय जिय तपन बुझावौ रामप्रिया द्रग द्रग दरसावौ।
देर होत हूहै पछताकै विरह अगिन तन तूर तूर।। 172 ।।

सावन मन भाये भाये आली हरष देखिये नवल लता द्रुभ झूम झूम।
कहुँ कहुँ मुरवा बोलत डोलत कोहिल मधुर मधुर सुर बोलै
बीरवधूटी जहां तहां सोभित चहुँ दिस हरी हरी भूम भूम।
गरज गरज मघवा धुन छाई दमक दमक दामिन दरसाई चलत
पवन मीलत मन भाई वरसैं वदरियां बुंद बुंद।
मधुर मधुर रित मंगल गावैं रामप्रिया सिया लाल रिझावैं विपन
प्रमोद मोद उपजावन अमित अलिनकी धूम घूम।।173।।

झूलौ पिया प्यारे झूलन मनभाई।
इत घन गरजत विजुली चमकत पावस लगत सुहाई।
सरजू तीर प्रमोद विपन में कुंज ललित सुखदाई।
सुन सिय वचन हरष मन सखियां रचना विविधि वनाई।
उमंग चले दीनै गलवहिआं रामप्रिया वलजाई।।174।।

रसिक दोऊ झलना झूलैं हो।
नागर नवल किशोर रसिकवर श्रीसरजूके कूलै।
रसि रसि झोका देत परस्पर लखि लखि सखी दिल फूलैं।
नयन कटाक्ष करत प्यारी पर मनहु मदन की हूलैं ।
वृषभानकुँवर की येही विनती रहहु सदां अनुकुलैं ।।175।।

आयौ सखीरी सावन प्यारौ।
प्यारौ लाल लली संग प्यारौ प्यारी सरजू कूल पधारौ।
प्यारी हरित भूम द्रुम प्यारे प्यारी मोरशोर सुरभारौ।
प्यारी लहर अलींगन प्यारी प्यारी पवन सरस सुखन्यारौ ।
वृषभानअली प्यारी दंपतिछवि प्यारी भूषन वसन समारौ।।176।।

नवलघन नवलबन नवलझूला बनौ।
नवल सिय राम सखी नवल आनँद रगी।
वहत झंझा पवन झुकत झोकन मिलत गहत पियअंस जव रमकवाड़नलगी।
प्रेम प्रमुदित नयन देख सीय तहां भुजन भर अंकबर रसिक प्रीतमठनी।
अलीवृषभानकुँवर छवि निरखहु लसत हिय जुगल अनुराग पूरनपगी।।177।।

पधारौ सखी झूलन सरस निकुंज।
जनकलली रघुराज छैलसंग अमित अलिन के पुंज।
शोभाधाम सिंगार जानविध रचौ हिडोरा मंजु।
अलीवृषभान झुलावत हरसत परसत जुग पदकंज ।
गंग जनिक जनके कल्पद्रुम सरवस सुख दुख भंज।।178।।

चलौ चल देखिये झूलन रंग।
जनकलली रघुराज श्यामरो झूलत एकईसंग।
अरसपरस अंसन भुज दीनै उमगन अंग अनंग।
गावत राग मलार अलीगन वाजत मधुर मृदंग।
अलीवृषभान छकी दंपतिलख झोकादेत उमंग।।179।।

।। गज़ल ।।

सरजूपुलिन में झूलती मजेदार यारसंग।
सिया रघुराज लाल संग।
झूलन झूकन जुगल जुल्म की कहीजात न मोसन।
रति काम कोटन लाज हैं अखियां भई लख दंग ।
घन दामिनी सँग राजहिं छविसे भरे अँग अनंग।
वृषभानअली सँग गई वरसे अनूपमरंग ।।180।।

।। फुटकर पद ।।

किशोरीजी राख सरन मोह लीजे।
दीन दयाल प्रणितहित पालक अवगुन चित्त न दीजे।
तुम सम हितू नहीं जग मेरौ अर्ज कान सुन लीजे ।
अलीवृषभानकुँवर विनवत हैं अपनौ करगह लीजे।।181।।

करूणाकर अवधछैल मोपे मिहिर कीजे।
अरज करौंश्रवन सुनौ विनय मानलीजे।
अवध नगरकौ निवास चाहौं निज महल खास प्यारी चरणौके
आस पास राख लीजे।
काम क्रोध प्रवल चोर सवमिल हिय करौजोर तुमविन को करैगौर
अभय दान दीजे।
तवगुन महिमाअपार गाऊं हरदम समार निरखौं छवि बारबार
हृदय प्रेम कीजे।
अचल प्रीति जुगल नाम और आससे न काम मिथला अवध
धामवास जामें अघछीजे।
रसिक मंडली मेंजाउं तिनसंग तवगुनन गाऊं रसना अपनी
सिराऊं जगत चाह खीजे।
जनकसुता अतिदयाल मोपर हूजे कृपाल रामप्रिया सहचरी नित
आनदरस भीजे।।182।।

अव कृपादृष्ट कीजे निमराज की दुलारी।
तु विन को सुनैअरज श्रवन दैहमारी।
सियावरसे लागी आस और सवनतै निरास राखिये चरनौं के
पास राजकुँवरि प्यारी।
यह मन चंचल गमार धावत चहुँओरपास क्षिणभर नहिं लेत स्वास
यैसौ विभचारी।
तुमहौं सुखकी निधान दुसह दोष समन जान सुर नर मुनयेही
मान सरन गहत मारी।
मोमति सुधार दीजे भव से उवारलीजे अवके निगाहकीजे वलजाउं
मैं तिहारी जप जोग को न जानौं तप ज्ञान को न मानौं सियानाथ
हृदय आंनौ साकेत के विहारी।
द्रड़भक्ति दानपाऊं सिंगार गुन सराऊं नच गायके रिझाउं पिया
धनुषवानधारी।
यह आसको पुजइये प्रिया सहचरी अपनइये मन भाव ज्योंहिराखिये
मैं पालीहौं तिहारी।।183।।

प्रीतम विन रतियां कैसे कटैं।
अवधछैल दिलदारयार विन विरह विथा अवकापै कटै।
हियकीपीर कासौ कहौं सजनी मदन दर्द कहौ कैसे घटै।
जनकलली सुन मोरमनोरथ यह जगमें कहौ कासै सटै।
रामप्रिया आशिक भई तुमपर जुगल नाम निशिजामरटै।।184।।

नहिं मानै अवधपिया मेंरी वरजी।
नव किशोर मतलव गरजी।
नितउठ रार मचावत सजानी ठाड़ौ डगर रोपैफरजी।
अलीवृषभानकुँवरि कर जोरत विनय करत मानौ अरजी।।185।।

सिया प्यारे की छवि मोहिय अटकी।
मृदमुसक्यान लखी सखी जबसे रसिचितवन चितमें खटकी।

इन समकोउ त्रिभुवन जग नाहीं किहिउपमादेउं मति भटकी।
रामप्रिया वलगई लालपर लोकलाज भुवपर पटकी ।।186।।

आज रंगीले वनी छवि वांकी।
वरनौं कहा अनूप रूपको देखत वुधवल थाकी।
रौम रौम सुखदैन माधुरी अद्‌भुत सिया पिय झांकी।
रामप्रिया कहैं काकी दीजै इहि पटतर उपमाकी।।187।।

हमारीतेरीयारी नहिं अवछूटै।
जो कोई विघन कर तुम हमसे तापर विधना रूठै।
मनभावन सियजू अपमाई लाख अजस जग लूटै।
करुनानिधि हियकी पहिचानत करे विमुख मुख मूटै।
करगह लियौ अलीवृषभानहिं कल प्रचंड डरटूटै।।188।।

देखौदेखौरी अवधपिया रोकत घाट।
चलन नपावत वाल वाट।
अतिहि निठुर हठ रार मचावत झकझोरत गईचनरी फाट।
रामप्रिया पियारसिक सिरोमन हाव भावकरमदन ठाट।।189।।

अवरोको न डगर मेरी मानौ हटकी वात वनावत छलबलकी ।
भरन नदेत गहलेत गगरिया रसचितवन मेरे हियमें खटकी ।
रामप्रिया पिया रसिक सिरोमन वान कहा परी पनघटकी।।190।।

कहँ नृपलाल हरनमन वारौ।
जबसे दृष्टि परी वासूरत पल छिन नेक टरत नहिं टारौ।
रस चितवन वरवंक विलोकन वेदरदी आसिक मोहि मारौ।
जुलमी जुलफ फांसि नेहिन दिल जरकस ताज अजब सिर धारौ।
विहँसन असि जनु लाल म्यान से नारि विलोक कतलकरिडारौ।
रामप्रिया को वेग मिलावहु सिय जीवन मनहरन हमारौ।।191।।

नृपलाल मोर मन चोरौरी।
चलौरी सखी मोहि वेग मिलावहु जियकी तपन निवेरौरी।
रामप्रिया पिय वेग मिलावहु रूप दरस रसवोरौरी।।192।।

छैल चितचोर द्रगन वसौ प्यारौरी।
मृदु मुस्क्यान वंक रस चितवन नैनसैंन शरमारौरी।
सिया समेत सोहत वितान में काटेकाम मदवारौरी।
स्यामा स्याम सुभग सुदंर तन अति प्रवीन छवि भारौरी।
नागर नवल किशोर रावरौ है नैनन को तारौरी।
रामप्रिया रहिहौं इनके ढिग तन मन धन सब वारौरी।।193।।

महल में कवगई ती मेरौनाहक करौ वदनाम।
नहिं आवत नहिं जातन देखी कौन समय किहि ठांम।
जोकउं गुर जन लोग सुनेंगे तव कैसी हूहैं राम।
तुमहू से पूछत आली गन कोनवरन रहि वांम।
वृषभानकुँवरि जग लोग चवाई काहू नकीनी सनाम।।194।।

मेरे प्यारे गरेसे लगजारे सुख सागर नृपलाल विनदेखैं मोइ कल
न परतहै अधर सुधारस प्याजारे।
विरहु पीर दिन दूनी वाडै हियकी तपन बुझाजारे।
अलीवृषभानकुँवरि मन भावन नागर रूप दिखाजारे।।195।।

विन दरशन तरसानी सखीरी मेरे प्यारे पीर नजानी।
शील सुभाव सुनो सियपिय को है नृपछैल गुमानी।
नागर नवल सुजान सामरौ कठिन निठुरता ठानी।
अवध छैल दिलदारयार पर विनही मोल विकानी।
अलीवृषभानकुँवरि मन भावन राज कुँवर रति मानी।।196।।

राघव मोसे नेहा लगा कितगयौरी।
कँहलौ कहौं सखा रूप माधुरी कोटन काम लजागयौरी।
चपल तुरंग नचावत नागर मोहनी जाल फसागयौरी।
विवस भई सुद वुद नहिं तन की प्रीतम विरहा बड़ा गयौरी।
वृषभानकुँवर चित्त चैन परैना न जानो पिय कित गयौरी।।197।।

निस वासर न सुहात अनौखी जा गाड़ी लगनियां ।
विरह सतावत जिय घबरावत मुख नहिं आवत वात।
नेहकी फांसी गरे विच गांसी जगत हसी न डरात।
राजदुलारे हमहिं विसारे प्यारे कठिन कियौगात।
प्रनत उवारौ विरद समारी वृषभानकुँवरि जोरै हात।।198।।

पिया हमसे नजरिया लगाइ जिन फेरौ।
दीन दयाल रसक नृपनंदन आनद कंदन मोई तन हेरौ।
वारवार प्रभु विनय करत हौंपुरन करहु मनोरथ मेरौ।
अलीवृषभानकुँवरि विरहिन लखि आन करौ उरडेरौ।।199।।

द्रगन सर सैयां मारे गुइयां।
विपन प्रमोद डरी कहरत हों संग सखी कोऊ नइयां।
विकल भई लख देख हसत सव आन गही पिया वइयां।
हों सकुचत कछु कहत वनत नहिं प्यारे करी लरकइयां।
वृषभानकुँवर भय कर कंपत कह जावौ छैल परों पइयां।।200।।

कहां डार आये ललन तुम मौती।
हमतौ तुमको निस दिन ध्यावत और सवत हुआ कोती ।
जो तुमरे सवहाल रसीले कहती समताहोती ।
नैन्नन अंनन भाल महाउर आय गई को गोती।
अलीवृषभानकुँवर प्रीतम छविनिरख निरख हिय जोती ।।201।।

प्यारे तेरी छवि पर फिरत दिवानी।
वंक विलोकन तिरछी चितवन हसन हिय में समानी।
विन देखें नहिं चेंन रैंनदिन राजकुँवर रतिमानी।
नागर नवल लाल सुख सागर कोट कला गुनखानी।
तरस रही तेरेदरशन कौ प्रीतम पीर न जानी।
अली वृषभानकुँवर विरहन लख लाल निठुरता ठानी।।202।।

लालन के नेंनविकट कजरारे।
चितवत ही घाइल करडारत मानहु मदनवान अनयारे।
रतनारे प्यारे मतिवारे कोटन खंजन मीन लखवारे।
जव से लगे अली द्रग मेरेछिन पल नेक टरत नहिं टारे।
अलीवृषभानकुँवर मन भावन नृपसुत री दिलदार हमारे।।203।।

।। गज़ल।।

वाछैल पर आशिक भई न परै चैनरी।
लोक लाज कुलमरजाद गई विनै भूलरी।
विन देखेंवासूरत जिया होत सूलरी।
देखौमगवीच खडौ नवकिशोररी ।
क्रीट मुकट माथे परभाल तिलकरी।
लखरोमरोम वारौं कोटनअंनगरी ।
कानों में सोहमौती नासावुलाकारी।
गलसोहै गोप कंठा मोतियों की मालरी।

भुजवाजू करकंचन चूराजराउरी।
मन मुदरी उगरिनभैं वनी लख भानुलाजरी।
कट कछै जरदकछनी जामा सुरंगरी ।
दुपटा वनौ जरतारका रूमालहातरी ।
वृषभानकुँवर विनय सुनौ वारवाररी।
प्यारी कृपातैपाऊं मैं महल टहलरी।।204।।

।। पद।।

पाईये आली सजन सुख कैसैं।
छिनछिन जियरा व्याकुल घूमत चंग गगन विच जैसे।
धावत फिरत दसहु दिश भ्रम वस मृगत्रष्णा जल जैसे।
जैसे दीप पतंग हीय सवसुख चाहत दीपक मैसै ।
अलीवृषभान सिया स्वामिनि की कृपा दृष्ट सुख तैसै।।205।।

यह दोऊ चंद्रवसैं उरमैंरें।
दसरथसुत अरु जनकनंदिनी अरुन कमल कर कमलन फैरैं।
चंदवती सिर चमर ढुरावत चंद्र. कला तनहँस हँस हेरैं।
ललित भुजादियै अंस परस्पर झुक रहे केश कपोलन नेरैं।
रामप्रिया छवि कहिन सकत अव प्रानप्रिया मुख झुक झुक हेरैं।।206।।

हो सियाप्यारे वांह मेरी पकरी।
कहनसकी संकोच सोच वस गुरजन लाज हरी है सगरी ।
नृपतकिशोर सखीचितचोरन मृदु मुसक्याय गही सिर गगरी।
श्रीमिथलेसकुँवर लघु वहिनी भांनकुँवर पियसौं नितझगरी।।207।।

भजौ मन रघुवंशी रघुलाल।
जाकै भजन सरन रंचिक से छूटत भव के जाल।
वहुतक कुटिल अधम अपनये येसे दीनदयाल।
सव दुख हरन सकल सुखसागर कहा करै कलकाल।
लखन सहित परनाम आपकौ दीजे भक्तरगाल ।
अलीवृषभानकुँवर की स्वामिन सियाजू मोपर होहु दयाल।।208।।

द्रगन वसे कौशिल राजकिशोर।
विपन प्रमोद गई फुलवारी हँस हेरै मेरी ओर।
नागर नवल खड़े सरजू तट रसकन के सिरमौर।
खेलत गैंद लिये कर कमलन आ॰॰गई भुजभोर।

ठंगसी रही सुद वुद विसरी सव येसे कठिन चितचोर ।
अलीवृषभानकुँवर छलछंद लालके नहिंसभुझी जियभोर।।209।।

ललन विन देखैं परत परत नहिं चैंन।
कहा करौं जाउं मेरी सजनी भरभर आवत नैंन।
हों सरजू जल भरन जातती मारे द्रगसर पैंन।
मोई घायल करगयौ सामरौ कहत वनत नहिं वैंन।
वृषभानकुँवर पिय डगर लखतहौं मिलजा राजिवनैंन।।210।।

सुन मन रामचरन रतिमनिये।
विषय विराग तजौ सव वन सम सुख सागर जिय अनिये ।
जीवन प्रान भजौ निसवासर उनहिके गन गुन गनिये।
मात पिता गुरु स्वामी सव प्रभु सुखदायक जिय जानिये।
कौसिल पाल कृपाल कल्पतरु जन जिय प्रीति न तजिये।
वृषभानकुँवर मन हठ कर रोकत नाहक झूठ न मनिये।।211।।

किशोरी जू केसै याके नैना रसीले।
किये कतलांम तमाम जनकपुर मंत्रकरनवस कीले।
भौंह कमान कामधनु लाजतहय मांझ वसीले।
अलीवृषभानकुँवर मनभावन निसदिन य वसीले।।212।।

जपि है न रामनाम जो ना सुख पाइहैं।
छाड़ दै गलीन चित्त रामकौ निहारलै।
कोट जन्म के जे पाप दूर सव भगाइहैं।
सुखकेनिधान सव दुखकेनिवार नाम सरन प्रतपाल तेरेकर्म कौ छुटाइहैं।
वासना उपासना की आसा सव छोड़दै नामको प्रभाव भयैं
सकल सुक्रत जागहैं।
जोग जाग जप विराग देखत कलकाल भाग जागरे विमूढ़
वात आगली वनाइहैं।

वृषभानकुँवर दिवसजाम जुगलनाम जुगलधाम प्रेम सहित लैहै
तव सयवर अपनाइहैं।।213।।

निरख जुगल छविकी वलिजइयै।
देखत वनत कहत नहिं आवत कोटन रति पति देख ललइयै।
श्यामलगौर किशोर मनोहर नवल कुंज हिय मांझ वसइयै।
लख लख नयन सुफलकर आली विरहपीर सव दूर वहइयैं।
वृषभानकुँवर मन भावन प्यारे दिल भर दरस दिखइयै।।214।।

सुनौरी सखी कछु जतन करौरी।
जिंहि विधिमिलै अवध नागर पिय हियकौ ताप हरौरी ।
वहु उपकार मानहौं सजनी राजकुँवर जब दृष्टि परौरी।
ल्यावहु वेग मिलावहु छैलकी सुखदै हृदय भरौरी ।
दुसह दुखकी लगन लगी अति भारी। अहौ पिया सुनिये अवधविहारी।
विरह ज्वाल में जरीजातहौं मेटहु पीर हमारी।
विन दैखैं छिन कल नपरत है छलिया छैल खिलारी।
अलीवृषभानकुँवर विनवतहै चरन कमल वलहारी। ।215।।

रसिया छैल विना मोई सव जग लागत सूना।
नाहक प्रीति करी सुन सजनी कासौ कहौ यह पीर।
विन देखै वह श्यामरीमूरत पल भर परत न चैन।
है कोऊ हितू मिलावै वेग वह लखनलाल के वीर।
विरहिन अलीवृषभानकुँवर को वेग मिलावौरघुवीर ।।216।।

जुलफ जाल के फंदै परौना।
जो चाहौ कुसलात हियै की मृदुमुसक्याय अरौना ।
वेदरदी दिलदारयारसौं वसभर वाकी ओर फसौना।
अलि वृषभानकुँवर कहँ सजनी नेहव्यालसे मोह डसौना।।217।।

हां प्यारे तेरे नैन रतनारे सुनिये नृपत किशोर सियावर प्रतिमप्रान हमारे।
कोटनखंजन मीन निछावर भँवर भौंर कजरारे।
चितवत ही चुभजात अचानक रस हेरन मतवारे।
पलकौं वीच चलत पल चंचल अति कोट मदन मदहारे ।
अलीवृषभानकुँवर मनभावन चित्त चोरन वलहारे ।।218 ।।

कौसिलराज किशोर तुमै हम जान नहिं दैवू।
विन देखे छिन कल न परत है पीर कवन से कैबू।
प्रेम लगाइ छकाय स्यामरे विरह विथा क्यों सैबू।
अलीवृषभानकुँवर मनभावन विहँस अंकभर लबू।।219।।

लगन तो राम निवाहै वनहै।
मैंतौ तेरी चेरी प्रीतम अगनित दोष छुड़ाहैं वनहै।
मिथलापुर के नाते लालन प्रेम प्रीति सरसाहै वनहै।
सुन्दर राजकिशोर सियावर रामप्रिया अपनाहै वनहै।।220।।

मद भरीरे गजव तेरी अंखियां।
भौंह कमान नैन सर वांके तकतक रे हनत मेरी छतियां।
भईहौं निहाल सुरत नहिं तनकी डग भररे चलौं कैसे वटियां।
वृषभानकुँवर अवकैसीकरिये नहिं परै रे चैन दिनरतियां।।221।।

स्वामिनी अब जिन मोह विसारौ।
ज्यौं लख दीन प्रथम अपनाई सोई वात विचारौ हौं अघखान
अजान मंदमत सो तुम हृदय न धारौ।
यह विनती सुन राजकिशोरी मेरौ दुःख निवारौ ।
अति कोमल सझाव है तुमरौ सो वह विरद समारौ।
अलीवृषभानकुँवर कह सियाजू मोह भरोस तुमारी ।।222।।

सरन मैंने लियौ प्रभु चरनन केरौ।
इहितन और उपाय नहिं सूझत है जग माह अँधेरौ नहिं उपकार
करत स्वारथहित भयौ फिरत जग चेरौ।
नाचत फिरत कीट मरकट ज्यौं गिनत न सांझसवेरौ।
करहु कृपाजनजान आपनी लगै न जगभटमेरौ ।
वृषभानकुँवर की येही विनती करौ हियमांझ वसेरौ ।।223।।

स्यामलियायार प्यारा है हमारे नयनौं का ताराहै।
मुकटसिर जुलफघुघरारी चंद्रमुखहँसन परवारी ।
नयनकी सैन अनयारी रसिक मनमोहनैंवारी।
चिचुक रद अधर अरुनारे वचन मृदु ससीकिरन सोर।
रामप्रिया प्रान प्रीतम भई कृरवान हीतलसैं।।224।।

सव तज रैहौं सिया पद लागी।
कृपा भई मतजागी।
निस दिन टहल महल की करहौं मानौंगी बड़भागी।
जग उपहास कौ कौन परेखौ सदां मिलै अनुरागी।
कुल परवार त्याग सुख पैहौं जुगलप्रेम रस पागी।
दीन जान राखौ अपनौ कर रामप्रिया वर मागी ।। 225।।

द्रगन सर कोन सहै अनयारे मनमथवान सर से सालत आसिक
हिय हन मारे।
अवला जान कहा जोर जनावत अस नेहिनपै प्यारे रामप्रिया
लागत जाकेउर निकसत नाह निकारे।।226।।

कौसिल राजकिशोर नजरिया कैसी है महाराज।
जाहिय लगी विकल निसवासर छूटजात कुललाज।
छिनपल चैननिमिष नहिं आवत विरहताप उरसाज।
मन खटकत अटकत नयनन में नहिं सहात कछु काज।
रामप्रिया आसिक कौ वस करनें ही नौवद वाज ।। 227।।

नृपलाल हमारी गली आजारे।
नागर मन भावन।
विरहा पीर कहौं अवकासौं विन देखै पल चैंन परत नहिं तनकी
तपन बुझाजारे।
अवतौ नेह कठिन भयौ प्यारे निठुर भये अव कैसै वनत है
रामप्रिया सुख दैजारे।।228।।

अवतौ कृपा करौ राम सरन आयी तेरे।
दिनजान विपत छीनकीजे निजदास चीन सवप्रकार समररथ प्रभु
पाऊं कांवड़ेरे अघ अधाय कीनैं सो जानत करुणानिधान अंतरजामी
प्रभाव तुम से नछिपैरैं।
अबकी वारकरउधार तेरी बलजाऊं नाथ गावत जस निगम
नाथहौ अनाथ केरे।
सऱस लाग हृदय प्यास चात्रिक ज्यौं रटत जाग कव मिलहै
स्वांत बंदफलै आस मेरे।
रामप्रिया मनहुलालसिया वरसै मेरौ काज औरन सें रहौ निरास
महल वास नेरे।।229।।

विन दैखैं जियरा न मानै सखीरी।
जवसें छैल छटा द्रग छाई तवसें चैन परत न रतीरी।
अव या गैल कभी आवत नहिं वेदरदी निठुराई गईरी।
कहा कहिये दिलदार कठिन है जो कीन्ही सो सीस लईरी को
जानै कैसी लगन पियाको रामप्रिया मग हेर थकीरी।।230।।

जिय धरत न धीर प्यारे सूरत न लीन्ही।
कासों सँदेसवा कहिये को लैकै जाय पियाकी नगरिआ
नदेखी मन भयौहै।
अधीन्हो।
रामप्रिया मतथाको कासौं कहौं वीर वैस गई सवरी वीती पियानें
गहूँ न चीन्ही।।231।।

ललन विन देखें रहौ न जाइ।
सुंदर राज किशोर विन देखै यह माधुरी मूरत धरी पल जुगसम जाइ।
नागर नवल किशोर रावरौ छिन छिन जिय अकुलाइ।
हाय दरद दिन दूनो वाड़े विथा कही न जाइ।
रामप्रिया अब कासौं कहिये घर अगना न सुहाय।।232।।

हौंतौ शरन सियानाथके आई मिहिर कर राखना।
मत मंद एती दीनहों शरन पालन हेप्रभू अवतौ कृपा कररावरे
मोसै निगानहिं फेरना।
श्रवन सुन विनती वड़ी जिनकौ कितहुँ कहुँ ठांमना।
ते पाइ जग दुरलभ पदारथ रहत आनंद फूलना।
नृप लाड़ले निमनंदनी प्रियासहचरी नहिं भूलना।।233।।

प्यारे सकल उर वासी बुध कहत प्रवीन।
खोज कियौ तिन पायो जिन लीनौ चीन।
हम अवला मन कांची सब बुंधवल हीन।
सबहीं कौं सुख दीनौं जो भये अधीन।
हमरी सुरत कीनी नाही प्रीतम रसभीन।
निसवासर इस तलफी ज्यौं मीन।
रामप्रिया सुध लीजे दरसन विन दीन।। 234।।

राघौजी के चरनकमल सुखदैन।
जाउर वसत तरत भवसागर होत सो मंगल भौन।
हरन विपत्ति।
मोहतमनासन जगसैं रहतसुखैन।
रामप्रिया सेवहौं निसवासर आनद करन सोचैन ।।235।।

प्यारीलागैं अवधकी गलियां।
जहँ विहरत प्रीतम सिया अलियां।

वनप्रमोद लागत अतिसुंदर सघन द्रुमन विकसत नवललियां ।
उत्तर वहत रहत सरजूजल नितनव निरखतरहत लहरियां।
रामप्रिया हिय वसतसदा ही अति अनूप सिया पियाकी नगरियां।।236।।

काकहौं सजनी प्रीतम रसवतियां।
जोकुछ करत नवल रसनागर कहत वनत ना करत छलघतियां।
अर्धनिसी आवत द्रग आली वारवार लगावत छतियां।
रामप्रिया नव छैल छवीला मानत नाह अनौखी गतियां।।237।।

तुमारीपियागजब गरवीली चाल।
मृदु मुसक्यान तमोलन चरचन वांकेनयन विसाल ।
नैन कटाक्ष हेर जुवतिनपर सुन्दर अवध रसाल।
चंद्र वदन लखलख पिया तेरौ विरहिन के उरसाल।
वृषभानकुँवर घाइल करदीनी मारत नयन कटाल ।।238।।

चंचल नैना रतनारे हो।
कोटनखंजन मीन निछावर विन मद पियैं मतवारे हो।
छविवारे कारे अनयारे कजरारे मोह लगत पियारे हो।
चितवत हीमें वस कररराखत हिय से टरत न टारे हो।
अलीवृषभानकुँवर के जीवन छिन पल होत न न्यारे हो।।239।।

कहियौ हो प्यारे सैयांसें हमरौ सदेसौ कहियौ जाय।
घरी पल छिन मोह कल न परत है तलफत रैनविताय।
कहा कहौं कछु वस नहिं मेरौ तुमविन जियघबराय ।
अलीवृषभानकुँवर करजोरै लीजौ निकट बुलाय।।240।।

मधुरछवि नैननसें न टरैरी।
पलभर कल न परैरी।
कौशिलपाल कृपाल रसिक निध सरजूतट विहरैरी।

कुंडल श्रवन मुकुट माथेपर करधनुवान धरैरी।
अलक झलक दुति गोल कपोलन वोलन अमृत झरैरी।
सीतल मृदु मुसक्यान मनोहर तनकी तपन हरैरी।
रामप्रिया सियावरकी मूरत निसदिन हृदय भरैरी ।।241 ।।

प्रीतम छवि प्यासे नैनारे।
चाटपरी द्रग श्यामरी सूरत विन देखै नहिं चैनारे।
निस वासरहमको तरसावत मोहे सौतन के वैनारे।
रामप्रिया प्यारी जश मानौं वालम वेग मिलानारे ।। 242।।

आली मन मोह लियौ चितचोर।
हँस हँस मोतन सैंन चलावत नागर नवल किशौर।
वंक विलोक नैन शर वाके विवस भयौ मनमोर।
सुंदर श्याम कमलदल लोचन वारौं काम करोर।
रामप्रिया मिल है सिया वल्लभ करहु कृपा की कोर।।243।।

क्यौंतरसावत छैल चिकनियां अजब अदा दरसाइ लुभाई।
निठुर भये अब मनके हरनियां।
हाड़दई विरहानल वाड़ी निरमोही सै लागी लगनियां।
रामप्रिया दरसन विन तरसत सवके हौ राजा हमारे हौ रिनियां।।244।।

छलन छली सजनी छलिया छैल।
विपनप्रमोद गई आलीरी वीचखडौ रोकैगैल।
मैं जिय भोरी कछुय न जानी वा रसिया के फैल।
रामप्रिया अवधेश ललनसंग सव तज करहौं मेल।।245।।

अजव गत तेरी प्रान प्यारे।
अतिअनकूल विदित सवही कौ भल लक्षन मतधारे।
पावन प्रीति रीत दरसावत भावत भाव निरारे।
भन वृषभानकुँवर अवसर यह जान परे गुन सारे ।। 246।।

नवनागर वड़भाव विलोकौं सिय गुनरूपनिधान।
अंग अंग अभिराम अधिक अति रंग रंग दुति भान
नीलनि चोल अमोल अमल मधि गौरगात छविधाम।
मनु मरकत वितान मंजुलमधि जाग्रत जोत ललाम।
मांगसरस सिंदूर सहित सुठ कच पाटी विच तीक।
देवसरित सारद रविजा मनु मोदित चंदन जीक।
मुक्तालर लटकत विशालवर तिहिं चल रूप निकेत।
उड़गन सिमिट एकहू करु मनु चलित मिलिति ससिहेत।
अर्धचंद्रवत भाल पटल थल वैंदीलालअनूप।
मनु वंदक पुष्प लहि ससि किय पूजित मनसिज भूप
आड़ तरलताटंक भृकुटवरससिरथ अंग समान।
मनु द्रगमृगनिसुतिलक वाग धरिसारथ मदन अमान
नासकाग्र मुक्ता विसाल अति सोभा कहत वनै न।
दाडिम चषत वीज लाग्यौ जनु कीर तुंड छवि एन
चक्रन कलित कपोल गोलअति दर्पनसे दुतिसार।
संमत करत बंधुगनि ससिसौं मानुष संख उदार।
अभ्दुत अधर सुधारस रंजित समरद अतीअमंद।
मनु छविछीप रूपसागरभव जुत मुक्ता वरवुंद
कटसरिया कल केकिकंठ दुति कठ कांति कमनीय।
मनहु गंग मूरत अभंगतट रुचिरेखा रमनीय
जलजहार परितक्ष वक्षथल शोभा स्वछ उदार।
मनु गिरमेरु परसि सुरधन धसि धरनि धवल जलधार।
पहुँची परम पानिपंकज तट शोभा अधिक अलेख।
मनहु सुक्रत जसथान जानिकियदान द्रव्य परवेष।
चित्रत तव विचित्र वाजूवंद चित्र फुंदनाजाल।
मानहु मदन वटित रसरीधे खुलत झुकत सिखिवाल।
सोमुनि सूत्रि अचित कंचुकि रुचि संचितकछुदुत स्यांम।
मनु बैठे मनसिजके डर हर ओड़ वघंवर वांम।
रोमावली मृदु मंजु सीयकी शोभा वरन न जाइ।

मदन अहेर मनहु नाभी रुहि सांधिवसांगवनाय।
हरि कटितें कटछीन कलित तटि कुनित मेखला जाल।
मनु मनसिज नितंव तुंवीधरि साजित सुरजसमाल।
रंभा तरु विपरीति रंम्य सम जंघा जुगल विराज । लहँगा।
ललित वलित साजित मन मदननसतमदराज।
येडदार उद्दित उदारअतिगरवीली गतिमंद।
मनहुमानगडमैंड़ मिटनहित चालित कामगयंद।
पंकज वदन संख नूपुर धुन पाटफुंदना परम।
करत मधुर गुंजारअलिनमन छवि रतियायसधर्म।
कोमल अति अमंद एडी समनारंगी जनजोय।
पदवाजक अनुराग जगन जन लागत सव सनकोय।
सुरवंदित नखचंद्र चारु नर भनशोभा तहँ कौन।
जनुनक्षत्रमाला पाइनपर भवचाहत दुतिमौंन।
अलीवृषभानकुँवर भावतमन वरमायत मृदुवैंन ।
रसिकराज रघुवीर सहित वसु सियस्वामिन हियएंन।।247।।

मनलैगयौ हमारौ पिया स्यामरौ।
लख दिल भयौ मेरो घावरौ अतिसुखमार चतुरनागरनट निवकिशोर छवि आगरौ।
कोटकाम अभिराम मनोहर को ना होय लख वावरौ ।
रामप्रिया प्रीतम मनभावन सवतज मिलौं उजागरौ ।।248।।

नहिंहैं तुमरीप्रथम कैसी वतियां।
हम वरजी जवतौं नहिं मानी अवकैसी भई पियातेरी मतियां।
नेह लगाइ जान जिय भोरी फिर पाछै कीनी तुम छल घतियां।
कहत और कछुकरत औरहौं नहिंवड़वत अनुहर कुल जतियां।
वृषभानकुँवर की विगरी विसारौ करुणांसिंधु गहौमेरी वहियां।।249।।

पिया तेरी जुलफिया नें जादूकिया।
चंद्र वदन छूटी अलवेली गोल कपोलन झलक दिया।
भौंहकमान नैंनसर वांके चंचल चित्त मनमोहिलिया।
गजगत चलत हँसत चित चोरतवैसकिशोर भुलायलिया।
अलीवृषभानकुँवर विरहिन लख मनमथ जोर जनाइ दिया।।250।।

सखीरी मोय वैरिन नींद भई।
सपनै वालम मोढिग आये मृदु मुसक्यायगई।
चौकपरी प्रीतमनहिं देखे मनकी मनहिंरई।
विरहविथा वाड़ी तवहीतैं लागी लगन नई।
रामप्रिया सहचर मनभावन क्यौंन जगाय लई।।251।।

ठग लैहै नृपतसुत मानकही।
वामारग मत जाउ मृगनैंनी द्रगन बीच धसजैहै सही।
जासैं लगत विकलकरराखत मतवारे की वान यही।
रामप्रिया सहचर सुन सजनी जोजानै जापैवीत गई।।252।।

पिया प्यारे हँसन लख पागीरे।
सुंदर नवलकिशोर सियावर प्रीतमरसअनुरागीरे।
जबसैं दृष्टिपरी वहमूरत कान मान कुल त्यागीरे।
दिननहिंचैन रातिनहीं निद्रा विरह पीर उरजागीरे।
अलीवृषभानकुँवर नागरवर मिलनचोट जिय लागीरे।।253।।

बहुत दिननकी यारी हमारी तेरी।
कैसै पधारे आज रंगीले सुरत करी बहुभारी।
अव जिनजावहु अवधस्यामरे मम हिय कुंज तिहारी।
रामप्रियाकी येही विनती पलछिन करो न न्यारी।
हाहाकरत हौं पैयां परतहौं यह विनती अवधविहारी।।254।।

।। रेखता ।।

अजब खूब सूरतीवारा।
सिया स्वामिनका प्यारा है।
झुकीली ताज जरकसकी जुलफ जुलमी रसीले की भौंय धनु
वानद्रिगचितवन जरामोतन निहाराहै।
जान कुरबान प्यारे पर दिलौं से दोस्ती द्रढकर जगत उपहासका
क्या डर यही जीवनहमारा है।
लखौ सखी माधुरीमूरत नही त्रैलोक अस सूरत जुगलपदकंज
नितध्यावै रामप्रिया नयन ताराहैं।। 255।।

कारन कबन मान तुम कीनौं।
कौशिलराजकिशोर श्यामरे नाहक मोह विरहादुखदीनौं।
जोकछू चूक परी सोसमारौ सिया नातेसे चीनौं।
अबकाहेको गहत निठुरता विरहदाह दिन दूनौं।
सुन विनती वृषभानकुँवरकी लखहँसकर गहलीनौं ।। 256।।

सियाबरप्यारे अवधपतिवारे दरस टुकमोह को दिखाजारे।
मुकुट सिरधारी जुलफ घुँघरारी तनक हँसकै वतराजारे।
नयन रतनारेभँवर कजरारे रसिक लख जियराजुढ़ाजारे।
वृषभानअली तुय सरनलयो मोह जुगल चरनों में बसाजारे।। 257।।

करत अब काहेकौ निठुराई।
तेरी बारबार बलिजाई।
तेरे ही रूप लुभानी छबीले दरसनविनघबराई।
कौसिलराजकिशोर सियावर मिलौ वेग पिया आई।
पद छिन चैन परत नहि प्रीतम विरह पीर सरसाई।
अलीवृषभानकुँवर मनभावन तुम बिनकछू न सुहाई।। 258।।

जनलखरूप लुभानीरे।
कुलकान जानमैंदईवार विनदरसन दीवानीरे।
दिननहींचैंन रैंन नहिं निद्रा कहा करौ जिय मानत नाही अवध
छैलदिलदार यार दिल पीर ना जानीरे।
निठुर भयै अव वनत न प्रीतम विरहा जोर मेरे दिलके अंदर
अलीवृषभानकुँवर आसिक पिया हाथ बिकानीरे।। 259।।

मैं खड़ी महल अपनेंरी।
मग निकसौ राजकिशोर लियौ चितचोरी।
बाकौं सुंदर स्याम स्वरूप मदन मदहारी।
मुख लख लाजह कोट ससी बलिहारी।
बाके बड़ेबड़े नयन विशाल जुलुफ घुंघरारी हँस हेरे मेरी ओर
दसन छवि प्यारी।
द्रग छायौ स्यामल छैल करौं का आली।
नहीं परत चैन दिनरैंन विरह बेहाली।
मैं कासौं कहौं यह पीर हृदय की गाड़ी।
प्यारौ विन देखैं लाल दरसहिय बाड़ी ।
एकअरज करौं करजोर सुनौ प्रभु मोद्रग वृषभानकुँवर को करौ
चरनकी चेरी।। 260।।

।। पद।।

नागरनवल नयनविच अटके।
अँग अँग कोट काम छवि निंदित सुंदर केहर कटके ।
नखसिख सुंदरता किशोर दोऊ उपमा देत कबीजन भटके।
चितवत चित हरलेत पुरजनकौ चेटक मानौ नटके ।
अलीवृषभानकुँवर वाछविपर अटके मानत नहिं मनहटके।। 261।।

पिया प्यारी कौ मन सो मयूर पिया घनस्याम सघन।
देखत नभ सुख होत मोद उर नाचत प्रेम प्रमोद हेर आनंद मगन।

मन भावन विहँसन दामिन सम अधर इंद्रधनु तूल सुहाई दसन चमन।
रामप्रिया दादुर सहचर गन चात्रिक पंकज नैन स्वात छवि
बूंद चखन।।262।।

जहां देखौ तहां राम मईहै।
नभ थल गगन पवन चारौदिश राम अंश में सिद्ध लईहैं।
जड़ चैतन थावर जंगममें देख परत सबमें विजईहैं।
देव अनुज किंनर सुरनरमुन पुरषारथ सव आप दईहै।
रवि नसिपति तारागन संजुत्त रा मकारसें जोत भईहै।
वेद पुरान कल्प जुग निसदिन काल निमिख जिनकी रचईहै।
सिद्ध सरित सर जहांलग रचना चित्रविचित्र देखत सदईहै।
रामप्रिया उरअंतर वासी सियावल्लभ अनुराग सईहै।।263।।

सुनौ प्रभुछाड़ै नाहि वनैं शरनागत पालैं वनैं।
हौं अघखान अजान मंदमत कलमल रहत सनैं।
अबकीबार निहार कृपाकर दीनन दीन गनैं।
अधमउधारन जग यश पावन मैं निज श्रवन सुनैं।
समरथ सव लाइक गुणगाहिक वेदन सुयश मनैं।
सबआशा तज रहौं द्वारपर डगौं न प्रण अपनैं।
रामप्रिया करुणागुण आगर वांधिचरन द्रड़ मनैं।।264।।

काकरौं सजनी द्रगन छवि अटकी।
क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडिल अलक नागनी मुखपर लटकी।
वंक विलोकन तिरछी चितवन मृदु मुसक्यान हृदय विच खटकी।
फूल छड़ी फेरत कर कमलन सिंह ठबन नवराजकुंवर की।
रामप्रिया पल छिन विसरत वारौं छवि लख कोट मदनकी।।265।।

लला तन मन जिया तुम पैं दैऊं वार।
तेरी रस चितवन मनहरन यार।

जबसैं लखी वसीउर अंतर मदन पीर दई हृदय झार।
रामप्रिया पिया रसिक सिरोमन सदा रहौ मम हियके हार।।266।।

मिथिला निजधाम सिय प्यारी कौ सुखदाई।
नौऊनिध अष्ट सिद्ध रहततहुँलुभाई।
कमलातट पावन सखी विरहतनित अलिन संग सारद लख
रहतमौन सकस नांह गाई।
चिद विलास सुख निवास ऐकै ही रस सर्व काल काम क्रोध लोभ
मोह कतहुं ना दिखाई।
चहूंओर वनअनूप कंचनमय सिद्ध रूप जन्म सुफल करन सेत
पटरित रहिछाई।
ब्रह्मा शिव सुथलजान विष्णु संगमें जुआन तिरहुत तातैं कहाय
कीनयज्ञ आई।
विघ्न रहित सिद्ध सहित कीन्हैं मुनवर निवास जोजो मनभावत
सोपावत अघाई।
बारबार विध मनाऊं एहीपुर जन्मपाऊं सीता जुगचरन ध्याऊं मन
रामप्रिया भाई।। 267।।

रैन श्रमथाकैरी लली ललना।
श्यामा श्याम ललित जोरी सुभ अंग अंनगन छाकेरी।
कजरारे अरुनारेनैना बोलत मुख मधुर वैंन प्रेम उमग जागेरी।
रामाप्रिया दंपत शोभा लख मोद्रग पागेरी ।। 268।।

अखियाँ जुगलरूप छविछांकी।
गज गत चलत हँसत चित्त चोरत राजकुँवर छविवांकी।
हावभाव रसिकेलकला लख कोटन रतिपति थाकी।
वृषभानअली दिलदार अदानव हियके अन्दर राखी।। 269।।

देखके छवि माधुरी नवनागरमें द्रगलगे।
सीसपै सखी ताजजरकस लुलफ लख नागिन लजैं।
डसती हैं आशकौंकेमन कौं मैरसैं फिर नही जगे।
छाकी हौं बछैल पै नहि रैनदिन निद्रा लगे।
कैसैं मिलै दिलदार वांका आयकै गरुआलगे।
डूड़िये कहँ जायकैं नहि जनत तौ येकौ वनैं।
विरहकी तौ पीरवाड़ी दरद दिलका को सुनैं।
इस रोग की औषध दवा नहिं जंतमंत्रनसै बनैं।
वृषभानकुँवर रावरे मोरे औगुनौंकौ मत गनै।। 270।।

।। गजल।।

नरदेह कौ तन पायकै भजनाम को हरदं।
शिवमन मानस मराल विहरत हरदं।
श्यामलकिशोर सिया संगमें हरदं।
छवि सोहना छवीला सुखसारकौ हरदं।
करुणानिधान भक्तवतसल पासमें हरदं।
वृषभानअली जुगल ध्यान ध्याबधु हरदं।
सिया नृपतलाल महल टहल देंहगे हरदं।। 271।।

सिया स्वामनी कृपाल राख लीनी हमकौं।
काटी अनेक विघनैं गह लीनौ करकौं।
लख परकर अपनीमें अभय कीनी हमकौ।
दीनौं अनेक सुःखन भीनौं अनंदकौ।
खासी खबासी पदवी दुर्लभ सुनीदंको।
वरदीजे करुणाकर नहिं भूलौं तुमकौ निस दिन विलौकौं जुगल
चंद्र चात्रक मनकौं।
वृषभानअली भली बात नामहै सबकौं।
छवि माधुरी निहार करौं पावन तनकौं।। 272।।

।। चित्रकूट के।।

वन वीथन राम चलेआवैं।
पाछै अनुज विच सिया राजै सीसजटा करधनुषबिराजै कटि सरतून कसैंआवैं।
शोभा सीलधाम सुखमाके कोठनकाम लख सकुचावैं ।
रामप्रिया देखौं बड़भागिन ग्रामवधू लख ठगजावैं ।। 273।।

चित्रकूट अति विचित्र देखौ द्रगसजनी।
कामद्रुगन कल पवृक्ष अभिमत फल दैवी।
चहूँओर वनअनूप पछिम दिस भरत कूप जाकी महिमा अनूप जातनाहिबरनी।
तापस मुनि सिद्ध बसत जुगल नाम अमित जपत तिनहिं देख कलुष नसत त्रैताप भंजनी।
मंदाकिनी गंमाघार पैसरनी सँग विहार मंजत सुक्रती सुजान दुखदरिद्रनासनी।
श्रद्धा संबल से हीन ल्याई सिया दीन चीन रामप्रिया चरनकमल निकटवासनी।। 274।।

चितचेत चतुर चित्रकूटचलौ।
सुखकौधाम प्रियाप्रीतमकरैं विहार निसजाभ भलौ।
चरनचित रजनैंन लगावहु नामजपौ त्रैताप दलौ।
रामप्रिया सब भांत भरोसौ सुक्रतविटप सव भांत फलौ।। 275।।

चितचोर लीन चित्रकूट रहसभूम जानी।
विहरत रघुवीर संग जनक सुता अतिउमंग विहँसत पियावदन निरख शोभा सुख खानी।
रामप्रिया जहँ वसत षटऋत सुभ मोद लसत बीनालेकरत गान सादर सुखदानी।

अरसपरस हावभाव प्यारीपियकौ सुहात रामप्रियाछविनिहार
धन्नभाग मानी।।276।।

।। पद सैन।।

प्रीतम चलौ सिजिरियां रैंन रथ थोरी।
नवललाल नवसेज रंगीली नवनागर सियागोरी।
शिथिलगात अलिस्यात प्रानप्रिया श्रीनिमराजकिशोरी।
सुनि अलि वचन चितैं प्यारीतन उठभुज अंस गहौरी।
दोऊ मन उमंग चली रस सरता अलि हिय सिंधु भरौरी।
रामप्रिया यह आनंद अलौकिक सोबड़भाग लखौरी।।277।।

उमंगआई निदिया चलौ सिजियापै।
सैन भवन दंपत सुखलीज जामिन अधरतियापै।
चंद्रवदन गह उठी पियाकर अरुनाई अखियांपै।
रामप्रिया सिया संग में लीनी सैंनदई सखियापै।। 278।।

।। रहस।।

विरचो रहस कुंज सरजू तट।
श्रीमिथलेशकिशोरी मानतज कौशिलराज किशोर करतहठ।
निरतत सोम श्रवन सुखदाइक डगत न लाल बड़े नागरनट।
मानजीय अवलान करत सुख जैसौ प्रगटभयौ सुरतरुवट।
वृषभानअली लख लटकमुकटकी जाह गहौ सुन्दरपीरौपट।।279।।

जुगलकिशोर ये शुभ सरदआई रहसरचिये।
गगन निरमल उदय शशिषोड़सकलाजुत प्रेमरसरँग बोरिये।
रुचिजान रचौ बितान अलियन फरस तकिया सुभ्रसोभत जुगल
सिंहासन मनोहर मनिन दीपक जोरिये।
नव सत सिंगारी प्रिया प्रीतम निरख छवि द्रंग हृदय सीतल
जावबलबल सदां तुमपर बसत हौं द्रग चोरये।

आनंद मंडिल रहस मनलख मोद उपजत नचत थेई थेई।
बजतनूपुर सुरसमारत गत बनावत मोरये।
वीनाबजावत लै सिया संगीत नाचत हर्ष पिया अतिचातुरी गत
जानके हँसि हेर लोचनकोरये।
भुज कंठ मेलत पिया निहोरत नाचिये सँग हाथ जोरत विहँस
लागी मोदहियसैं निरख छवि त्रणतोरये।
नव भाव हांस विनोद देखत रामप्रिया लख विहँस मांगत बसौमोहिय
श्यामश्यामा सदां एकहि ठौरए।।280।।

।। पद।।

पियामुख देखत सरद शशि लाजै।
पूरण कलाकर भ्राजौ।
किहि उपमा दैउं पटतर नाहीं नागर सवसुख साजै।
विचरत नभ मग सेज सदनविच अधरामृत रस प्याजै।
रामप्रिया प्यारी मम जीवन उदैभयौ रतिसुखकाजै।।281।।

।। रेखता।।

रसरास रचौ प्यारे उपवन में आयकैं।
पयसिंधु अवध छाड़कैं कामद में ल्यायकै।
चहुंओर लताछाई गंगानजीक में सहचरी गन गावैं अनदबडायकैं।
नग नाग देव किंनरीं देखैं सिहायकैं।
बाड़ैसुहाग सियकौ कहैं विध मनायकैं।
नाचनलगी वहुप्रमदा सिया रुचकौ पायकैं।
द्रगकरकटाक्ष प्यारी पियकौ रिझायकें।
रामप्रिया मागैं जुग चरन लागकैं।
नितगौरश्याम बसौ हृदय रसबिहारकैं।।282।।

।। पद ।।

देखो सुधर श्याम रसिक वंसी मुख साजैंरी।
सरद सुहाई जीन्ह मन्दमन्द चलैपौन देख चंद्रबिम्ब हियैं उमग हर्ष एरी।
नवल लाल संगवाल दंपति रस में खुसाल शोभा लख भईनिहाल अंसन भुज धारैंरी।
मन्दाकिन नीरसींच कामदगिर ललनवीच सिंहासन रतनजटत छत्रचमर छाजैंरी।
भूपततनया समेत राजत रघुवंशकेत रामप्रियामधुरीधुन सप्त सुरन बाजैरी।।283।।

बीन कहूँ बाजी रघुबरलालकी।
सप्तसुरन लै रसभर गाई श्रवन सुनत मनथाकी।
संगचलौ द्रग लाभ दिवायौं रास मंडल की झांकी।
रामप्रिया सिया मिले पदारथ फिर न रही जग बांकी।।284।।

चलौपिया कनक कुंजकी ओर।
छविआगर नागर सुन्दरवर रसकन के सिरमौर।
रहसचाह प्यारीउर लखकैं आई तुमहि निहोर।
चलियेबेग विलंब न कीजे करिए रासवहोर ।
पियातन श्याम सियातनगोरी घनदामिन छविजोर।
अलीवृषभानकी येही विनती ममहियबसौ चितचोर।। 285।।

बजावै बीना नागरीहो।
वीनबजावैं पियाकौरिझावैं नैनन भाव दिखावैं हस्तकमलकी चलन अनूपमरूप अमित गुनआगरीहो।
साद बजावैं सुरनसमारें अद्भुतगति सरसावैंहो ।
रसिक प्रीतम की प्रानप्यारी मधुर सुरनगावैं रागरीहो।
बलवलजाव कहत मनभावन हसकै हृदय लगावैंहो।
रामप्रिया सहचरी यह सुख कौं निरखै सो बड़भागरीहो।।286।।

ताकौ प्यारी सरदरित चांदनी।
लालन मदनकेल कल नागर सिया सुंदर गजगामिनी।
सुधारूप ससि दीसत निरमल कामिन कामजगावनी।
विपन सिंगार बिच कुंजमनिन मय रबकिरन लजावनी।
करिये रहस आज प्रियप्रीतम नैनन सुख बरसावनी।
नव सत साज सिंगार चली सब रतमद कोट लजावनी।
बाजत ताल मृदंग बीन सुर राग सरस उपजावनी ।
निरतत गत उघटत कर थेई थेई नूपुर मृदु छमिकावनी ।
वृषभानकुँवर हिय विमल कुंजकर बसौ पिया सिया स्वामनी।।287।।

देखौ प्यारी सरद शशि नीकौ।
सरदशशीसम बदन तुमारौ सरदशशी लगै फीकौ।
मोद्रग सदन गगनहिय विचरत मन भावैं मुख सीकौ।
निरखतरहत चैन जिय आवत नवछवि पान अमीकौ।
जीवनधन सरबस सुखखानी प्रानप्रिया तुम जीकौ वृषभानअली
नृपलली विहँसकर असिधारौ भुजपीकौ।।288।।

।। ठुमरी।।

सजन मोसै वरजोरी कीनीरै।
मोईको आय अचानकरोकी।
मृदु मुसक्याय पिया चोली तरकाई।
कछुइतनी ढीटई मेरी विनहु नमानी।
अवधबिहारी तेरी जानी चतुराई अबछु औ न कलाई रामप्रिया
दिलजानी।।289।।

मेरी रोकौ न डगर अवधेशललन।
रसिकप्रीतम मेरी मानिये अरज सास सुनैगी रारकरैगी ननद
सुनैघर बात चलन।
यह सुन हँसे रसिक नागरवर रामप्रिया आनंदमग्न।। 290।।

चलत डगर मत छेड़ी छैल।
विनय करत मत रोकौ गैल।
तुमतो निडर मोह भयौ झेल।
रामप्रिया मोतै करौ न फैल।।291।।

भोरई रारमचावैरी।
मेरी रैन उनीदी अखियां बरबस गरुआ लगावैरी।
वेदरदी बरजी नहि मानत रसभरी बात बनावैरी।
रामप्रियाप्रीतम रस लंपट मीठी तान सुनावैरी।।292।।

रघुनंदन छैल हमारारे।
लगै तेरौ मधुरवचन मोह प्यारारे।
जबसैं दृष्टिपरी बासूरत रुकतनहीं मनमेंरारे।
मनभावन तुयनयनकंजसम सैंन पैंन शर मारारे।
तुमबिन मेरेंचितचैंन परत नहिं छिनपल होत न न्यारारे।
रामप्रिया छवि विलख छकी चरन कमल बलिहारारे।।293।।

।। गजलैं।।

महबूब भूप प्यारा मनमें समारहाहैं।
खूबसूरतीका प्याला चशमौसे पान कराहैं दिल पै असर गयाहै।
जबसें भई दिवानी वा जानसें लुभानी अवतौ कठिन भयाहै।
आशिक बलाय लागी मासूक रूपपागी पलचैंन न लहाहै ।
किस्से कहौं कहानी प्रिया सहचरी भुलानी घाइल पड़ा रहाहै।।294।।

मासूक रूप प्याला चशमौं से पान कराहै।
तिरछी नजर का मारा बेहोशदिल हमारा जब से निगापराहै।
नव वैश हुसन बारा हियसै टरै न टारा छवि सिंधुका भरा है।
बलजाउं जानवारी प्रियासहचरी तिहारी अवतौ शरण धराहै।।295।।

सखी रघुराज मेरे दिलका प्यारा है।
कभी नहिं होत है घरीपल छिन को न्यारा है।
सखी वह छैलकी हेरन करूं क्या उसकी छविबरनन हँसन
हियमें बसी जबसैं नहीं दिलको सँभारा है।
लगी अवनैन की गांसी छुटै नप्रेमकी फांसी करौं क्या बस नहीं
मेरा कठिन विरहानेजारा है।
अलीवृषभानकुँवर की रहै नितचाह मिलनै की दरस दीजे कृपा
करकैं तुही जीवन हमारा है।।296।।

रघुराजसें कर दोस्ती सब सुख कौ सार है।
सुंदर किशोर जांनकी जीवन सो यार है।
तप दान तीरथ कोटन सवभँवर जाल है।
भवसिंधु दुस्तर तारवौ सिया चरनौं नवार है।
करुणानिधान सीलता अद्‌भुत अपार है।
वृषभानअली जुगल छवि निस दिन निहारहै।।297।।

सियावर सलौंनें बने कैसे कैसे।
बसे चशम अंदर रमैं कैसे कैसे।
मिलेये चिमनमें द्रग नसे में ताके अधिकछवि लाज फसे कैसे कैसे।
लसैं सिरताज जुलफ घुंघरारी अलकनागनीनें डसे कैसे कैसे।
भौहं बरबंक कमानतनी रसचितवन वान गसे कैसे कैसे ।
मकराकृत लोल कपोल लसैं दुति कांति मयंक प्रभा कैसे कैसे।
नासासुक भालविशाल लसै अधरामृत पान रचे कैसे कैसे।
जबसे धन धाम सुहात नहीं प्रिया सहचरी अंक भरै कैसे कैसे।।298।।

दिलौ मनजान से पाया सजन कुरवान भई।
छबीला छैल लख आसिक भई बदनाम नई।
महिर महबूब की हरदम निहारूं समारूं माधुरी मुसक्यान मजेदार दई।
सदा छकीरहूं दिलवर की अदामें हुआ दिलमस्त बेपरवाह
जब वांह गई।

नृपत मन भाव तौप्रिया सहचरी कौ सिया सुखदैन दीनानाथ
अपनायलई।।299।।

मिलादे सही श्रीअवधेयश का प्यारा लला मिलादे सही बहुत
मानौगी तेरा भला।
सनादे जायकै अरजी हमारी कहौ क़ब दैंइगे छविका भला।
सजनी चैन निस दिन में परै न तलफ रहे नैन नहीं लागेपला।
अलीवृषभान कौ दिलभर दिखादे लगादे भावतौ मेरेगला।।300।।

आली दिलदार की सुकुमारता दिल छारई है।
लखी जबसैं भई मैंवावरी सुदबुध गई हैं।
भ्रकुटवरबंक है चितवन में टौना लगे सर नयन के घायल भई हैं।
बिकी विनदाम मैं प्यारे की छवि पै भई आधीन हौं आसिक नई है।
अलीप्रिया सहचरी कुरबान पियापै सिया मुखचंद्र लख आनँद
भई है।।301।।

रघुराज सै कर दोस्ती दिल लाग है कै न लाग है।
मुख चंद्र जुग को चकोर चित कर चाहिहै।
सिरताज जुलफन फंद में दिल फांस हैं कै न फांस है।
द्रगकंज खंजन से विलोकन लागि है कै न लागि हैं।
छवि माधुरी अवलोक कै सुखपाय है कै न पाहिहैं।
राम यश दृढ़ प्रीतिकर मुख गाहिहै कै न गाहहैं।
कानन कथा रसरास की सन भाय है कै न भाय है।
शुभ अशुभ जग की वासना मन छाड़ि है कै न छाड़ि हैं।
सुख दुख नफा जग हानिका भय त्यागि है कै न त्यागि है।
सत संग रसकन की सभाको धाय है कि न धाय है।
पिया सहचरी जुग चरन रज हिय धर है कै न धार है।
जो लाग हैं सिया जू शरन सुख पाइहैं कै न पाई हैं।।302।।

जिन राम यश गाया नहीं कोविद भया तौ क्या हुवा।
जुग चंद्रछवि छाकी नहीं अनुरागरस चाखा नहीं जप जोग कर
छापा दिया माला लिया तो क्या हुवा।
सख सिंधु में बूड़ा नहीं सतसंग को करता फिरा सियानाथ को
जाना नहीं महली हुआ तौ क्या हुआ।
दुनियां में आके क्या किया औवलफजल बकता फिरा कोपीनकट
करवालिया धूनीतपा तो क्या हुआ।
वृषभानअली स्वामिनी चरनौं का आश्रय न लिया मखदान फल
चाता फिरा ज्ञानही हुआ तौ क्या हुआ।।303।।

रघुराज प्रानप्यारा सजनीमुझे मिलादे।
विरहामें दिल तलफता द्रगदरस अव दिखादे।
छवि माधुरी निहारी कुरवान जान सारी कब अवध विहारी तनकी
तपन बुझादे।
अब सूरत कौ भुलाते वेदरद क्यों कहाते सबयाद हैं वे बातैं इतनी
अरज सुनादे।
नहिं भूलती भुलाई चशमौंमें रही छाई वृषभानअली दिलबर अब
तौ गले लगादे।।304।।

अरे दिलदार दिल हरकै भला तरसाव मत हमको।
करी दिलदोस्ती तुमसैं निठुर अवक्या भये हमसैं।
अहो नृपलाल वेदरदी मिलन की क्या गईफरदी।
तुझे कछु लाज नेहाकी मेरी वदनाम वेहाकी।
जगत उपहास क्यौं सहिये विरह की पीरसौ मरिये।
तुझे मेरी फिकर नाई कठिन दिलके भये साई।
करौ जिन देर अब प्यारे द्रगन से करिये मत न्यारे।
अरज यक मानिये मेरी जुगल चरनौं की हौं चेरी।
दीजे दरसन मिहिर करना अलीवृषभानकुँवर सरना।।305।।

अरी नृपलाल वेदरदी मुझे द्रगवान से वेदी।
लखीछवि छैल की बांकी नहिं सुध मोइ तनमनकी।
नहीं अब चैन दिन रतियां बिनामिले यार की छतियां।
भई दिलतैं दिमानी जब करौं क्या बाबरी सुन अब।
मिलादे श्याम प्यारे कौ जिलादे जी समारे को।
दिखादे आयनैंनन सैं सुनादे वचन श्रवनन सैं।
मिलादे आय छातीसौं मिटादेताप तन मन सौं।
अरी जश कभी नहीं भूलौं जिगर मैं जिन्दगी तौलौं।
विरह की पीर अति बांकी अलीवृषभानकुँवर थाकी।।306।।

।। प्रभाती।।

प्रात जगे लली लाल नयना अनुराग लाल देखत नभ लाल प्रेम जागे मतवारे।
जावक सें चरन लाल मेंहदी सें करन लाल बीरी से अधर लाल मदन कोटवारे।
नवल लाल बाल साथ सोहत गल माल लाल जोवत मुख लाल अली लोचनकेतारे।
रामप्रिया लख निहाल लागत सोभाविसाल सेजसदन मगिन लाल मगन मन हमारे।307।।

दियैं गलबैंया दौनौं जनैं रैंन रहसरस रंगसनैं।
सैंन भवन परजंक अंकभर अद्भुत छवि कब कोन गनैं ।
मदन समर श्रम मधुर वचन कहि प्रानप्रिया सियां प्रेम ठनैं ।
रामप्रिया सव भाँत विहारी अवध छैल अपनायैं बनैं।।308।।

।। दादरी।।

अवध पिया काय तरसावै जियारे।
हमरी लाग रही सुद तमसौं सयननहरत हियारे ।
घरी पल छिन मोइ कलनपरत है तनमन विवस कियारे ।
अलीवृषभानकुँवर जीवन धन ऐसे तुम छलियारे।।309।।

वाछवि पै कहौ को न लुभानौं सवतज भयौ मन वावरौ।
घरके कहत दिमानी डोलत मोद्रगवसौं पिया श्यामरौ।
सदा लगन महबूबदरश की क्यौं नहिं मिलत उजागरौं।
छिन नहिं चैन लहत मनमाही बरबस भयौ जिया घावरौ ।
कहिये पीरसुनै को सजनी जानत नहिं सुखसागरौ।
रामप्रिया चाहत निसवासर जुगल चरन मन भावरौ।।310।।

बिन देखैं स्यामलिया रहौ न जाय।
घरी पल छिन मोह कल न परत है परबसभई नेरौ कछू न बसाय।
विरह विथा कासों कहौं सजनी विकल भई अब घर न सुहाय।
रामप्रिया अवधेश ललन बिन दिन जामिनमोह जुगसे विहाय।।311।।

रसीले नैंना राघौजी के।
कंज खंज मृगमीन न पटतर चंचलता अधकीलें।
श्यामसिंगार सलौनैं पियके शोभा सागरसीले।
रामप्रिया यह प्रानप्रीतम के मोहन मंत्र बसीले।। 312 ।।

रंगीले नैंना तोरे सलौंनैं।
जित चितवत तित बसकर राखत प्रगट कपट पटटौंनैं।
किहि पटतरिये बुधि बल थाकी बानी रहत लख मौंनैं।
चंचल चपल मतवारे प्रीतम प्रान ठगौनें।
रामप्रिया सुनिये मनभावन मोहिय प्रेम पगौनैं।। 313।।

भोरी नवलकिशोरी प्यारी लागैं रँगीली तेरी अखियाँ।
मृगनयनी अंजत जुत कारी खंजन मीन चपल तज लखियाँ।
नयन कटाक्ष लगत मनमथसर मोमन छोभ करत नित घतियाँ।
रामप्रिया सुन्दर रसनागर सुदिन रहत दैखत मत थकियाँ।।314।।

सुरत नहिं बिसरै तोरी पिया रे।
श्री अवधेश ललन रघुनंदन मोअखियनके तारे।
बिन देखैं दिल दारयारमुह तलफत प्राण विचारे।
अलीवृषभानकुँवर मनभावन लगजागले हमारे।।315।।

श्यामलियारे तोबिन रहौ न जाय।
जब से लखी यह माधुरी मूरति घरी पल जुग सम जाय।
विन दरशनमोह कल न परत है तलफतही निसि जाय। रामप्रिया
को वेग मिलौ पिया तन की तपन बुझाय।। 316।।

।। ठुमरी।।

जल भरनैं मई पिया मगरोकी गुरजन लाज सखी लोपी।
हौं सरजू जल भरन निकसी जब औचक छैल गगरि पटकी।
रस सागर नागर रघुनन्दन सनमुख आय चुनरि झटकीं ।
रामप्रिया कछु कहिं म सकी तव बाछव छैल द्रगन अटकीं।।317।।

।। पद।।

सुआनद मंगल गाइयेरी।
भूप भवन मिल जाइयेरी।
महरानी सनमान सवनकौं आदरभाव सवाई येरी ।
वाजें वाजन मधुर सुरनसे नाचें हो भाव दिखाइयेरी।
रामप्रिया सिया जन्म महोत्सवपूरनपुत्रन पाइयेरी ।। 318।।

श्रवनसुयशसुन आइ द्वार।
तुम तो अधम उधारन नागर हमरी दार कस करतवार।
रामप्रिया बलिहारी नामकी अबकी भवसागर से करहु पार।।319।।

नित धाम हमारो नित लाल ललौ।
नितहिं विलास रास नित विलसत नितनव देखत प्रेमथली।

नित्त प्रकास प्रियाप्रीतम कौ नित्त सकल सुखसाज मली ।
नित्त सिंगार परस्पर क्रीड़ा नित्त मगन मन सकल अली।
नित्त प्रमोद विपन द्रुमसाखा नितवन फूली कुसम कली ।
नित्त अवध सरजू नित पावन दरस परस अघ भूर दली।
नित्त नवलप्यारी सुख आनद नितवन नैह सनेह फली।
नितनव मोद प्रमोद बढ़ावत रामप्रिया लख भागफली।।320।।

अपनै प्रीतम कौ रिझाउँरी मैं तौं मधुरी तान सुनाउँरी।
पियारीझैं गुरुजन चाह खीजैं जग कुल कान्ह बहाऊँरी।
मिहिर करहि सियावर प्यारे की बाहीमें लाज मनाउंरी।
रामप्रिया लख जुगल माधुरी हिय की तपन बुझाउंरी।।321।।

।। फाग।।

खेलतफाग उमंगभरे नवनेह छके रस चोलन में।
अलकैंछूट कपोलन आई चोली कस टूटे मेलन में।
केसर रंग परौअंगैंपै सियारूप भरौ पिया नैंनन में।
स्याम प्रीतरँग एकभयौ मिल हरे हरे कहैं सखी केलन में।
रामप्रिया सहचरीजीवन धन विलास भरौ मी नैंनन में।।322।।

।। पद।।

छैलारे अटक रही तुमसैं उरझ रही छविसैं।
अपनावहु चाहे विसरावहु दिलसैं लगी पगी तन मनसैं।
सरनागत आवत पालतहौं विरदावली फली अधमनसैं।
रामप्रिया बहुतक अपनाये कहा द्रगन मिसकर पियाहमसैं।।323।।

कब हम लैहैं द्रगन के लाभरी।
कनक निकुंज किशोर शोरी विहरत सुखलख पैहैं।
अरस परस अंसन भुजदीनै यह छवि हृदय भरी है।
मृदु मुसक्यात वतात रसिक निधि नैंनसैंन चित दैहैं।
रामप्रिया प्रीतम से रसवतियां कब कैहैं ।।324।।

लालमिलन को सदा द्रग ललकैं।
विनदेखैं छिन भरनहिं मानत निरखत परनदेत न पलकें।
चंद्रवदन लख प्रानप्रीतम कौ जिय चाहत मिलिये भुजभर कै।
चंद चकोर लखत ज्यौं निसि दिन विछुरन बिरह विथा दिल दलकै।
विरह विथा अब कासैं कहिये सहि न जाय मनमथ की कसकैं।
रामप्रिया सिया प्रान प्रीतम सैं लागी लगन परी उर चसकैं।।325।।

मतबारीनजरिया कौन सहै।
जबसैं बसी उर स्यामरीसूरत लोक लाज कहौ कौन कहै।
नवल किशोरप्रीतम बिन देखैं प्रेम फसी नहिं चैन लहै।
रामप्रिया सांची सुन सजनी अधर सुधा रस को न चहै।।326।।

मन मोहनी सुरतिया मन अटकी।
किहिं पटतर दैउं मत भटकी।
हौंसरजू जल भरन जातती बईंआं पकर गागर पटकी।
द्रगमटकाय रसीली चितवन चोलीफार चूनर झटकी।
रामप्रिया छवि लखि मतिवारी भुजन लसत पियरी पटकी।।327।।

।। रसिया।।

रसिया होरी में मोसौ खेलौ न छल को खेल।
आय अचानक घूँघट खोलत बोलत रसभरे वैंन।
अबकी बार पकर जो पाऊँ कर हौ मनकौ मेल।
रामप्रिया कनकभवन में तुमैं दिखावहुँ फैल।।328।।

।। होरी।।

रस चाखौरेछैल रँग होरी कौ।
जाऔ कहाँ अव भाज रसीले दाव परौ आज गोरीकौ।
कंजनैन अंजन सौं आजौं भाल विभूषितवैंदीकौ ।
सिरसारी चोली पग नूपुर कर पहराऊं चूरीकौ ।

श्रीजनकलली जू की अलीसवै जुर कूपपुजाऔं या भोरीकौ।
चलौ लिवाइ सिया ढिग इनकौं चरन सहावहु प्यारीकौ।
हारे कहौ जान जवपाऔं फिर मगकरवरजोरी कौ।
रामप्रिया तिया विहँस कहीसव जुग जीवै छैल छबीलाकौ।।329।।

।। पद।।

वनी छवि बाँकी आज रगीले।
वरनौं कहा अनूप रूपकौं देखत बुधवलथाकी।
रोम रोम सुखदैन माधुरी अद्‌भुत सिया पिया झाँकी।
रामप्रिया कह काकी दीजे इहि पटतर उपमाकौ।।330।।

अक्षयवट पूजन काज चलौरी।
सुख सौभाग बड़ावन यह तिथि अति उतसाह भरौरी।
नवसत साज करौ सहचर गन मंगल गानकरौरी।
कुल विधि रीति प्रतीति सौं पूजन साज सजौरी।
रामप्रियासिया सहित अलिनगन मनसा सफल फरौर।।331।।

फूलन की सारीसो है गोरे गोरे गात।
फूलन की वंदनी फूलन की चंदनी फूलन ताटक पैरे फूलन के पात।
फूलन के सीसफूल चोटी मुखकंव मूल फूलन के वाजूवंदशोभा सरसात।
फूलन की चोली सोहै फूलन के हारगलैं फूलन की चंमकली मन अरुझात।
फूलन के बंगला फूलन के परदा फूलन परजंक पौड़े मदन लजात।
देखी नभ चांदनी सिया मन भावनी रामप्रिया सोभा लखहीय न अघात।।332।।

लगनमतवारी काहू न डरावैं।
लोक लाज कुल कान बड़ाई जात पांत नहिं भावै।

जासे लगी भरी दिल सोई और न कछू सुहावैं।
नेही मरिहम होईसों मन नैह रघुवर सरसावैं।
रोवै हसै गाय बौरौज्यों मौन रहै जकजावै।
मस्त रहै दिलभर चरचामें अवर चैन नहिं पावैं। रामप्रिया कहि
कासौं कहिये रघुवर छैल मिलावैं।।333।।

मेरी आली पिया विन नींद न आवत तलफतलफ जिय जावत।
पल छिन चैनरैंन दिन नाहिन द्रग सावन झिरलावत।
विजुली चमक दमक डरपावत लख जिय मदन सतावत ।
रामप्रिया दरसन विनतरसत विरहा जोरजनावत।।334।।

कुसमानी चुनरिया प्यारी जुलमकरैं।
गोरे अंग सोहै प्यारी के तिरछी चितवन हिय वेद करै।
पवन प्रसंग कपोलन लावत घनदामिन दुत को निदरै।
रामप्रिया वलजात अवध प्रिया निरख निरख उतसाह भरैं।।335।।

अधिक नहीं चहियतुनिठुराई देखौ प्रियामिथलेश सुताकौ।
जन्म लये कर फल बसुधाकौ।
तनमन सुफल करौ मोरी सजनी पूरन पुन्न उदय नैना कौ ।
नवकिशोर छविजोरमाधुरी देखन रुचि रहि है फिरकाकौ।
रामप्रिया सिया संग जायकैं करिहौं काजमौजमनसाकौ।।336।।

गुईयां मोह पकर लाल रंग वोरी।
मैं नवल नार अति भोरी।
आय अचानक धाय सखीरी बरबस गहि झकझोरी।
चूनर भार तोर चोलीवद नैक न काहुडरौरी।
कहँलगसहिये कुचाल छैल की प्रेम जाल अरझोरी।
रामप्रिया प्रीतम कीबातैं कहतन हृदय भरौरी।।337।।

होसियाप्यारे लगन न छूटै।
लोकलाज कुलकान वड़ाई जातपात छिन टूटै।
पहिर फकीरी खाकरमाई रसिक प्रीतम रस लूटै।
रामप्रिया कहै प्रानबल्लभसे तुम राजी जग रूठै ।।338।।

नवनागर चितचोररी तेरे रूप लुभानें।
तू बड़भाग सुहाग भरीहै प्रीत नीत में सानें।
प्रय नातौजन जाऊपर ताह येक करमानें।
रामप्रिया प्रियारसिक सिरोमनि प्यारी हाथ बिकानें।।339।।

पिया बांगिलिया में करत विहार। चलत फुहारे चहुँ दिश सजनी
गई ग्रीषम भई पावस बहार।
श्रीनिमिराज किशोरी के संग हावभाव लखि रहि न समार ।
कबहुँ गहत कोमल करकमलन दै गल भुज मुखछवि को निहार।
श्रीवृषभानु अतर लियै सनमुख दंपत चरन हिये विच धार।।340।।

मेरौ विन दरशन जिय तरसै कब छवि मिलै नजरसैं।
निस दिन चैन परत नहि सजनी द्रग असुवन झर बरसै।
बिन नृपलाल विहाल भई अब विरह विथा बहसरसै।
रामप्रिया कब मिलिये अवधपिया चरन कमल रजपरसैं।।341।।

।। झूला।।

रँगबरसै रंगीले झूलन में।
चलौरी चलौ मिल देखन चलिये झूमत स्यामा स्याम कलोलन में।
हरीहरी भूम नये द्रुमपल्लव श्रीसरजू के कूलन में ।
सहचरि हरष झुलावत सब मिल गावत रागमलारन में।
रामप्रिया येहि बरमागत बसौसदा द्रग कोइन में।। 342।।

।। पद।।

झुमझुम आई निदिया नैनन में रस वैननमें।
पिया प्यारी सुख सेज पधारौं सैन करौ सुख चैंनन में।
मृदु मुसक्यात चले प्यारी संग वतरावत रस सैंननमें।
रामप्रिया संग रसिक विहारी केल करौ नव कुंजनमें।।343।।

तेरे मिलने को छैल बहुत भटकी।
कठिन निठुरता गही रावरे स्यामरी सूरत हिय अटकी।
वेगदरस अबदीजे कृपानिधि ताप विरहकी तनखटकी।
रामप्रिया देखै कब नैनन स्याम अंग छवि पियरे पटकी।।344।।

तुमै प्रभु वाँह गहेकी लाज।
आई दीन सरन आरतजन सुनौ गरीब निवाज।
अधम उधारन विरद तिहारे सुन आई महराज।
रामप्रिया सव भांत तुमारी तुम त्रिभुवन सिरताज।।345।।

सखीमें आज लखे सीतारमन।
कनक प्रजंक अंक प्रीतम के रस हेरन गलवाह धरन ।
उमग उमग चाहत रसक्रीड़ा चितवन चंद्र चकोर विचरन ।
हावभाव विलसत नवनागर रामप्रिया आनँद भरन।। 346।।

कैसे जाउं जाउं जल सरजू कौ।
रोकत घाट खड़ौ पनघट कौ।
भरन न देव नित रारवड़ावत पैड़ैं परौ कौशिलरनियां कौ ।
विनय करत मानत नहिं प्यारौ हँस झझकोर गहत बहिआं कौं।
रामप्रिया श्रीजीसे कहिये अटपट चलन अवध सैयांकौ।।347।।

लागी लागीरे लगन मतटोरौ।
जोकछु चूकपरी हैं हमसैं सो विसराय कृपा कर हेरौ।

प्रनतपाल हित रसिक चूड़ामनि रदावली जगत पिय तेरौ।
बारबारमेरी येही विनती रखिये कहीं निधा नहि फेरौ।
रामप्रिया मिथला कै नातै आई शरण गहौ कर मेरौ।।348।।

देखौरी दोउ प्रानप्यारे कौसिलपत के राजदुलारे।
स्यामल गौर किशोर मनोहर सुखसागर नागर रसभारे।
गज गत चलन हसन चितचोरत त्रिभुवन सुंदरतासैन्यारे।
सिरपरक्रीट खौर चंद्रन की अलक कपोल भ्रमरमदहारे।
मौतिन माल पदक की शोभा भूषन बसन विचित्र समारे।
वृषभानअली यह अलौकिक जपतप जोग ज्ञान सव वारे।।349।।

मनमोहनीसूरत स्यामरी को नहोय लखबाबरी।
कुल मरजाद त्याग हैं इनपैं कहमिथलाकी नागरी।
तैंसहिं नवलकिशोर रावरौ तैसहिं सिया छविआगरी।
रामप्रियासंजोग रचौ विधि लैहै द्रगन कौ लाभरी।।350।।

वनै शिवलोचन तीरथराज।
अनुपम प्रेम अखैवट भूषित नितसव भुव सिरताज।
छवि सित अरुन स्याम सुंदरवर सरस समागम साज।
श्रीवृषभानकुँवर प्रीतम मन मज्जन सुक्रत सनाज।।351।।

देखौरी छवि राजकुँवर की।
क्रीटमुकट मकराकृत कुंडल भालतिलक भ्रकुटी धन सर की ।
मृदु मुसक्यान कमल दल लोचन चाल गयंद गरूर चलाकी ।
सुंदर सुभग सिंगार मनोहर को वरनैं छवि कामति कविकी ।
रामप्रिया बाई इनऊपर किहि उपमादैउं लख मत भटकी।।352।।

होसियावर की लगन हिया खटकी ।
जबसैं लखी स्यामरी सूरत द्रगन वसी छवि पियरे पटकी ।

मोजिय भोरी कछुय न जानी चातुरता वानागरनटकी ।
मृदु मुसक्याय भुलाय लयौ मन पिया बनमाल बेंसर मोरी अटकी।
रामप्रिया नव छैंल हटीलौ आन गही बरवस सिरपटुकी।।353।।

दोहा–जुगल माधुरी लखतनित, धन सखि तुमरौ भाग ।।
सावन मनभावन निकट, रहत भरी अनुराग ।।354।।

।। होरी।।

केसर रंग चुनरी बोरी सैंयां। होंसरजू जल भरन जातती आन
गही मोरी बहियां।
अनुज सखा सब टेरबुलाये रोकौ न छैल डगरिया। एसौ हाल
कियौ नवनागर पिया कैसे जाउँ नगरयि।
वृषभानकुँवर कैसहुँ नहिं मानत विनय करौं परौं पैयां ।।355।।

।। बसंत के पद।।

पिय प्यारे बिन मोरे जिय कल न परै।
श्रीअवधेस बिना सुन सजनी विरह अगिन दिन रैन जरै।
जबसैं लखी सखी वह मूरत तवतैं छिन पल नाहिं टरै।
नहिं सुहात धन धाम ग्राम अब असन वसन सब त्याग धरे।
श्रीरामप्रिया को वेगमिलावौ पिया देदरसन सव दुख्य हरै।।356।।

तुम कहुरे भवरा पियासों जाय।
प्रीतम विन मोह अव कछू न सुहाय।
एक तौ पिया बिन रहौ न जाय।
दूजै वसंत ऋतुराज आय।
तीजे पपीहा पिया पिया रटत धाय।
सुन सुनकैं मोहि विरहा सताय।
अवध छैल राघुराजलाल।
दैदरशन कीजे मो निहाल।

श्रीरामप्रिया को मिलहु आय।
लीजे भुज भरके गरलगाय।। 357।।

।। फाग।।

सिया राम हृदय मन भजलैरे।
सुनत्रयताप नसालैरे।
श्रीरघुनाथ कौ नामकल्पतरु भवसागर को तरलैरे ।
जो चहवास महल सिया पिया कौ जो कोऊ प्रीत लगा लैरे ।
रामप्रिया चाहै सुख अपनौ जुगल चरन हिय धरलैरे ।।358।।

प्यारी तेरे नैनन में रस बरसै।
लख प्रीतम सुखसरसै।
खंजन मीन कंज छवि लाजत द्रगकाजर सैं भरसैं।
जबकब ओट करत घुंघट पियाविनदेखैंतरसै।
रामप्रिया सहचरी यह सुखको लख आनंद उर हरसै।।359।।

।। ठुमरी।।

दरस विन अखियां तरसहीरे।
पिया परदेस उमर मेरी वारी विरहा दुखभारी सहौंकैसैरे ।
वृषभानकुँवर पिया आप नहीं आए सँदेश न पठाए कठिन पावस
सरसायौरे।।360।।

विहरत फुलवारी पिया मेरे मनभाए।
क्रीट मुकट सीस सोहैं कुंडल अनमोले अलक घुंघरवारी
कपोलन परीए।
भौंह चाप बंकवनी नयनारतनारे मंदहसन प्यारी मेरे मनमें भरीए।
अली वचन सुनत सिया नैंना अकुलानैं विहस सखी संग चली
दरसन फलपाए।

देख कैं निहाल भई ऋषी वा कहिये विचार वृषभानकुँवर लख
सरूप तन मन धन वारे।।361।।

।। आरती ।।

रंगमहल द्वार सखी आरती समारैं।
जुगल नाम जुगल रूप मुख
जस उच्चारैं। सेजसकलसाज लिये सैंन भवन राजै।
दंपत मुख चंद्र निरख कोट काम लाजैं।
कोऊ चौंर छत्र हाथ पंखा सरसावैं।
पानदान अंतर लै सुअंग कौं लगावैं।
सुभ गुलाब जल सैं चहुँओरन छिरकावैं लै सुतार वीना कोऊ
मधुर राग गावैं।
रँग उमंग आनँद भर वचन कौ सुनावैं।
श्रीरामप्रिया स्वामिनके चरन कमल ध्यावैं।। 362।।

आरती करैं अली सियावल्लभकी।
गलमेंभुज ग्रीवा में ग्रीवा अजब भैंट भई घन दामिनिकी।
कबहुँ मेघदामनी में लपटत कबहुँ दामनी घनमें दमकी।
बार बार पिया वदन विलोकत तपन बुझावत विरहा अगिन की।
रामप्रियानीरांजन कर पुनि बलिहारी दोऊ रसिक प्रीतम की।।363।।

आरती कीजे सिया रघुवरकी।
क्रीट मुकुट मकराक्रतकुंडल चितवन ललित भावती सुन्दर श्रीरघुवंश
उदय दिनकर की।
अंग अंग सुखदैनमाधुरी को वरनैं छवि रूप माधुरी।
मन भावन नागर प्रीतम की नेतनेत कह वेद जोगावत शंकर ताह
हृदय में ध्यावत रामप्रिया सरबस धन मनकी।।364।।

आरत करहैं सखि आनदमन करभोजनबैठे परपंकपर शोभा
लखत लाजत दामिनि घन।
नैनन नींद अरुनता छाई कमल दलन संपुटत भवँर जन ।
रामप्रियानीरांजन करकैं सिया वल्लभ पर वारह धनतन।। 365।।

------*****-----*****------

इति श्रीवृषभान विनोद श्रीरानी श्रीमहारानी श्रीसवाई
महेन्द्रमहारानी श्रीमतीदेवी ''वृषभानकुँवरि'' जू
टीकमगढ़ कृत
संपूर्णम्
शुभमस्तु

[कनक भवन मन्दिर, मुख्यद्वार]

कोशल पब्लिशिंग हाउस

लक्ष्मेश्वर कॉम्प्लेक्स, नाका बाई-पास,
इलाहाबाद रोड, फैजाबाद-224001 (उ.प्र.)
मो. : 9415048021, 9838810713

₹ 150.00

ISBN 978-93-81799-03-1